

उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

नमो नमो निम्मलदंसणस्स
पूज्य श्रीआनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर गुरुभ्यो नमः

उपांग+प्रकीर्णक-सूत्र लघु-बृहत् विषयानुक्रमः [आगम-संबंधी-साहित्य]

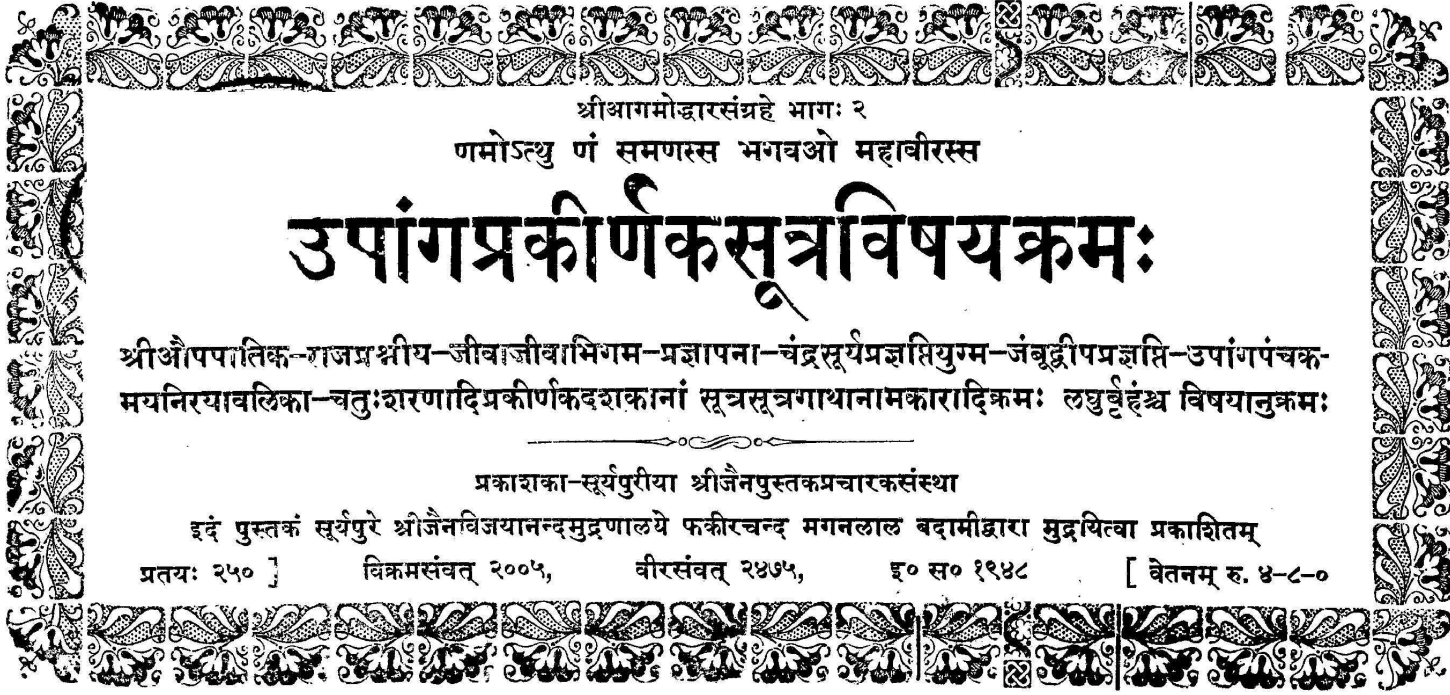
[आद्य संपादकः - पूज्य आगमोद्धारक आचार्यदेव श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी म. सा.]
(किञ्चित् वैशिष्ट्यं समर्पितेन सह)

पुनः संकलनकर्ता → मुनि दीपरत्नसागर (M.Com., M.Ed., Ph.D., श्रुतमहर्षि)

28/07/2017, शुक्रवार, २०७३ श्रावण शुक्ल ५

jain_e_library's Net Publications

मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [उपांगसूत्र- "--"]
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए ‘संवृत्तिक आगम सुत्ताणि’	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)  श्रीआगमोद्धारसंग्रहे भागः २ णमोऽस्तु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स उपांगप्रकीर्णकसूत्रविषयक्रमः श्रीऔपपातिक-राजप्रश्रीय-जीवाजीवाभिगम-प्रज्ञापना-चंद्रसूर्यप्रज्ञप्तिरुग्म-जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति-उपांगपंचक- मयनिरयावलिका-चतुःशरणादिप्रकीर्णकदशकानां सूत्रसूत्रगाथानामकारादिक्रमः लघुबृहद्विषयानुक्रमः प्रकाशका-सूर्यपुरीया श्रीजैनपुस्तकप्रचारकसंस्था इदं पुस्तकं सूर्यपुरे श्रीजैनविजयानन्दमुद्रणालये फकीरचन्द मगनलाल बदामीद्वारा मुद्रयित्वा प्रकाशितम् प्रतयः २५०] विक्रमसंवत् २००५, वीरसंवत् २४७५, इ० स० १९४८ [वेतनम् रु. ४-८-०
	*** मूल संपादकेन प्रकाशित उपांग-प्रकीर्णकसूत्र-विषयक्रमस्य ‘ओरिजिनल टाइटल’

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [उपांगसूत्र- "--"]
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) प्रस्तावः श्रीऔपपातिकादीनां द्वादशानामुपांगानां चतुःशरणादिकानां दशानां प्रकीर्णकानां च गाथाद्यनुक्रमः भोः परमपुरुषपरमेश्वरप्रणीताव्याबाधाविरुद्धहितोपदेशमात्रप्रवचनप्रवणागमाभृतपानपुष्टान्तःकरणाः कृतिनः ! सफलयन्त्रेतस्य शास्त्रस्य साचरणश्रद्धानवृद्धिक्रियाद्वारा ग्रहणेन मे परिश्रमलेशं, प्राक्तावत् १ नन्दी २ अनुयोगद्वार ३ आवश्यक- ४ ओषनिर्युक्ति ५ दशवैकालिक ६ पिण्डनिर्युक्ति ७ उत्तराध्ययनसूत्राणां गाथाकारादिक्रमविषयानुक्रमयुगलान्यनुमुद्राप्य निर्णय- सागरमुद्रणालये श्रीमत्याऽऽगमोदयसमित्या प्रतीनां सार्धद्वादशशती प्रचारिता, पण्यं च रूप्यकद्वयं स्थापितं पश्चात्तु श्रीमालव- देशान्तर्गतश्रीकृष्णभदेवजीकेशरीमलेत्यभिधया श्वेतांबरसंस्थया ८ आचारांग ९ सूत्रकृतांग १० स्थानांग ११ समवायांग १२ श्रीभगवत्पराभिधव्याख्याप्रज्ञपित १३ ज्ञातधर्मकथा १४ उपासक १५ अन्तकृदशा १६ अनुत्तरौपपातिकदशा १७ विपाकश्रुत १८ प्रश्नव्याकरणांगसूत्राणां गाथाकारादिविषयानुक्रमयुगलानि श्रीहृदपुरीयश्रीजैनबंधुमुद्रणालयश्रीभावनगरीयमहोदयमुद्रणालय- द्वारा मुद्रापयित्वा पंचशती पुस्तकानां प्रचारिता, पण्यं च चतुष्टयं रूप्यकाणां धृतं, ततः शेषाणां गाथाकारादिविषयानुक्रम- युगलानामनुमुद्रणायामुपक्रमः श्रीसुरतद्वंगीयजैनपुस्तकप्रचाराख्यसंस्थया क्रियते। प्रत्यश्चात्र सार्धद्विशतीमात्राः पण्यं च सार्धं रूप्यकचतुष्टयं ध्रियते। एतच्च वर्तमानयुगस्थितिप्रेक्षिणां सुज्ञानामवभासिष्यतेऽल्पतममेव। अत्र च १९ श्रीऔपपातिक- २० श्रीराजप्रश्नीय २१ जीवाजीवाभिगम २२ प्रज्ञापना २३-२४ सूर्यचंद्रप्रज्ञप्तिर्युग २५ जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति २६ उपांगपंचकमयनिर- यावलिका २७ चतुःशरणादिप्रकीर्णकदशकानां गाथाकाराद्यनुक्रमो लघुबृहन् विषयानुक्रमश्च समुन्मुद्रिताः, तत एतत्प्रयोगं यथाहं कृत्वा सफलयन्तु सज्जना मे ज्ञानाभ्याससहायमनोरथमित्याशासे। २००५ कार्तिकशुक्ला पूर्णिमा, सुरत. श्रीश्रमणसंघसेवक आनन्दसागरः

आगम-सूत्र लघु-बृहत् विषयानुक्रमः

क्रमांकः	आगम का नाम	लघुअनुक्रम पृष्ठांकः	बृहदनुक्रम पृष्ठांकः	क्रमांकः	आगम का नाम	लघुअनुक्रम पृष्ठांकः	बृहदनुक्रम पृष्ठांकः
अंग-सूत्र लघु-बृहत् विषयानुक्रमः							
०१	✿ आचार			०७	✿ उपासकदशा		
०२	✿ सूत्रकृत्			०८	✿ अंतकृद्दशा		
०३	✿ स्थान			०९	✿ अन्तरोपपातिकदशा		
०४	✿ समवाय			१०	✿ प्रश्नव्याकरण		
०५	✿ भगवती			११	✿ विपाकश्रुत		
०६	✿ ज्ञाताधर्मकथा			-----	-----		
उपांग-सूत्र लघु-बृहत् विषयानुक्रमः							
१२	✿ औपपातिक	०१०	०१९	१८	✿ जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति	०१५	०८९
१३	✿ राजप्रश्नीय	०११	०२३	१९	✿ निरयावलिका	०१६	१०५
१४	✿ जीवाजीवाभिगम	०१२	०२७	२०	✿ कल्पवतंसिका	०१६	१०५
१५	✿ प्रज्ञापना	०१३	०४८	२१	✿ पुष्पिता	०१६	१०५
१६+१७	✿ सूर्य+चन्द्र-प्रज्ञप्ति	०१४	०७९	२२	✿ पुष्पचूलिका	०१६	१०५
-----	-----			२३	✿ वृष्णिदशा	०१६	१०५

आगम-सूत्र लघु-बृहत् विषयानुक्रमः

क्रमांकः	आगम का नाम	लघुअनुक्रम पृष्ठांकः	बृहदनुक्रम पृष्ठांकः	क्रमांक	आगम का नाम	लघुअनुक्रम पृष्ठांकः	बृहदनुक्रम पृष्ठांकः
प्रकीर्णक-सूत्र लघु-बृहत् विषयानुक्रमः							
२४	✽ चतुःशरण	०१७	१०८	२९	✽ संस्तारक	०१७	११५
२५	✽ आत्रप्रत्याख्यान	०१७	१०९	३०	✽ गच्छाचार	०१७	११६
२६	✽ महाप्रत्याख्यान	०१७	११०	३१	✽ गणिविज्जा	०१७	११८
२७	✽ भक्तपरिज्ञा	०१७	१११	३२	✽ देवेन्द्रस्तव	०१७	११९
२८	✽ तंदुलवैचारिक	०१७	११३	३३	✽ मरणसमाधि	०१७	१२१
*** [३४-३९] छेदसूत्र-वृत्ति का विषयानुक्रम पूज्य आगमोद्धारकश्रीने नहीं बनाया ***							
मूल-सूत्र लघु-बृहत् विषयानुक्रमः							
४०	✽ आवश्यक			४२	✽ दशवैकालिक		
४१/१	✽ पिंडनिर्युक्ति			४३	✽ उत्तराध्ययन		
४१/२	✽ ओघनिर्युक्ति			-----	-----		
चूलिका-सूत्र लघु-बृहत् विषयानुक्रमः							
४४	✽ नन्दी			४५	✽ अनुयोगद्वार		

आगम-सूत्राणाम् प्रत-क्रमांकः एवं दीप-क्रमांकः

आगम क्रम	आगम का नाम	प्रत-अनुसार		दीप अनुक्रम	आगम क्रम	आगम का नाम	प्रत-अनुसार		दीप अनुक्रम
		कुल-सूत्र	कुल-गाथा				कुल-सूत्र	कुल-	
०१	✽ आचार	४०२	१४७	५५२	१६	✽ सूर्यप्रज्ञप्ति	१०७	१०३	२१४
०२	✽ सूत्रकृत्	०८२	७२३	८०६	१७	✽ चन्द्रप्रज्ञप्ति	१०७	१०७	२१८
०३	✽ स्थान	७८३	१६९	१०१०	१८	✽ जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति	१७८	१३१	३६५
०४	✽ समवाय	१६०	०९३	३८३	१९	✽ निरयावलिका	०२०	-----	०२१
०५	✽ भगवती	८६९	११४	१०८७	२०	✽ कल्पवतंसिका	००२	००१	००५
०६	✽ ज्ञातार्थकथा	१६५	०५७	२४१	२१	✽ पुष्पिता	००६	००२	०११
०७	✽ उपासकदशा	०५८	०१३	०७३	२२	✽ पुष्पचूलिका	००१	००१	००३
०८	✽ अंतकृद्दशा	०२७	०१२	०६२	२३	✽ वृष्णिदशा	००२	००१	००५
०९	✽ अनुत्तरोपपातिकदशा	००६	००२	०१३	२४	✽ चतुःशरण	-----	०६३	०६३
१०	✽ प्रश्नव्याकरण	०३०	०१४	०४७	२५	✽ आतुरप्रत्याख्यान	००१	०७०	०७१
११	✽ विपाकश्रुत	०३४	००३	०४७	२६	✽ महाप्रत्याख्यान	-----	१४२	१४२
१२	✽ औपपातिक	०४३	०३०	०७७	२७	✽ भक्तपरिज्ञा	-----	१७२	१७२
१३	✽ राजप्रश्नीय	०८५	-----	०८५	२८	✽ तंदुलवैचारिक	०२०	१३९	१६१
१४	✽ जीवाजीवाभिगम	२७३	०९३	३९८	२९	✽ संस्तारक	-----	१३३	१३३
१५	✽ प्रज्ञापना	३५२	२३१	६२२	३०	✽ गच्छाचार	-----	१३७	१३७

✽ आगम-सूत्र ३४ से ३९ [छेदसूत्र- १ से ६] की वृत्ति को पूज्य आगमोद्धारकश्रीने संपादित नहीं किया, इसिलिए उन का समाविष्ट यहां नहि

आगम-सूत्राणाम् प्रत-क्रमांकः एवं दीप-क्रमांकः

[illegible]

❖ आगम-सूत्र ३४ से ३९ [छेदसूत्र- १ से ६] की वृत्ति को पूज्य आगमोद्धारकश्रीने संपादित नहीं किया, इसिलिए उन का समाविष्ट यहां नहि

[उपांगसूत्र + प्रकीर्णक-सूत्रलघुबृहद्विषयानुक्रमौ] इस प्रकाशन की विकास-गाथा]

✦ यह प्रत “उपांगसूत्र + प्रकीर्णक-सूत्र लघुबृहद्विषयानुक्रमौ” नामसे सन १९४८ (विक्रम-संवत् २००५) में ‘सूर्यपूरीया श्री जैन पुस्तक प्रचारक संस्था’ द्वारा प्रकाशित हुई, इस के संपादक-महोदय थे पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्यश्री आनंदसागरसूरीश्वरजी (सागरानंदसूरिजी) महाराजसाहेब ।

✦ पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्यदेव श्री आनंदसागरसूरीश्वरजी महाराजसाहेबने ‘औपपातिक’ वगैरेह उपांगसूत्रो तथा “चतुःशरण” वगैरेह प्रकीर्णको के मूलसूत्र एवं उस पर पूर्वाचार्य रचित वृत्ति आदि का संपादन किया था । उन प्रतोमे जो मूलसूत्र, गाथा, वृत्ति आदि थे उन सभी सूत्रादि के विषयो का अनुक्रम संक्षेप और विस्तार से लिखकर इस प्रतमे प्रकाशित करवाया है । अर्थात् १२ उपांग और १० प्रकीर्णकसूत्रो के लघु और बृहत् विषयानुक्रम के रचयिता, संपादक और प्रकाशक श्री आगमोद्धारक आनंदसागरसूरीश्वरजी महाराजसाहेब ही हैं ।

✦ पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्यदेवश्रीने इसी तरह अंगसूत्रो और नन्दी आदि अन्य आगमसूत्रो के सूत्र-आदि के विषयो का अनुक्रम भी संक्षेप और विस्तार से लिखकर संपादन और प्रकाशन करवाया है ।

✦ हमारा ये प्रयास क्यों?✦ आगम की सेवा करने के हमें तो बहोत अवसर मिले, अब तक मेरे प्रकाशित किये हुए पुस्तको के १,००,००० से ज्यादा पृष्ठ हो चुके हैं, किन्तु लोगो की पूज्यश्री सागरानंदसूरीश्वरजी के प्रति श्रद्धा तथा प्रत स्वरूप प्राचीन प्रथा का आदर देखकर हमने इसी प्रत को स्केन करवाई, उसके बाद एक स्पेशियल फोरमेट बनवाया, जिसके बीचमे पूज्यश्री संपादित प्रत ज्यों की त्यों रख दी, ऊपर शीर्षस्थानमे प्रत संबंधी उपयोगी माहिती लिख दी है, ताँकि पढ़नेवाले को प्रत्येक पेज पर कौनसे वर्ण का क्रम चल रहा है उसका सरलतासे ज्ञान हो शके ।

✦ पूज्यपाद आगमोद्धारकश्री ने आगम संबंधी ५२ विषयो को वर्गीकृत किया था, आज भी उनमे से ऐसी कइं प्रते मिलती हैं, जिसमे ये विभाजन-क्रमांक देखने को मिलते हैं, उनमे से थोडे विषयो का काम हुआ भी है, जो मुद्रित स्थितिमे भी प्राप्त हैं ।

✦ अभी तो ये jain_e_library.org का ‘इंटरनेट पब्लिकेशन’ है, क्योंकि विश्वभरमें अनेक लोगो तक पहुँचने का यहीं सरल, सस्ता और आधुनिक रास्ता है, आगे जाकर इसको मुद्रण करवाने की हमारी मनीषा है।

.... मुनि दीपरत्नसागर.

[आद्य संपादक - पूज्य आगमोद्धारक आचार्यदेवश्री आनंदसागरसूरीश्वरजी म. सा.]

उपांग + प्रकीर्णकसूत्र

लघु-विषयानुक्रमः

← पुनः संकलनकर्ता →

आगम दिवाकर मुनि दीपरत्नसागर (M.Com., M.Ed., Ph.D., श्रुतमहर्षि)

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ												
	[उपांगसूत्र-१ “औपपातिक”]												
	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबन्धी-साहित्य)												
प्रत सूत्रांकं यहां देखिए दीप क्रमांक के लिए देखिए ‘संवृतिक’ आगम सूक्त्याणि’	श्रीउपांगा- दिनां ॥ १ ॥ णमोस्तु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स श्रीआगमोद्धारसंग्रहे भागः २. उपांगादिनां विषयानुक्रमः [लघु विषयानुक्रमः] [आगम-१२] उपांगसूत्र-१ “औपपातिक” <table border="0" style="width: 100%; font-family: sans-serif;"> <tr> <th style="text-align: left;">श्री औपपातिकोपांगे लघुविषयानु-</th><th></th></tr> <tr> <th style="text-align: left;">क्रमः</th><th></th></tr> <tr> <td>सूत्राणि ४३ सूत्रगाथाः ३०*</td><td>२१ श्रीवीरागमनश्रीवीरवर्णनसाधुतद्गुण- वर्णनम् ४८</td></tr> <tr> <td>सूत्रांकः । पत्रांकः ।</td><td>३३ असुरादिदेवनृपराज्ञीपर्वभिर्गामवर्ण- नम् ७७</td></tr> <tr> <td>९ चम्पापूर्णभद्रवनखण्डाशोकवृक्षपृथ्वी- शिखाष्टककोणिकराजधारिण्यादि- वर्णनम् १४</td><td>४३, ३०* देशना गौत्मस्वामिप्रश्ने कवि- शतिअम्मडसमुद्घातसिद्धवर्णनम् ११९</td></tr> <tr> <td></td><td>इति श्री औपपातिकोपाङ्गस्य संक्षिप्त क्रमः</td></tr> </table> विषयानु- क्रमादिः 	श्री औपपातिकोपांगे लघुविषयानु-		क्रमः		सूत्राणि ४३ सूत्रगाथाः ३०*	२१ श्रीवीरागमनश्रीवीरवर्णनसाधुतद्गुण- वर्णनम् ४८	सूत्रांकः । पत्रांकः ।	३३ असुरादिदेवनृपराज्ञीपर्वभिर्गामवर्ण- नम् ७७	९ चम्पापूर्णभद्रवनखण्डाशोकवृक्षपृथ्वी- शिखाष्टककोणिकराजधारिण्यादि- वर्णनम् १४	४३, ३०* देशना गौत्मस्वामिप्रश्ने कवि- शतिअम्मडसमुद्घातसिद्धवर्णनम् ११९		इति श्री औपपातिकोपाङ्गस्य संक्षिप्त क्रमः
श्री औपपातिकोपांगे लघुविषयानु-													
क्रमः													
सूत्राणि ४३ सूत्रगाथाः ३०*	२१ श्रीवीरागमनश्रीवीरवर्णनसाधुतद्गुण- वर्णनम् ४८												
सूत्रांकः । पत्रांकः ।	३३ असुरादिदेवनृपराज्ञीपर्वभिर्गामवर्ण- नम् ७७												
९ चम्पापूर्णभद्रवनखण्डाशोकवृक्षपृथ्वी- शिखाष्टककोणिकराजधारिण्यादि- वर्णनम् १४	४३, ३०* देशना गौत्मस्वामिप्रश्ने कवि- शतिअम्मडसमुद्घातसिद्धवर्णनम् ११९												
	इति श्री औपपातिकोपाङ्गस्य संक्षिप्त क्रमः												
	॥ १ ॥												

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [उपांगसूत्र-२ “राजप्रश्नीय”]																
प्रत सूत्रांक यहां देखिए दीप क्रमांक के लिए देखिए ‘संवृत्तिक आगम सुत्ताणि’	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) [आगम-१३] उपांगसूत्र-२ “राजप्रश्नीय” <table border="1" style="margin: auto; border-collapse: collapse; width: 80%;"> <tr> <td colspan="2" style="text-align: center;">श्रीराजप्रश्नीयोपांगे लघुविषयानु-</td></tr> <tr> <td style="text-align: center;">क्रमः</td><td style="text-align: center;">सूत्राणि ८५</td></tr> <tr> <td>५ आमलकरूपादिश्वेतनृपधारिणीसूर्याभ- तद्विधिवर्णनम्</td><td style="text-align: right;">१७</td></tr> <tr> <td>१२ वन्दनविचारमण्डलाद्यादेशमण्डलक- रणयानविमानादिवर्णनम्</td><td style="text-align: right;">४४</td></tr> <tr> <td>२६ धर्मकथानाट्यकूटागारदृष्टान्ताः</td><td style="text-align: right;">५९</td></tr> <tr> <td>४५ सौधर्मविमानपीठिकोपपातादिसभा- पूजनफलस्नानपूजादयः</td><td style="text-align: right;">११३</td></tr> <tr> <td>८५ प्रदेशिचरिततदास्तिकतादेवत्वप्राप्ति- विदेहमोक्षवर्णनम्</td><td style="text-align: right;">१५०</td></tr> <tr> <td colspan="2" style="text-align: center;">इति राजप्रश्नीयोपाङ्गम्.</td></tr> </table>	श्रीराजप्रश्नीयोपांगे लघुविषयानु-		क्रमः	सूत्राणि ८५	५ आमलकरूपादिश्वेतनृपधारिणीसूर्याभ- तद्विधिवर्णनम्	१७	१२ वन्दनविचारमण्डलाद्यादेशमण्डलक- रणयानविमानादिवर्णनम्	४४	२६ धर्मकथानाट्यकूटागारदृष्टान्ताः	५९	४५ सौधर्मविमानपीठिकोपपातादिसभा- पूजनफलस्नानपूजादयः	११३	८५ प्रदेशिचरिततदास्तिकतादेवत्वप्राप्ति- विदेहमोक्षवर्णनम्	१५०	इति राजप्रश्नीयोपाङ्गम्.	
श्रीराजप्रश्नीयोपांगे लघुविषयानु-																	
क्रमः	सूत्राणि ८५																
५ आमलकरूपादिश्वेतनृपधारिणीसूर्याभ- तद्विधिवर्णनम्	१७																
१२ वन्दनविचारमण्डलाद्यादेशमण्डलक- रणयानविमानादिवर्णनम्	४४																
२६ धर्मकथानाट्यकूटागारदृष्टान्ताः	५९																
४५ सौधर्मविमानपीठिकोपपातादिसभा- पूजनफलस्नानपूजादयः	११३																
८५ प्रदेशिचरिततदास्तिकतादेवत्वप्राप्ति- विदेहमोक्षवर्णनम्	१५०																
इति राजप्रश्नीयोपाङ्गम्.																	

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [उपांगसूत्र-३ “जीवाजीवाभिगम”]				
	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)				
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए ‘संवृत्तिक आगम सुत्ताणि’	श्रीरूपां० विषयानुक्रमे ॥ २ ॥	[आगम-१४] उपांगसूत्र-३ “जीवाजीवाभिगम” जीवाजीवाभिगमसूत्रस्य लघु- विषयानुक्रमः ॥ सूत्राणि २७३ सूत्रगाथाः ९३* ४४ प्रथमा प्रतिपत्तिः ५१ ६५, ५* द्वितीया प्रतिपत्तिः ८८ २२४, ८८* तृतीया प्रतिपत्तिः ४०७ ८१, ७* प्रथमो नारकोद्देशः (१०२) ९५, १३* द्वितीयो नारकोद्देशः (१२९)	९६, २४* तृतीयो नारकोद्देशः (१३१) इति नारकाः ॥ १०० प्रथमस्तिर्यगुद्देशः (१३२) १०५ द्वितीयस्तिर्यगुद्देशः (१४३) १५४, २९* जम्बूद्वीपाधिकारः (३००) १९१, ८३* द्वीपसमुद्राः (३७३) २०७, ८५* ज्योतिष्कोद्देशः (३८५) २०९, प्रथमो वैमानिकोद्देशः (३९०) २२४, ८८* द्वितीयो वैमानिकोद्देशः ४०७ २२६ चतुर्थी प्रतिपत्तिः ४११ २४०, ९२* पञ्चमी प्रतिपत्तिः ४२७ २४१ षष्ठी प्रतिपत्तिः ५२८ २४२ सप्तमी प्रतिपत्तिः ४३१	२४३ अष्टमी प्रतिपत्तिः ४३३ २४४ नवमी प्रतिपत्तिः ४३५ इति संसारसमापन्नाः २७३, ९३* सिद्धादीनां स्थित्यन्तरारूप- बहुत्वानि ४६७ इति जीवाजीवाभिगमसूत्रस्य लघुविषयानुक्रमः ॥	श्रीराय० श्रीजीवा० श्रीप्रज्ञा० लघुविषयानु- क्रमः ॥ २ ॥

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [उपांगसूत्र-४ “प्रज्ञापना”]				
	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)				
प्रत सूत्रांक यहां देखीए	सूत्राणि ३५२		प्रज्ञापनासूत्रस्य लघु-विषयानुक्रमः		सूत्रगाथाः २३१
दीप क्रमांक के लिए देखीए	[आगम-१५] उपांगसूत्र-४ “प्रज्ञापना”				
‘संवृत्तिक आगम सुत्ताणि’	३८, १३३* प्रज्ञापनापदम् १	७१	२०१, २०८ द्वितीय इन्द्रियोद्देशः (३१७)	२९९, २१७* कर्मप्रकृतिपदम् २३	४९१
	५४, १७९* स्थानपदम् २	११३	२०५ प्रयोगपदम् १३	२९३, २१७* प्रथमः कर्मप्रकृत्युद्देशः (४६५)	
	९३, १८१* बहुवक्तव्यतापदम् ३	१६८	२३२, २१०* १७ लेश्यापदम्	२९९ द्वितीयः कर्मप्रकृत्युद्देशः (४९२)	
	१०२ स्थितिपदम् ४	१७८	२१३, २०९* प्रथमो लेश्योद्देशः (३४३)	३०० कर्मबन्धपदम् २४	४९४
	१२१ विशेषपदम् ५	२०४	२२१ द्वितीयो लेश्योद्देशः (३५२)	३०१ कर्मवेदपदम् २५	४९४
	१४७, १८४* वदुत्क्रान्तिपदम् ६	२१८	२२४ तृतीयो लेश्योद्देशः (३५८)	३०२ कर्मवेदबन्धपदम् २६	४९७
	१४६ उच्छ्वासपदम् ७	२२१	२३०, २१०* चतुर्थो लेश्योद्देशः (३७०)	३०३ कर्मवेदवेदपदम् २७	४९८
	१४८ सञ्ज्ञापदम् ८	२२४	२३१ पञ्चमो लेश्योद्देशः (३७२)	३१२, २२०* आहारपदम् २८	५२४
	१५३ योनिपदम् ९	२२८	२३२ षष्ठो लेश्योद्देशः (३७३)	३०९, २१२* प्रथम आहारोद्देशः (५११)	
	१६०, १९१* चरमाचरमपदम् १०	२४६	२५४, २१२* कायस्थितिपदम् १८	३१२ २२०* द्वितीय आहारोद्देशः (५२४)	
	१७५, १९८* भाषापदम् ११	२६८	२५५ सम्यक्त्वपदम् १९	३१३ उपयोगपदम् २९	५२८
	१८० शरीरपदम् १२	२८४	२६७, २१३* अन्तक्रियापदम् २०	३१५ पश्यत्तापदम् ३०	५३३
	१८५, २००* परिणामपदम् १३	२८९	२७९, २१६* शरीरपदम् २१	३१६ २२१* सञ्ज्ञापदम् ३१	५३४
	१९०, २०१* कषायपदम् १४	२९२	२८८ क्रियापदम् २२	३१७, २२२* संयतपदम् ३२	५३८
	२०१, २०८* इन्द्रियपदम् १५	३१७			
	१९८, २०६* प्रथम इन्द्रियोद्देशः (३०८)				
					इति प्रज्ञापनाया लघुविषयानुक्रमः ।

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [उपांगसूत्र-५+६ “सूर्यप्रज्ञप्ति+चन्द्रप्रज्ञप्ति”]					
	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)					
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ४ ॥	[आगम-१६+१७] उपांग- ५ + ६ सूर्य+चन्द्रप्रज्ञप्ति श्रीसूर्यप्रज्ञप्तेर्लघुविषयानुक्रमः ॥ सूत्राणि १०७ सूत्रगाथाः १०२* २०, १५* प्रथमं प्राभृतम् १ ४४ ११, १५* प्रथमं प्राभृतप्राभृतम् (१६) १३ द्वितीयं प्रा० , (२१) १४ तृतीयं प्रा० , (२४) १५ चतुर्थं प्रा० , (२८) १७ पञ्चमं प्रा० , (३१)	१८ षष्ठं प्रा० , (३५) १९ सप्तमं प्रा० , (३७) २० अष्टमं प्रा० , (४४) २३ द्वितीयं प्राभृतं ६३ २१ प्रथमं प्राभृतप्राभृतम् (४८) २२ द्वितीयं प्रा० , (५०) २३ तृतीयं प्रा० , (६३) २४ तृतीयं प्राभृतं ६६ २५ चतुर्थं प्रा० ७६ २६ पञ्चमं प्रा० ७९ २७ षष्ठं प्रा० ८३ २८ सप्तमं प्रा० ८४ २९ अष्टमं प्रा० ९२ ३१ नवमं प्रा० ९९	७०, २०* दशमं प्रा० १९७ ३२ प्रथमं प्राभृतप्राभृतम् (१००) ३४ द्वितीयं प्रा० , (१०४) ३५ तृतीयं प्रा० , (१०५) ३६ चतुर्थं प्रा० , (११०) ३७ पंचमं प्रा० , (१११) ३९ षष्ठं प्रा० , (१२८) ४० सप्तमं प्रा० , (१२९) ४१ अष्टमं प्रा० , (१३०) ४२ नवमं प्रा० , (१३१) ४३ दशमं प्रा० , (१३७) ४५ एकादशं प्रा० , (१४५) ४६ द्वादशं प्रा० , (१४६) ४७, १८* त्रयोदशं प्रा० , (१४७)	श्रीप्रज्ञा० श्रीसूर्य० लघुविषयानु- क्रमः ॥ ४ ॥	

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [उपांगसूत्र-७ “जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति”]				
प्रत सूत्रांक यहां देखिए दीप क्रमांक के लिए देखिए ‘संवृत्तिक आगम सुत्ताणि’	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) [आगम-१७] उपांगसूत्र-७ “जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति” <table border="1" style="width: 100%; border-collapse: collapse;"> <tr> <td colspan="2" style="text-align: center;"> श्रीजम्बूद्वीपप्रज्ञप्तेर्लघुविषयानु- क्रमः ॥ </td></tr> <tr> <td style="width: 50%; vertical-align: top;"> सूत्राणि १८१ सूत्रगाथाः १३१* १७, ३* प्रथमो वक्षस्कारः ८८ ४१, ८* द्वितीयो वक्षस्कारः १७८ ७२, ४१* तृतीयो वक्षस्कारः २८१ ७१, ४१* भरतचरित्रम् (२८०) </td><td style="width: 50%; vertical-align: top;"> ११२, ६९* चतुर्थो वक्षस्कारः ३८२ १२४, ८०* पञ्चमो वक्षस्कारः ४२४ १२६, ८२* षष्ठो वक्षस्कारः ४३२ १८१, १३१* सप्तमो वक्षस्कारः ५४२ श्रीजम्बूद्वीपप्रज्ञप्तेर्लघुविषयानुक्रमः ॥ </td></tr> </table>	श्रीजम्बूद्वीपप्रज्ञप्तेर्लघुविषयानु- क्रमः ॥		सूत्राणि १८१ सूत्रगाथाः १३१* १७, ३* प्रथमो वक्षस्कारः ८८ ४१, ८* द्वितीयो वक्षस्कारः १७८ ७२, ४१* तृतीयो वक्षस्कारः २८१ ७१, ४१* भरतचरित्रम् (२८०)	११२, ६९* चतुर्थो वक्षस्कारः ३८२ १२४, ८०* पञ्चमो वक्षस्कारः ४२४ १२६, ८२* षष्ठो वक्षस्कारः ४३२ १८१, १३१* सप्तमो वक्षस्कारः ५४२ श्रीजम्बूद्वीपप्रज्ञप्तेर्लघुविषयानुक्रमः ॥
श्रीजम्बूद्वीपप्रज्ञप्तेर्लघुविषयानु- क्रमः ॥					
सूत्राणि १८१ सूत्रगाथाः १३१* १७, ३* प्रथमो वक्षस्कारः ८८ ४१, ८* द्वितीयो वक्षस्कारः १७८ ७२, ४१* तृतीयो वक्षस्कारः २८१ ७१, ४१* भरतचरित्रम् (२८०)	११२, ६९* चतुर्थो वक्षस्कारः ३८२ १२४, ८०* पञ्चमो वक्षस्कारः ४२४ १२६, ८२* षष्ठो वक्षस्कारः ४३२ १८१, १३१* सप्तमो वक्षस्कारः ५४२ श्रीजम्बूद्वीपप्रज्ञप्तेर्लघुविषयानुक्रमः ॥				

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [उपांगसूत्र- ८ से १२ “निरयावलिका-पंचक”]		
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए ‘संवृत्तिक आगम सुत्ताणि’	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) [आगम १८-२३] उपांगसूत्र ८-१२ निरयावलिका-आदि पंचक <table style="width: 100%; border-collapse: collapse;"> <tr> <td style="width: 50%; vertical-align: top;"> निरयावलिकानां लघुविषयानुक्रमः सूत्राणि ३१ सूत्रगाथाः ५* २० प्रथमो वर्गः १९ १९ प्रथमाध्ययनम् (१९) २० अध्ययनचतुष्कम् (१९) २२, १* द्वितीयो वर्गः २१ २८, २* तृतीयो वर्गः ३६ २३, २* प्रथमाध्ययनम् (२३) </td><td style="width: 50%; vertical-align: top;"> २४ द्वितीयमध्ययनम् (२३) २५ तृतीयमध्ययनम् (२९) २६ चतुर्थमध्ययनम् (३५) २७ पञ्चममध्ययनम् (३६) २९ ४* चतुर्थो वर्गः ३८ ३१ ५* पञ्चमो वर्गः ४२ इति निरयावलिकानां लघुविषयानुक्रमः ॥ </td></tr> </table>	निरयावलिकानां लघुविषयानुक्रमः सूत्राणि ३१ सूत्रगाथाः ५* २० प्रथमो वर्गः १९ १९ प्रथमाध्ययनम् (१९) २० अध्ययनचतुष्कम् (१९) २२, १* द्वितीयो वर्गः २१ २८, २* तृतीयो वर्गः ३६ २३, २* प्रथमाध्ययनम् (२३)	२४ द्वितीयमध्ययनम् (२३) २५ तृतीयमध्ययनम् (२९) २६ चतुर्थमध्ययनम् (३५) २७ पञ्चममध्ययनम् (३६) २९ ४* चतुर्थो वर्गः ३८ ३१ ५* पञ्चमो वर्गः ४२ इति निरयावलिकानां लघुविषयानुक्रमः ॥
निरयावलिकानां लघुविषयानुक्रमः सूत्राणि ३१ सूत्रगाथाः ५* २० प्रथमो वर्गः १९ १९ प्रथमाध्ययनम् (१९) २० अध्ययनचतुष्कम् (१९) २२, १* द्वितीयो वर्गः २१ २८, २* तृतीयो वर्गः ३६ २३, २* प्रथमाध्ययनम् (२३)	२४ द्वितीयमध्ययनम् (२३) २५ तृतीयमध्ययनम् (२९) २६ चतुर्थमध्ययनम् (३५) २७ पञ्चममध्ययनम् (३६) २९ ४* चतुर्थो वर्गः ३८ ३१ ५* पञ्चमो वर्गः ४२ इति निरयावलिकानां लघुविषयानुक्रमः ॥		

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [प्रकीर्णकसूत्र- १ से १० “चतुःशरण-आदि”]
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए ‘संवृत्तिक आगम सुत्ताणि’	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ६ ॥ [आगम २४-३३] प्रकीर्णक १-१० विषयानुक्रमः →→→→→→→→ इति उपांग + प्रकीर्णकसूत्र लघु विषयानुक्रमः प्रकीर्णक० निरयावलि० लघुविषयानु- क्रमः ॥ ६ ॥ प्रकीर्णकदशके लघुविषयानुक्रमः सूत्राणि २० सूत्रगाथाः १८९९* ६३* चउसरणं १. ५ १,१३३* आउरपच्चक्खाणं २. ७०,* १० २७५* महापच्चक्खाणं ३. १४२,* १९ ४४७* भत्तपरिणं ४. १७२,* ३१ २०,५८६* तंदुलवेयालियं ५. १९,* ५३ ७०९* संथारपइणयं ६. १२३,* ६१ ८४६* गच्छायारपइणयं ७. १३७,* ७० ९२८* गणिविज्जापइणयं ८. ८२,* ७६ १२३५* देविदत्थयपइणयं ९. ३०७,* ९६ १८ ९* मरणविहिपइणयं १०, ६६४,* १४२ इति प्रकीर्णकानां लघुविषयानुक्रमः ॥

[आद्य संपादक - पूज्य आगमोद्धारक आचार्यदेवश्री आनंदसागरसूरीश्वरजी म. सा.]

उपांग + प्रकीर्णकसूत्र बृहद्विषयानुक्रमः

← पुनः संकलनकर्ता →

आगम दिवाकर मुनि दीपरत्नसागर (M.Com., M.Ed., Ph.D., श्रुतमहर्षि)

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [उपांगसूत्र-१ “औपपातिक”]						
प्रत सूत्रांक यहां देखीए	श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ७ ॥	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) ॥ श्रीउपांगादीनां बृहद्विषयानुक्रमः [आगम-१२] उपांग-१ औपपातिक <table><tr><td>श्रीऔपपातिकोपांगस्य बृहद्विषयानुक्रमः सूत्राणि ४३; सूत्रगाथाः ३०*. मङ्गलोपोद्घातादि । १</td><td>७ धारिणीराज्ञीवर्णनम् । १३ ८ प्रवृत्तिव्यापृतिवर्णनम् । १४ ९ कोणिकराजोपस्थानशालोपवेशनम् । १४ १० श्रीमहावीरवर्णनं, उपग्रामे श्रीवीरा-गमनं च । २२ ११ प्रवृत्तिव्यापृतकृता वर्द्धापनिका । २४ १२ कोणिककृतमभ्युत्थाननमस्कारप्रीति-दानादि । २६ १३ श्रीवीरस्य पूर्णभद्रे समवसरणम् । २६ १४ उग्रप्रव्रजितादिसाधुवर्णनं मतिज्ञान्या-</td><td>१५ दि, कनकावल्यादितपो, मासिक्या-दिप्रतिमाकारकसाधुवर्णनं, जात्यादि-साधुगुणवर्णनम् । ३४ १७ ईर्यासमित्यादिगुणानामप्रतिबद्ध-तायाश्च वर्णनम् । ३७ १८ बाह्याभ्यन्तरे तपसी । ३७ १९ अनशनादीनां बाह्यभेदानां वर्णनम् । ४१ २० प्रायश्चित्तादीनामभ्यन्तरभेदानां वर्णनम् । ४५ २१ मुनीनां वाचनापृच्छाधर्मकथादि-</td></tr></table>		श्रीऔपपातिकोपांगस्य बृहद्विषयानुक्रमः सूत्राणि ४३; सूत्रगाथाः ३०*. मङ्गलोपोद्घातादि । १	७ धारिणीराज्ञीवर्णनम् । १३ ८ प्रवृत्तिव्यापृतिवर्णनम् । १४ ९ कोणिकराजोपस्थानशालोपवेशनम् । १४ १० श्रीमहावीरवर्णनं, उपग्रामे श्रीवीरा-गमनं च । २२ ११ प्रवृत्तिव्यापृतकृता वर्द्धापनिका । २४ १२ कोणिककृतमभ्युत्थाननमस्कारप्रीति-दानादि । २६ १३ श्रीवीरस्य पूर्णभद्रे समवसरणम् । २६ १४ उग्रप्रव्रजितादिसाधुवर्णनं मतिज्ञान्या-	१५ दि, कनकावल्यादितपो, मासिक्या-दिप्रतिमाकारकसाधुवर्णनं, जात्यादि-साधुगुणवर्णनम् । ३४ १७ ईर्यासमित्यादिगुणानामप्रतिबद्ध-तायाश्च वर्णनम् । ३७ १८ बाह्याभ्यन्तरे तपसी । ३७ १९ अनशनादीनां बाह्यभेदानां वर्णनम् । ४१ २० प्रायश्चित्तादीनामभ्यन्तरभेदानां वर्णनम् । ४५ २१ मुनीनां वाचनापृच्छाधर्मकथादि-	श्रीऔपपा० बृहद्वि- षयानुक्रमः ॥ ७ ॥
श्रीऔपपातिकोपांगस्य बृहद्विषयानुक्रमः सूत्राणि ४३; सूत्रगाथाः ३०*. मङ्गलोपोद्घातादि । १	७ धारिणीराज्ञीवर्णनम् । १३ ८ प्रवृत्तिव्यापृतिवर्णनम् । १४ ९ कोणिकराजोपस्थानशालोपवेशनम् । १४ १० श्रीमहावीरवर्णनं, उपग्रामे श्रीवीरा-गमनं च । २२ ११ प्रवृत्तिव्यापृतकृता वर्द्धापनिका । २४ १२ कोणिककृतमभ्युत्थाननमस्कारप्रीति-दानादि । २६ १३ श्रीवीरस्य पूर्णभद्रे समवसरणम् । २६ १४ उग्रप्रव्रजितादिसाधुवर्णनं मतिज्ञान्या-	१५ दि, कनकावल्यादितपो, मासिक्या-दिप्रतिमाकारकसाधुवर्णनं, जात्यादि-साधुगुणवर्णनम् । ३४ १७ ईर्यासमित्यादिगुणानामप्रतिबद्ध-तायाश्च वर्णनम् । ३७ १८ बाह्याभ्यन्तरे तपसी । ३७ १९ अनशनादीनां बाह्यभेदानां वर्णनम् । ४१ २० प्रायश्चित्तादीनामभ्यन्तरभेदानां वर्णनम् । ४५ २१ मुनीनां वाचनापृच्छाधर्मकथादि-					

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [उपांगसूत्र-१ “औपपातिक”]				
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए ‘संवृत्तिक आगम सुत्ताणि’	श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ८ ॥	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)		श्रीऔपपा० बृहद्- विषयानुक्रमः ॥ ८ ॥	
	श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ८ ॥	वर्णनं, संसारस्य समुद्रेण रूपकं, संय- मस्य च पोतेन। ४८ २२ असुरकुमारागमनवर्णनम्। ५० २३ शेषमवनवास्यागमनवर्णनम्। ५१ २४ व्यन्तरागमनवर्णनम्। ५२ २५ ज्योतिष्कागमनवर्णनम्। ५२ २६ वैमानिकागमनवर्णनम् (देव्यागमन- वर्णनम्। ५६ २७ चम्पायां जनसमवायः, वीरागमनसमा- चारः, उग्रपुत्रादीनां वन्दनपूजनाद्यर्थ- मागमेच्छा, स्नानादि, हयरोहादि, प्रदक्षिणादि। ६१ २८ प्रवृत्तिव्यापृतकृता वर्षापनिका, प्रीति- दानादि च। ६१	२९ आभिषेक्यहस्तिस्नानयनादेशः। ६१ ३० हस्तिनो वर्णनं, तद्वानयनं, यानवर्णनं, यानशालिकेन यानानयनम्। ६४ ३१ कोणिकस्याट्टनशालापवेशमर्दनमज्ज- नविलेपनालङ्कारनिर्गमाष्टमङ्गलपूर्ण- कलशादिच्छत्रयष्टिग्रहादिहयगजर- थवर्णनं, महद्भूयां निर्गमश्च। ७३ ३२ अर्थाथ्यः अभिनन्दनादि, पञ्चाभि- गमाः, पर्युपासना च। ७६ ३३ कुब्जादिदासीरिवृतसुभद्रारज्याग- मनादिवर्णनम्। ७७ ३४, १-५* श्रीवीरस्य वर्षस्वरयोर्वर्णनं, लोकालोकास्तिवादिप्राणातिपातवि- रमणादिदेशना, नरकादिगतिहेत्वादि,	पञ्चमहाव्रतद्वान्व्रतस्वरूपम्। ८२ ३५-३७ श्रोतृणां दीक्षाद्वाराश्रितप्रतिपत्ति- सम्यक्त्वानि ३५ कोणिककृता- प्रशंसा, ३६ सुभद्रादिगङ्गीकृता- प्रशंसा ३७। ८३ ३८ ६-७* गौतमस्य वर्णनं, जातश्रद्ध- त्वादि, प्रश्नश्च (१, २) (१) असंयतस्य पापाश्रवः, (२) मोहाश्रवः (३) मोहनीयवेदने मोहबन्धभजना (४) उस्सन्नत्रस- घातिनां नरके उपपातः, (५) अका- ममृत्क्षुधादिमतां दशसहस्रस्थितिषु देवेषूपपातः (६) अन्दुबद्धादीनां द्वादशवर्षसहस्रस्थितिकेषु (७) प्र-	

श्रीऔपपा०
बृहद्-
विषयानुक्रमः

॥ ८ ॥

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [उपांगसूत्र-१ “औपपातिक”]				
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए ‘संवृत्तिक आगम सुत्ताणि’	श्री उपां० विषयानुक्रमे ॥ ९ ॥	कृतिभद्रकमातापितृशुश्रूषकादीनां च- तुर्दशवर्षसहस्रस्थितिकेषु (८) पति- गतिकानां चतुःषष्टौ (९) दक- द्वितीयादीनां चतुरशीतौ (१०) होत्रिकादिवानप्रस्थानां (११) का- न्दर्पिकादिनामपि (१२) सांख्य- ज्योतिगदिपरिवाजकानां दानशौच- तीर्थाभिषेकवादिनां च दशसागरोप- मेषूपपातः; ७* ९४ ३२ (१३) अम्बडशिष्यसप्तशत्या अदत्ता- दानरक्षा बालुकासंस्कारः अर्ह- द्वोराम्बडनमस्कारः अम्बडसमीपप्र- त्याख्यातहिंसादेर्वीरसाक्षिकं प्रत्या- ख्यानं चतुर्विधाहारत्यागः शरीर-	व्युत्सर्गः, अनशनं च, दशसागरोप- मेषूपपातः, नवरमाराधकाः । ९६ ४० (१४) अम्बडस्य वैक्रियलब्धिरव- धिज्ञानं शतगृहे वसतिः अभिगत- जीवत्वादि आधाकमादिवर्जनं अ- नर्थदण्ड (४) त्यागः जलमानादि अन्यतीर्थिकवन्दनत्यागश्च, अनश- नेन ब्रह्मलोके उत्पत्तिः, महाविदेहे- ऽवतारः दृढप्रतिज्ञेऽभिधानं, द्वास- प्ततिः कलाः कलाचार्यसत्कारः भोगेऽव्यासङ्गः, प्रव्रज्या सिद्धिश्च १०३ ४१ (१५) आचार्यप्रत्यनीकादीनां त्रयो- दशसागरोपमेषूपत्तिरनाराधकाश्चः (१६) जातिस्मारकाणुवतादिमतां, ति-	रक्षां चाष्टादशसागरेषूपत्तिराराधकाश्च, (१७) द्विगृहान्तरिकाद्याजीविकानां द्वाविंशतौ (१८) आत्मोत्कर्षिता दीनां द्वाविंशतौ, (१९) बहुरतादीनां- मेकविंशतौ, अनाराधकाश्च, (२०) अरुणारम्भदेशविरतिजीवाजीवाव- बोधादिषौषधालोचनसमाधियुतानां द्वाविंशतौ (२१) अनारम्भसर्वपाप- निवृत्तिमतां साधूनां तु त्रयस्त्रिंशति, (२२) क्षीणक्रोधादीनां मोक्षः । १०७ ४२, ८* केवलिसमुद्घाते (प्रदेशैर्निर्जरापु- द्गलैश्च लोकव्याप्तिः, व्याप्तप्राणपुद्ग- लवच्छिन्नस्थैरज्ञानादि, वेदनीयादि- क्षयार्थं समुद्घातः, असंख्यातसाम-	श्री औपपा० बृहद्- विषयानुक्रमः ॥ ९ ॥

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [उपांगसूत्र-२ “राजप्रश्नीय”]				
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए ‘संवृत्तिक आगम सुत्ताणि’	श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ १० ॥	[आगम-१३] उपांग-२ राजप्रश्नीय	श्रीराजप्रश्नीयोपाङ्गस्य बृहद्- विषयानुक्रमः । सूत्राणि ८५. वीरनमस्कारः ॥ गुरुनियोगाद्विवरणकरणप्रतिज्ञा ॥ राजप्रश्नीयोपाङ्गशब्दयोरन्वयौ । १ आमलकरूपानगर्यतिदेशः । १ २ आम्रशालवनाद्यतिदेशः । ४ ३ अशोकवर्णनाद्यतिदेशः । ९ ४ श्वेतनृपधारिणीदेवीवीरसमवसरणा- द्यतिदेशः । १४ ५ सूर्याभदेवतद्वन्द्विवीरवन्दनानि । १७ ६ वन्दनाय गमनविचारः । १७ ७ आभियोगिकाय योजनमण्डलकरणा- द्यादेशः । १९	८ आभियोगिकानामुत्तरवैक्रियकरण- मागमनं वीरवन्दनादि च । २० ९ पुराणजीतादिकथनम् । २० १० वैक्रियसमुद्वातः, संवत्तकवातविकु- र्वणा, अभ्रवार्दलं, वृष्टिः, पुष्पवार्दलं, जलस्थलजपुष्पवर्षणं, प्रत्यागत्य नि- वेदनम् । २३ ११ सुस्वरघण्टावादनाऽऽदेशः । २५ १२ वन्दनार्थं गमनाज्ञा । २६ १४ जिनभक्तिधर्मादिभिर्वन्दनपूजनाद्यर्थं देवागमनं १३, यानविमानविकु- र्वणादेशः १४ । २७ १५ यानविकुर्वणं, त्रिसोपानतोरणबहु- मध्यभूभागकृष्णादिमणितद्वन्धस्पर्श-	श्रीऔप० श्रीराजप्रश्नो० बृहद्- विषयानुक्रमः ॥ १० ॥

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [उपांगसूत्र-२ “राजप्रश्नीय”]				
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए ‘संवृत्तिक आगम सुत्ताणि’	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)				
	श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ १.१ ॥	प्रेक्षागृहमण्डपमणिपीठिकासिंहास- नविजयदूष्यसामानिकादिभद्रासन- वर्णनम् । ४० १.६ विमानारोहणं, मङ्गलाष्टकं, छत्रचा- मरादिवर्णनम् । ४२ १.७-१.९ औत्तराहनिर्याणेन निर्गमनं, आग्नेयरतिकरे सङ्क्षेपः, आमलक- रूपायामागमः, ऐशान्यां यानस्थापनं, वीरप्रदक्षिणा १.७, पुराणाद्युक्त्याऽनु- मोदनं १.८, वन्दनादि १.९, ४४ २.०-२.३ धर्मकथा २.०, सूर्याभस्य भव- सिद्धिकादीनि प्रश्नोत्तराणि २.१, नाट्य- दर्शनप्रार्थना २.२, प्रेक्षागृहमण्डप- मणिपीठिकासिंहासनविकुर्वणभगव-	दाज्ञाग्रहणनिषदनकुमारकुमारीवि- कुर्वणाऽऽतोद्यग्रहणवादनस्वस्तिका दिनाट्यदर्शनम् २.३ । ५२ २.५ आवर्त्तादिद्वात्रिंशाद्विधनाट्यदर्शनं २.४, सूर्याभप्रतिगमनम् २.५ । ५६ २.६ ऋद्धिसंकोचप्रश्ने कूटागारशालादृ- ष्टान्तः (गौतमवर्णनम्) । ५९ २.७ सौधर्मावतंसकस्य पूर्वस्यां सूर्याभवि- मानं, तत्प्राकारद्वारादिवर्णनम् । ६३ २.८ चन्द्रनकलशनागदन्तदामसिक्कगधूप- घटीशालभञ्जिकावर्णनम् । ६६ २.९ घण्टावनमालाप्रकण्ठकतोरणहयादि- सङ्घाटकदिक्रुस्वस्तिकादिमनोगु- लिकावातकरकरत्नफण्डकहयादिक	प्लुप्पादिचङ्गेरीच्छत्रचामरसमुद्भव- वर्णनम् । ७१ ३.० चक्रध्वजादिभौमाष्टमङ्गलद्वारसङ्ख- ख्यातदायामादिवर्णनम् । ७९ ३.२ भूमिभागपञ्चवर्णनतृणमणिशब्दवर्णनं १.३, वापीपुष्करिणीदीर्घिकादित्रिसो- पानाद्युत्पादादिपर्वतहंसाद्यासनाऽऽ- ख्यादिगृहात्यादिमण्डपहंसासनसं- स्थानादिशिलापट्टकदेवक्रीडावर्णनम् ३.२ । ८१ ३.३ प्रासादावतंसकतन्मानाधिष्ठायवर्ण- नम् । ८२ ३.४ पद्मवरवेदिकाहेमादिजालहयादिस- ङ्घाटकवेदिकातट्टीथ्याद्युत्पलादिवे-	श्रीराजप्रश्नी० बृहद्- विषयानुक्रमः <

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [उपांगसूत्र-२ “राजप्रश्नीय”]			
	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)			
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए ‘संवृत्तिक आगम सुत्ताणि’	श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥१२॥	दिकाशाश्वताशश्वतस्त्ववनखण्डायामा- दिवर्णनम् । ८५ ३५ मध्यप्रासादतत्परिवारप्रासादवर्णनम् । ८६ ३६ सुधर्मासभातद्द्वारादिमुखमण्डपप्रेक्षा- गृहमण्डपाक्षपाटकमणिपीठिकासिंहास- नस्तूपजिनप्रतिमाचैत्यवृक्षमहेन्द्रध्व- जनन्दापुष्करिणीमनोगुलिकादिचैत्य- स्तम्भफलकनागदन्तसमुद्रकजिनस- क्थिततत्पूज्यतावर्णनम् । ९२ ३७ देवसैन्यवर्णनम् । ९३ ३८ क्षुरकमहेन्द्रध्वजवर्णनम् । ९४ ३९ सिद्धायतनमणिपीठिकादेवच्छन्दजि- नप्रतिमाहस्तपादादिस्वरूपच्छत्रधरा- दिप्रतिमाष्टशतध्वजकुडुच्छुकान्तव- र्णनम् । ९६ ४० उपपातसभाहृदाभिषेकसभाभाण्डा- लङ्कारिकसभाव्यवसायसभापुस्तक- रत्नतदुपकरणादिवर्णनम् । ९७ ४१ सूर्याभस्योत्पत्तिः, पूर्वश्रेयआदिवि- चारजिनप्रतिमासक्थिपूजनफलम् । १०४ ४४ जलावगाहाभिषेकसभागमनाष्टसह- स्रसौवर्णकलशादिवैक्रियक्षीरोदपुष्क- रोदमागधादितीर्थजलहृदनदीमलमु- त्तिकाक्षुरकहिमवदादितूबराद्यानयने- न्द्रत्वाभिषेकगन्धोदकवृष्ट्यादिवाजि- त्रगीतनृत्यादिदेवाशीर्वादस्नानालङ्कार- परिधानवर्णनम् ४२, व्यवसायसभाग- मन-पुस्तकरत्नवाचनानन्दापुष्करिणी-	गमनजलोत्पत्तादिग्रहणानि ४३, उ- त्पलहस्तशेषदेवदेवीयुक्ता, जिनप्र- तिमाप्रणामपूजाऽष्टमङ्गलस्तुतिपुष्प- प्रकरदक्षिणमुखमण्डपतस्तम्भपङ्क्ति- स्तूपप्रतिमापूजनसुधर्मसभागमनादि- व्यवसायसभागमनपुस्तकपूजादि- वर्णनं त्रिकादिषूद्रघोषणा च ४४ । ११२ ४५ सामानिकाग्रमहिषीपर्षदात्मरक्षक- वर्णनम् । ११३ ५५ सूर्याभस्थितिः ४६, तद्वक्रद्विप्रा- सिद्धश्चः ४७ प्रदेशिराजवर्णनं ४८, सूर्यकान्तादेवीसूर्यकान्तकुमारवर्णनं ४९, ५०, चित्रसारथिवर्णनं ५१, श्रीराजप्रश्नी० बृहद्- विषयानुक्रमः 	

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमः [उपांगसूत्र-२ “राजप्रश्नीय”]				
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए ‘संवृत्तिक आगम सुत्ताणि’	श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ १.३ ॥	संप्राभृतस्य चित्रस्य, श्रावस्तीगमनम् ५२, केशिकुमारवर्णनम् ५३, चित्र- स्य श्रावकधर्माङ्गीकारः ५४, चित्र- स्य श्रावकधर्मपालनम् ५५ । १२४ ६१ चित्रस्य विसर्जनं, श्वेताम्बिकाऽऽगम- नाय केशिनो विज्ञप्तिः, प्रदेशिनृपस्व- रूपकथनं ५६, स्वोद्यानपालकायके- शिकुमारागमने वन्दनाद्युपदेशः ५७, प्रदेशिसमाचारकथनं ५८, केशि- कुमारागमनं, उद्यानपालकवन्द- नादि वर्द्धापनमागमनं च ५९, प्रदेशिप्रतिबोधविज्ञप्तिः ६०, धर्म- प्राप्त्यप्राप्तिकारणानि, अश्वव्याजेना- नयनकथनम् ६१ । १२८	६४ अश्वव्याजेनानयनं, जडमूढादिवि- चारः; आहारादिप्रश्नः, केशिस्वरूप- कथनं जिगमिषा च ६२, आधोऽ- नधिकान्नजीविकप्रश्नः, विचारकथ- नं च ६३, मतिश्रुतादिज्ञानस्वरू- पम् । १२९ ६६ उपवेशाज्ञा, तज्जीवतच्छरीरे पित्र- नागमः साधनं ६५, मात्रनागमेन जीवाभावसाधनम् ६६ । १३८ ७४ अयःकुम्भीचौरदृष्टान्तः ६७, वृद्ध- स्य पञ्चकण्डकानुत्पाटनं ६८, अ- योभाराद्यवहनं ६९, भारविशेषः, देहच्छेदेऽदर्शनं ७०, पर्वतदपराध- दण्डनिरूपणं, व्यवहार्यव्यवहारिनि- रूपणं च ७१, वायोरदर्शनं, धर्मा-	स्तिकायाद्यदर्शनं ७२, हस्तिकुन्धुजी- वसमत्वम् ७३ । परम्परागतमिथ्या- त्वात्यागेऽयोग्राहिदृष्टान्तः ७४-१४१ ८० गृहिधर्मप्रतिप्रतिः ७५, कलाशि- ल्पधर्माचार्यविनयः ७६, सान्तः- पुरेण द्वितीयदिने क्षामणं ७७, पश्चा- दरमणीयतानिषेधः सदृष्टान्तः राज्य- चतुर्भागकरणोक्तिः ७८, राज्यचतु- र्भागकरणं ६९, विषदानं ८०, १४५ ८५ आराधना ८१, महाविदेहे दृढप्रति- ज्ञजन्मादि ८२, कलाग्रहणादि ८३, निर्लेपता दीक्षा सिद्धिश्च ८४, उपसंहारः ८२ । १५० इति श्रीराजप्रश्नीयोपाङ्गबृहद्विषयानुक्रमः	श्रीराजप्रश्नी० बृहद्- विषयानुक्रमः ॥ १.३ ॥

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [उपांगसूत्र-३ “जीवाजीवाभिगम”]																																																																																																																																																																																													
	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)																																																																																																																																																																																													
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए ‘संवृत्तिक आगम सुत्ताणि’	श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥१४॥	[आगम-१४] उपांग-३ “जीवाजीवाभिगम”						श्रीजीवा० विषयसूचिः	॥ १४ ॥																																																																																																																																																																																					
		<table border="0" style="width: 100%; border-collapse: collapse;"> <tr> <td colspan="2" style="text-align: center;">श्रीजीवाजीवाभिगमस्य विषयसूचिः</td> <td style="width: 15%;"></td> <td style="width: 15%;"></td> <td style="width: 15%;"></td> <td style="width: 15%;"></td> <td style="width: 15%;"></td> <td style="width: 15%;"></td> <td style="width: 15%;"></td> <td style="width: 15%;"></td> <td style="width: 15%;"></td> </tr> <tr> <td style="width: 35%;">१ शास्त्रभूमिका प्रामाण्यं च</td> <td style="width: 5%; text-align: center;">२</td> <td style="width: 15%;">१६ अप्कायभेदाः</td> <td style="width: 5%; text-align: center;">२४</td> <td style="width: 15%;">२९ त्रीन्द्रियभेदाः</td> <td style="width: 5%; text-align: center;">३१</td> <td colspan="6"></td> </tr> <tr> <td>२ अभिगमभेदौ</td> <td style="text-align: center;">४</td> <td>१७ बादराप्कायभेदाः</td> <td style="text-align: center;">२४</td> <td>३० चतुर्न्द्रियभेदाः</td> <td style="text-align: center;">३२</td> <td colspan="6"></td> </tr> <tr> <td>३ अजीवाभिगमभेदाः</td> <td></td> <td>१७-१८ वनस्पतिभेदाः, सूक्ष्मवनस्पति- भेदाः</td> <td style="text-align: center;">२५</td> <td>३१ पंचेन्द्रियभेदाः</td> <td style="text-align: center;">३२</td> <td colspan="6"></td> </tr> <tr> <td>४ अरूप्यजीवाभिगमभेदाः</td> <td></td> <td>१९ बादरवनस्पतिभेदाः</td> <td style="text-align: center;">२६</td> <td>३२ नैरयिकभेदाः</td> <td style="text-align: center;">३३</td> <td colspan="6"></td> </tr> <tr> <td>५ रूप्यजीवाभि०</td> <td></td> <td>२० प्रत्येकवनस्पतिभेदाः</td> <td style="text-align: center;">२६</td> <td>३३ तिर्यक्पंचेन्द्रियभेदाः</td> <td style="text-align: center;">३५</td> <td colspan="6"></td> </tr> <tr> <td>६ जीवाभिगमभेदाः</td> <td style="text-align: center;">७</td> <td>२१ साधारणबादरवनस्पतिभेदाः</td> <td style="text-align: center;">२७</td> <td>३४ समूर्च्छिमभेदाः</td> <td style="text-align: center;">३५</td> <td colspan="6"></td> </tr> <tr> <td>७ असंसारसमापन्नभेदाः</td> <td style="text-align: center;">८</td> <td>२२ व्रसभेदाः</td> <td style="text-align: center;">२७</td> <td>३५ जलचरभेदाः</td> <td style="text-align: center;">३६</td> <td colspan="6"></td> </tr> <tr> <td>८ संसारसमापन्नभेदाः</td> <td style="text-align: center;">८</td> <td>२३ तेजस्कायभेदाः</td> <td style="text-align: center;">२८</td> <td>३६ समूर्च्छिमपंचन्द्रियतिर्यग्भेदाः</td> <td style="text-align: center;">३७</td> <td colspan="6"></td> </tr> <tr> <td>९ प्रतिपत्तिभेदाः</td> <td style="text-align: center;">९</td> <td>२४ सूक्ष्मतेजस्कायभेदाः</td> <td style="text-align: center;">२८</td> <td>३७ गर्भजतिर्यग्भेदाः</td> <td style="text-align: center;">४१</td> <td colspan="6"></td> </tr> <tr> <td>१० स्थावरभेदाः</td> <td style="text-align: center;">९</td> <td>२५ बादरतेजस्कायभेदाः</td> <td style="text-align: center;">२८</td> <td>३८ गर्भजजलचरतिर्यग्भेदाः</td> <td style="text-align: center;">४२</td> <td colspan="6"></td> </tr> <tr> <td>११ पृथ्वीकायिकभेदाः</td> <td style="text-align: center;">१०</td> <td>२६ वायुकायभेदाः</td> <td style="text-align: center;">२९</td> <td>३९ गर्भजस्थलचरभेदाः</td> <td style="text-align: center;">४३</td> <td colspan="6"></td> </tr> <tr> <td>१२-१३ सूक्ष्मपृथ्वीकायिकभेदाः</td> <td style="text-align: center;">१०</td> <td>२७ औदारिकव्रसभेदाः</td> <td style="text-align: center;">३०</td> <td>४० गर्भजखेचरभेदाः</td> <td style="text-align: center;">४४</td> <td colspan="6"></td> </tr> <tr> <td>१४-१५ श्लक्ष्णबादरपृथ्वीकायौ</td> <td style="text-align: center;">२२</td> <td>२८ द्वीन्द्रियभेदाः</td> <td style="text-align: center;">३०</td> <td>४१ मनुष्यभेदाः</td> <td style="text-align: center;">४५</td> <td colspan="6"></td> </tr> <tr> <td></td> <td></td> <td></td> <td></td> <td>४२ देवभेदाः</td> <td style="text-align: center;">४८</td> <td colspan="6"></td> </tr> </table>										श्रीजीवाजीवाभिगमस्य विषयसूचिः											१ शास्त्रभूमिका प्रामाण्यं च	२	१६ अप्कायभेदाः	२४	२९ त्रीन्द्रियभेदाः	३१							२ अभिगमभेदौ	४	१७ बादराप्कायभेदाः	२४	३० चतुर्न्द्रियभेदाः	३२							३ अजीवाभिगमभेदाः		१७-१८ वनस्पतिभेदाः, सूक्ष्मवनस्पति- भेदाः	२५	३१ पंचेन्द्रियभेदाः	३२							४ अरूप्यजीवाभिगमभेदाः		१९ बादरवनस्पतिभेदाः	२६	३२ नैरयिकभेदाः	३३							५ रूप्यजीवाभि०		२० प्रत्येकवनस्पतिभेदाः	२६	३३ तिर्यक्पंचेन्द्रियभेदाः	३५							६ जीवाभिगमभेदाः	७	२१ साधारणबादरवनस्पतिभेदाः	२७	३४ समूर्च्छिमभेदाः	३५							७ असंसारसमापन्नभेदाः	८	२२ व्रसभेदाः	२७	३५ जलचरभेदाः	३६							८ संसारसमापन्नभेदाः	८	२३ तेजस्कायभेदाः	२८	३६ समूर्च्छिमपंचन्द्रियतिर्यग्भेदाः	३७							९ प्रतिपत्तिभेदाः	९	२४ सूक्ष्मतेजस्कायभेदाः	२८	३७ गर्भजतिर्यग्भेदाः	४१							१० स्थावरभेदाः	९	२५ बादरतेजस्कायभेदाः	२८	३८ गर्भजजलचरतिर्यग्भेदाः	४२							११ पृथ्वीकायिकभेदाः	१०	२६ वायुकायभेदाः	२९	३९ गर्भजस्थलचरभेदाः	४३							१२-१३ सूक्ष्मपृथ्वीकायिकभेदाः	१०	२७ औदारिकव्रसभेदाः	३०	४० गर्भजखेचरभेदाः	४४							१४-१५ श्लक्ष्णबादरपृथ्वीकायौ	२२	२८ द्वीन्द्रियभेदाः	३०	४१ मनुष्यभेदाः	४५											४२ देवभेदाः	४८						
श्रीजीवाजीवाभिगमस्य विषयसूचिः																																																																																																																																																																																														
१ शास्त्रभूमिका प्रामाण्यं च	२	१६ अप्कायभेदाः	२४	२९ त्रीन्द्रियभेदाः	३१																																																																																																																																																																																									
२ अभिगमभेदौ	४	१७ बादराप्कायभेदाः	२४	३० चतुर्न्द्रियभेदाः	३२																																																																																																																																																																																									
३ अजीवाभिगमभेदाः		१७-१८ वनस्पतिभेदाः, सूक्ष्मवनस्पति- भेदाः	२५	३१ पंचेन्द्रियभेदाः	३२																																																																																																																																																																																									
४ अरूप्यजीवाभिगमभेदाः		१९ बादरवनस्पतिभेदाः	२६	३२ नैरयिकभेदाः	३३																																																																																																																																																																																									
५ रूप्यजीवाभि०		२० प्रत्येकवनस्पतिभेदाः	२६	३३ तिर्यक्पंचेन्द्रियभेदाः	३५																																																																																																																																																																																									
६ जीवाभिगमभेदाः	७	२१ साधारणबादरवनस्पतिभेदाः	२७	३४ समूर्च्छिमभेदाः	३५																																																																																																																																																																																									
७ असंसारसमापन्नभेदाः	८	२२ व्रसभेदाः	२७	३५ जलचरभेदाः	३६																																																																																																																																																																																									
८ संसारसमापन्नभेदाः	८	२३ तेजस्कायभेदाः	२८	३६ समूर्च्छिमपंचन्द्रियतिर्यग्भेदाः	३७																																																																																																																																																																																									
९ प्रतिपत्तिभेदाः	९	२४ सूक्ष्मतेजस्कायभेदाः	२८	३७ गर्भजतिर्यग्भेदाः	४१																																																																																																																																																																																									
१० स्थावरभेदाः	९	२५ बादरतेजस्कायभेदाः	२८	३८ गर्भजजलचरतिर्यग्भेदाः	४२																																																																																																																																																																																									
११ पृथ्वीकायिकभेदाः	१०	२६ वायुकायभेदाः	२९	३९ गर्भजस्थलचरभेदाः	४३																																																																																																																																																																																									
१२-१३ सूक्ष्मपृथ्वीकायिकभेदाः	१०	२७ औदारिकव्रसभेदाः	३०	४० गर्भजखेचरभेदाः	४४																																																																																																																																																																																									
१४-१५ श्लक्ष्णबादरपृथ्वीकायौ	२२	२८ द्वीन्द्रियभेदाः	३०	४१ मनुष्यभेदाः	४५																																																																																																																																																																																									
				४२ देवभेदाः	४८																																																																																																																																																																																									

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [उपांगसूत्र-३ “जीवाजीवाभिगम”]									
	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)									
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए ‘संवृत्तिक आगम सुत्ताणि’	श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ १५ ॥	४३ त्रसस्यावरस्थितिभेदाः इति प्रथमा प्रतिपत्तिः ४४ जीवास्त्रिभेदाः ४५ स्त्रीभेदाः ४६ स्त्रीवेदस्थित्यादिभेदाः ४७ तिर्यक्स्त्रीस्थित्यादिभेदाः ४८ सामान्यविशेषतया स्त्रीत्वस्थितिभेदाः ४९ स्त्रीणामन्तरभेदाः ५० स्त्रीणामरूपबहुत्वभेदाः ५१ स्त्रीवेदबन्धस्थितिभेदाः ५२ पुरुषभेदाः ५३ पुरुषस्थितिभेदाः ५४ पुरुषवेदस्य स्थितिभेदाः ५५ पुरुषवेदस्यान्तरभेदाः	५० ५२ ५२ ५३ ५४ ५७ ६१ ६२ ६४ ६५ ६५ ६७ ६९	५६ पुरुषारूपबहुत्वभेदाः ५७ पुरुषवेदस्य स्थितिभेदाः ५८ नपुंसकभेदाः ५९ नपुंसकस्थित्यन्तरभेदाः ६० नपुंसकानामरूपबहुत्वभेदाः ६१ नपुंसके बन्धस्थितिभेदाः ६२ वेदानामरूपबहुत्वभेदाः ६३ वेदानां स्थितिभेदाः ६४ वेदानामरूपबहुत्वभेदाः इति द्वितीया प्रतिपत्तिः ६५ जीवाश्चतुर्भेदाः ६६ नारकाणां पृथ्वीनां भेदाः ६७ नारकाणां पृथ्वीनां नामगोत्रभेदाः ६८ ,, बाह्यभेदाः	७१ ७४ ७४ ७५ ७९ ८२ ८३ ८७ ८७ ८८ ८८ ८८ ८८ ८८	६९ पृथ्वीकाण्डादिभेदाः ७० नारकावाससंख्याभेदाः ७१ घनोदध्यादिभेदाः ७२ काण्डाद्यन्तरभेदाः ७३ रत्नप्रभाकाण्डादिद्रव्यस्वरूपभेदाः ७४ रत्नप्रभादिसंस्थानभेदाः ७५ रत्नप्रभादीनामलोकाबाधादिभेदाः ७६ घनोदधिबाह्यमानभेदाः ७७ रत्नप्रभासर्वजीवपुद्गलोत्पादः ७८ रत्नप्रभायाः शाश्वतेतरत्रे भेदौ ७९ काण्डाद्यन्तरवर्णनम् ८० रत्नप्रभादीनामरूपबहुत्वभेदाः ८१ नरकावासस्थानभेदाः ८२ नरकावाससंस्थानभेदाः	८८ ८९ ९० ९० ९१ ९२ ९४ ९५ ९७ ९८ १०० १०१ १०२ १०४	श्रीजीवा० विषयसूचिः ॥ १५ ॥		

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [उपांगसूत्र-३ “जीवाजीवाभिगम”]								
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए ‘संवृत्तिक आगम सुत्ताणि’	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) <table border="0" style="width: 100%; border-collapse: collapse;"> <tr> <td style="width: 15%; vertical-align: top;"> श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ १६ ॥ </td><td style="width: 25%; vertical-align: top;"> ८३ नरकावासानां वर्णभेदाः १०६ ८४ नरकावासानां महत्त्वं १०८ ८५ नरकावासाधिकारः १०९ ८६ उपपातसंख्याऽवगाहनाभेदाः ११० ८७ नारकाणां संहननसंस्थानगन्धाद्या भेदाः ११८ ८८ नारकाणां श्वासाहारलेइयाहृष्टिज्ञाना- ज्ञानयोगोपयोगसमुद्घातभेदाः ११५ ८९ नारकाणां क्षुत्पिपासभेदाः ११६ ९० नैरयिकाणां स्थितिभेदाः १२६ ९१ नारकाणामुद्वर्त्तनाभेदाः ” ९२-९५ नरकेषु पृथिव्यादिस्पर्शस्वरूप- भेदाः १२९ ९६ तिर्यग्भेदाः १३१ </td><td style="width: 25%; vertical-align: top;"> ९७-१०२ तिर्यग्योनिभेदाः १३३ १०३-१०४ तिर्यक्स्त्रीपुंभेदाः १४२ १०५ मनुष्यभेदाः १४३ १०६ संमूर्च्छिममनुष्यभेदाः ” १०७ गर्भजमनुष्यभेदाः १४४ १०८ अन्तरद्वीपभेदाः ” १०९ एकोरुक्मनुष्याणां भेदाः ” ११०-११३ मनुष्याधिकारः १५६ ११४ देवभेदाः १५८ ११५ भवनवासिभेदाः ” ११६ भवनवासिभवनभेदाः ” ११७ असुरकुमाराणां भवनभेदाः ” ११८ चमरस्य पर्वद्भेदाः १६४ ११९ उत्तरत्यानामसुरकुमाराणां </td><td style="width: 25%; vertical-align: top;"> भवनानि भेदश्चः १६६ १२० नागादिकुमाराणां भवनभेदाः ” १२१ वानमन्तराणां भवनभेदाः १७१ १२२ ज्योतिष्काणां भवनभेदाः १७४ १२३ तिर्यग्लोकद्वीपसमुद्रभेदाः १७६ १२४ आकारभेदाः १७७ १२५ पद्मवरवेदिका १८० १२६-१२७ वनखण्डवर्णनम् १८५ १२८ विजयद्वारवर्णनम् २०२ १२९ जंबूद्वीपविजयद्वारवर्णनम् २०४ १३० विजयद्वारवर्णनम् २०८ १३१ विजयद्वारतोरणभेदाः २०९ १३२ विजयद्वारचक्रध्वजभेदाः २१५ १३३ विजय० रत्नवर्णनम् २१६ </td><td style="width: 15%; vertical-align: top;"> श्रीजी वा० विषयसूचिः ॥ १६ ॥ </td></tr> </table>				श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ १६ ॥	८३ नरकावासानां वर्णभेदाः १०६ ८४ नरकावासानां महत्त्वं १०८ ८५ नरकावासाधिकारः १०९ ८६ उपपातसंख्याऽवगाहनाभेदाः ११० ८७ नारकाणां संहननसंस्थानगन्धाद्या भेदाः ११८ ८८ नारकाणां श्वासाहारलेइयाहृष्टिज्ञाना- ज्ञानयोगोपयोगसमुद्घातभेदाः ११५ ८९ नारकाणां क्षुत्पिपासभेदाः ११६ ९० नैरयिकाणां स्थितिभेदाः १२६ ९१ नारकाणामुद्वर्त्तनाभेदाः ” ९२-९५ नरकेषु पृथिव्यादिस्पर्शस्वरूप- भेदाः १२९ ९६ तिर्यग्भेदाः १३१	९७-१०२ तिर्यग्योनिभेदाः १३३ १०३-१०४ तिर्यक्स्त्रीपुंभेदाः १४२ १०५ मनुष्यभेदाः १४३ १०६ संमूर्च्छिममनुष्यभेदाः ” १०७ गर्भजमनुष्यभेदाः १४४ १०८ अन्तरद्वीपभेदाः ” १०९ एकोरुक्मनुष्याणां भेदाः ” ११०-११३ मनुष्याधिकारः १५६ ११४ देवभेदाः १५८ ११५ भवनवासिभेदाः ” ११६ भवनवासिभवनभेदाः ” ११७ असुरकुमाराणां भवनभेदाः ” ११८ चमरस्य पर्वद्भेदाः १६४ ११९ उत्तरत्यानामसुरकुमाराणां	भवनानि भेदश्चः १६६ १२० नागादिकुमाराणां भवनभेदाः ” १२१ वानमन्तराणां भवनभेदाः १७१ १२२ ज्योतिष्काणां भवनभेदाः १७४ १२३ तिर्यग्लोकद्वीपसमुद्रभेदाः १७६ १२४ आकारभेदाः १७७ १२५ पद्मवरवेदिका १८० १२६-१२७ वनखण्डवर्णनम् १८५ १२८ विजयद्वारवर्णनम् २०२ १२९ जंबूद्वीपविजयद्वारवर्णनम् २०४ १३० विजयद्वारवर्णनम् २०८ १३१ विजयद्वारतोरणभेदाः २०९ १३२ विजयद्वारचक्रध्वजभेदाः २१५ १३३ विजय० रत्नवर्णनम् २१६	श्रीजी वा० विषयसूचिः ॥ १६ ॥
श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ १६ ॥	८३ नरकावासानां वर्णभेदाः १०६ ८४ नरकावासानां महत्त्वं १०८ ८५ नरकावासाधिकारः १०९ ८६ उपपातसंख्याऽवगाहनाभेदाः ११० ८७ नारकाणां संहननसंस्थानगन्धाद्या भेदाः ११८ ८८ नारकाणां श्वासाहारलेइयाहृष्टिज्ञाना- ज्ञानयोगोपयोगसमुद्घातभेदाः ११५ ८९ नारकाणां क्षुत्पिपासभेदाः ११६ ९० नैरयिकाणां स्थितिभेदाः १२६ ९१ नारकाणामुद्वर्त्तनाभेदाः ” ९२-९५ नरकेषु पृथिव्यादिस्पर्शस्वरूप- भेदाः १२९ ९६ तिर्यग्भेदाः १३१	९७-१०२ तिर्यग्योनिभेदाः १३३ १०३-१०४ तिर्यक्स्त्रीपुंभेदाः १४२ १०५ मनुष्यभेदाः १४३ १०६ संमूर्च्छिममनुष्यभेदाः ” १०७ गर्भजमनुष्यभेदाः १४४ १०८ अन्तरद्वीपभेदाः ” १०९ एकोरुक्मनुष्याणां भेदाः ” ११०-११३ मनुष्याधिकारः १५६ ११४ देवभेदाः १५८ ११५ भवनवासिभेदाः ” ११६ भवनवासिभवनभेदाः ” ११७ असुरकुमाराणां भवनभेदाः ” ११८ चमरस्य पर्वद्भेदाः १६४ ११९ उत्तरत्यानामसुरकुमाराणां	भवनानि भेदश्चः १६६ १२० नागादिकुमाराणां भवनभेदाः ” १२१ वानमन्तराणां भवनभेदाः १७१ १२२ ज्योतिष्काणां भवनभेदाः १७४ १२३ तिर्यग्लोकद्वीपसमुद्रभेदाः १७६ १२४ आकारभेदाः १७७ १२५ पद्मवरवेदिका १८० १२६-१२७ वनखण्डवर्णनम् १८५ १२८ विजयद्वारवर्णनम् २०२ १२९ जंबूद्वीपविजयद्वारवर्णनम् २०४ १३० विजयद्वारवर्णनम् २०८ १३१ विजयद्वारतोरणभेदाः २०९ १३२ विजयद्वारचक्रध्वजभेदाः २१५ १३३ विजय० रत्नवर्णनम् २१६	श्रीजी वा० विषयसूचिः ॥ १६ ॥					

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमः [उपांगसूत्र-३ “जीवाजीवाभिगम”]									
	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)									
प्रत सूत्रांक यहां देखिए दीप क्रमांक के लिए देखिए ‘संवृत्तिक आगम सुत्ताणि’	श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥१७॥	<table style="width: 100%; border-collapse: collapse;"> <tr> <td style="width: 33%; vertical-align: top;"> १३४ विजय० विजयदेववर्णनम् २१६ १३५ विजयदेवराजधानीवर्णनम् २१८ १३६ विजयद्वारवनखण्डभेदाः ” १३७ विजयदेवसभावर्णनम् २२६ १३८ माणवकस्तम्भदेवशयनीय- </td></tr></table>								१३४ विजय० विजयदेववर्णनम् २१६ १३५ विजयदेवराजधानीवर्णनम् २१८ १३६ विजयद्वारवनखण्डभेदाः ” १३७ विजयदेवसभावर्णनम् २२६ १३८ माणवकस्तम्भदेवशयनीय-
१३४ विजय० विजयदेववर्णनम् २१६ १३५ विजयदेवराजधानीवर्णनम् २१८ १३६ विजयद्वारवनखण्डभेदाः ” १३७ विजयदेवसभावर्णनम् २२६ १३८ माणवकस्तम्भदेवशयनीय- 										

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमः [उपांगसूत्र-३ “जीवाजीवाभिगम”]								
प्रत सूत्रांक यहां देखिए दीप क्रमांक के लिए देखिए ‘संवृत्तिक आगम सुत्ताणि’	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) <table border="0" style="width: 100%; border-collapse: collapse;"> <tr> <td style="width: 15%; vertical-align: top;"> श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ १८ ॥ </td><td style="width: 25%; vertical-align: top;"> १७१ लवणे गोतीर्थवर्णनम् ३२३ १७२ लवणस्य विष्कम्भवर्णनम् ३२४ १७३ लवणसमुद्राधिकारः ३२५ १७४ धातकीखण्डवर्णनम् ३२७ १७५ कालोदधिवर्णनम् ३२९ १७६ पुष्करवरद्वीपवर्णनम् ३३१ १७७ समयक्षेत्रवर्णनम् ३३३ १७८ मानुषोत्तरवर्णनम् ३४१ १७९ अन्तर्बहिश्चन्द्रादीनामूर्ध्वोप- पन्नत्वादिभेदाः ३४५ १८० पुष्करवरवरुणवरौ ३४७ १८१ क्षीरवरक्षीरोदयोर्वर्णनम् ३५२ १८२ घृतवरघृतोदवरक्षोदोदाः ३५३ १८३ नंदीश्वरवर्णनम् ३५७ </td><td style="width: 25%; vertical-align: top;"> १८४ नंदीश्वरोदवर्णनम् ३६५ १८५ त्रिप्रत्यवताराः समुद्राः ३६६ १८६ सट्टभानामानोऽसंख्यद्वीपवर्णनम् ३७० १८७ लवणोदाद्युदकवर्णनम् ३७१ १८८ समुद्रेषु मत्स्यकच्छपवर्णनम् ३७२ १८९ द्वीपोदधिमानम् ” १९० द्वीपसमुद्रवर्णनम् ३७३ १९१ पुद्गलपरिणामः ” १९२ देवकृतः पुद्गलग्रहो बालग्रन्थनं च ३७४ १९३ चन्द्रादेरधःसमोपरिभागेषु ताराः ३७५ १९४ ग्रहादिपरिवरवर्णनम् ३७६ १९५ मेरुलोकान्तपरस्परबाधावर्णनम् ” १९६ अन्तर्बाह्योपर्यधस्तनास्ताराः ३७७ </td><td style="width: 25%; vertical-align: top;"> १९७ चन्द्रादिसंस्थानायामादिवर्णनम् ३७८ १९८ चन्द्रादिवाहनानि वर्णनम् ३८० १९९ चन्द्रादीनां शीघ्रमन्दगतिमत्त्वं ३८२ २०० चन्द्रा० अल्पमहद्विकत्वं ” २०१ जम्बूद्वीपे तारान्तरवर्णनम् ३८३ २०२ चन्द्रस्याग्रमहिषीवर्णनम् ” २०३ चन्द्रस्य देव्यः ” २०४ सूर्यस्य देवीनां वर्णनम् ” २०५ चन्द्रस्य स्थितिर्वर्णनम् ३८५ २०६ चन्द्रसूर्याणामल्पबहुत्वं ” २०७ वैमानिकभेदाः ” २०८ वैमानिके शक्रस्य पर्पद्वर्णनम् ३८६ २०९ विमानाधारवर्णनम् ३९४ २१० विमानपृथ्वीबाह्यवर्णनम् ” </td><td style="width: 15%; vertical-align: top;"> श्रीजीवा० विषयसूचिः ॥ १८ ॥ </td></tr> </table>				श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ १८ ॥	१७१ लवणे गोतीर्थवर्णनम् ३२३ १७२ लवणस्य विष्कम्भवर्णनम् ३२४ १७३ लवणसमुद्राधिकारः ३२५ १७४ धातकीखण्डवर्णनम् ३२७ १७५ कालोदधिवर्णनम् ३२९ १७६ पुष्करवरद्वीपवर्णनम् ३३१ १७७ समयक्षेत्रवर्णनम् ३३३ १७८ मानुषोत्तरवर्णनम् ३४१ १७९ अन्तर्बहिश्चन्द्रादीनामूर्ध्वोप- पन्नत्वादिभेदाः ३४५ १८० पुष्करवरवरुणवरौ ३४७ १८१ क्षीरवरक्षीरोदयोर्वर्णनम् ३५२ १८२ घृतवरघृतोदवरक्षोदोदाः ३५३ १८३ नंदीश्वरवर्णनम् ३५७	१८४ नंदीश्वरोदवर्णनम् ३६५ १८५ त्रिप्रत्यवताराः समुद्राः ३६६ १८६ सट्टभानामानोऽसंख्यद्वीपवर्णनम् ३७० १८७ लवणोदाद्युदकवर्णनम् ३७१ १८८ समुद्रेषु मत्स्यकच्छपवर्णनम् ३७२ १८९ द्वीपोदधिमानम् ” १९० द्वीपसमुद्रवर्णनम् ३७३ १९१ पुद्गलपरिणामः ” १९२ देवकृतः पुद्गलग्रहो बालग्रन्थनं च ३७४ १९३ चन्द्रादेरधःसमोपरिभागेषु ताराः ३७५ १९४ ग्रहादिपरिवरवर्णनम् ३७६ १९५ मेरुलोकान्तपरस्परबाधावर्णनम् ” १९६ अन्तर्बाह्योपर्यधस्तनास्ताराः ३७७	१९७ चन्द्रादिसंस्थानायामादिवर्णनम् ३७८ १९८ चन्द्रादिवाहनानि वर्णनम् ३८० १९९ चन्द्रादीनां शीघ्रमन्दगतिमत्त्वं ३८२ २०० चन्द्रा० अल्पमहद्विकत्वं ” २०१ जम्बूद्वीपे तारान्तरवर्णनम् ३८३ २०२ चन्द्रस्याग्रमहिषीवर्णनम् ” २०३ चन्द्रस्य देव्यः ” २०४ सूर्यस्य देवीनां वर्णनम् ” २०५ चन्द्रस्य स्थितिर्वर्णनम् ३८५ २०६ चन्द्रसूर्याणामल्पबहुत्वं ” २०७ वैमानिकभेदाः ” २०८ वैमानिके शक्रस्य पर्पद्वर्णनम् ३८६ २०९ विमानाधारवर्णनम् ३९४ २१० विमानपृथ्वीबाह्यवर्णनम् ”	श्रीजीवा० विषयसूचिः ॥ १८ ॥
श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ १८ ॥	१७१ लवणे गोतीर्थवर्णनम् ३२३ १७२ लवणस्य विष्कम्भवर्णनम् ३२४ १७३ लवणसमुद्राधिकारः ३२५ १७४ धातकीखण्डवर्णनम् ३२७ १७५ कालोदधिवर्णनम् ३२९ १७६ पुष्करवरद्वीपवर्णनम् ३३१ १७७ समयक्षेत्रवर्णनम् ३३३ १७८ मानुषोत्तरवर्णनम् ३४१ १७९ अन्तर्बहिश्चन्द्रादीनामूर्ध्वोप- पन्नत्वादिभेदाः ३४५ १८० पुष्करवरवरुणवरौ ३४७ १८१ क्षीरवरक्षीरोदयोर्वर्णनम् ३५२ १८२ घृतवरघृतोदवरक्षोदोदाः ३५३ १८३ नंदीश्वरवर्णनम् ३५७	१८४ नंदीश्वरोदवर्णनम् ३६५ १८५ त्रिप्रत्यवताराः समुद्राः ३६६ १८६ सट्टभानामानोऽसंख्यद्वीपवर्णनम् ३७० १८७ लवणोदाद्युदकवर्णनम् ३७१ १८८ समुद्रेषु मत्स्यकच्छपवर्णनम् ३७२ १८९ द्वीपोदधिमानम् ” १९० द्वीपसमुद्रवर्णनम् ३७३ १९१ पुद्गलपरिणामः ” १९२ देवकृतः पुद्गलग्रहो बालग्रन्थनं च ३७४ १९३ चन्द्रादेरधःसमोपरिभागेषु ताराः ३७५ १९४ ग्रहादिपरिवरवर्णनम् ३७६ १९५ मेरुलोकान्तपरस्परबाधावर्णनम् ” १९६ अन्तर्बाह्योपर्यधस्तनास्ताराः ३७७	१९७ चन्द्रादिसंस्थानायामादिवर्णनम् ३७८ १९८ चन्द्रादिवाहनानि वर्णनम् ३८० १९९ चन्द्रादीनां शीघ्रमन्दगतिमत्त्वं ३८२ २०० चन्द्रा० अल्पमहद्विकत्वं ” २०१ जम्बूद्वीपे तारान्तरवर्णनम् ३८३ २०२ चन्द्रस्याग्रमहिषीवर्णनम् ” २०३ चन्द्रस्य देव्यः ” २०४ सूर्यस्य देवीनां वर्णनम् ” २०५ चन्द्रस्य स्थितिर्वर्णनम् ३८५ २०६ चन्द्रसूर्याणामल्पबहुत्वं ” २०७ वैमानिकभेदाः ” २०८ वैमानिके शक्रस्य पर्पद्वर्णनम् ३८६ २०९ विमानाधारवर्णनम् ३९४ २१० विमानपृथ्वीबाह्यवर्णनम् ”	श्रीजीवा० विषयसूचिः ॥ १८ ॥					

[illegible]

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [उपांगसूत्र-३ “जीवाजीवाभिगम”]			
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए ‘संवृत्तिक आगम सुत्ताणि’	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)			
	श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ २० ॥	२४५ सर्वजीवानां सेन्द्रियकायवेद- कषायलेश्याभेदाः ४३७ २४६ सर्वजीवज्ञानस्थितिः ४३९ २४७ सर्वजीवाहारकेतरस्थिति- वर्णनम् ४४० २४८ सर्वजीवभाषकसशरीरेतरवर्णनम् ४४३ २४९ सर्व० चरमेतरवर्णनम् ४४४ २५० सम्यग्दृष्ट्यादिवर्णनम् ४४५ २५१ सर्वजीवत्रैविध्ये परिचादिवर्णनम् ४४६ २५२ सर्व० पर्याप्तापर्याप्तवर्णनम् ४४७ २५३ सूक्ष्मवादरवर्णनम् ४४८ २५४ सर्व० त्रैविध्ये संज्ञित्वादि- वर्णनम् ४४८ २५५ सर्व० भव्यत्वादिवर्णनम् ४४९	२५६ सर्व० त्रसादिवर्णनम् ४४९ २५७ ,, मनोयोगादिवर्णनम् ,, २५८ ,, स्त्रीवेदादिवर्णनम् ४५० २५९ -२६४ सर्वजीवचातुर्विध्ये चक्षुर्दर्शनादिवर्णनम् ४५१ २६५-२६६ सर्व० सप्तविधत्वं काय- लेश्यावर्णनम् च ४५७ २६७ सर्व० अष्टविधत्वं ज्ञानाज्ञाने ४५९ २६८ सर्व० नारकतिर्यग्योनतिर्यग्- योन्यादिभेदाः ४६० २६९ सर्व० नवविधत्वमिन्द्रियगति- सिद्धभेदाश्च ४६१ २७० सर्व० प्रथमाप्रथमसमय- नारकादिभिः ४६२	२७१ सर्व० दशविधत्वं पृथ्व्यादिभिः प्रथमाप्रथमसमयनारकादिभिश्च ४६४ २७२ सर्वजीवदशविधत्वमुपसंहारः ४६६ इति जीवाजीवाभिगमस्य विषयसूचिः । <

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [उपांगसूत्र-३ “जीवाजीवाभिगम”]				
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए ‘संवृत्तिक आगम सुत्ताणि’	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)				
	<table border="0"> <tr> <td style="vertical-align: top;"> श्रीजीवाजीवाभिगमस्य बृहद् विषयानुक्रमः सूत्राणि २७३; सूत्रगाथाः २३* मङ्गलं, प्रयोजनाद्युपन्यासः, द्वीप- समुद्रनामग्रहणस्य मङ्गलता, मङ्गल- त्रयम् । १ जिनमतादिविशेषणं जीवाजीवा- भिगमाध्ययनं स्थविरप्रणीतम् । ४ २ जीवाजीवाभिगमौ ५ </td><td style="vertical-align: top;"> ५ रूप्यरूप्यजीवाभिगमौ ३, धर्मास्तिका- यादयोऽरूपिणः (१०) ४, स्कन्धा- दयो रूपिणः ५, (धर्मास्तिकायादि- सिद्धिः क्रमोपन्यासप्रयोजनम्) । ७ ७ संसारासंसारसमापन्नजीवाः ६, अन- न्तर(१५) परस्परसिद्धभेदाः ७ । ८ ८ संसारसमापन्ने प्रतिपत्तिनवकम् । ९ ९ त्रसस्थावराः । ” १० पृथिव्यववनस्पतयः स्थावराः । ” ११ सूक्ष्मबादरपृथ्वीकायिकाः । १० १२ पर्याप्तापर्याप्तसूक्ष्माः (पर्याप्तिस्वरूपं, शरीरावगाहनादीनि गत्यागत्यादीनि च द्वाराणि) । ११ १३ शरीरावगाहनसंहननसंस्थानकषाय- </td><td style="vertical-align: top;"> सञ्ज्ञालेश्येन्द्रियसमुद्घातसञ्ज्ञावेद- पर्याप्त्यपर्याप्तिदृष्टिदर्शनज्ञानयोगोप- योगाः, अनन्तप्रदेशत्वाद्याहारस्वरूपं आगतिस्थितिमरणसमुद्घात- गतिनिरूपणं (स्वरूपानाभोगसंभवात् पृच्छा, शरीरपञ्चकव्युत्पत्त्यादि, संहननसंस्थानवर्णनं, इन्द्रियस्वरूपं, समुद्घातस्वरूपम्) । २१ १५ श्लक्ष्णखरबादरपृथिवीकायिकाः १४, श्लक्ष्णा सप्तधा, पर्याप्ताऽपर्याप्ता च, शरीरादीनि द्वाराणि, (चत्वारिंशत्- खरपृथ्वीभेदाः) १५ । २४ १७ अपकायस्य सूक्ष्मादिभेदादिः १६, बादरेऽवश्यायादिभेदादिः । २५ </td><td style="vertical-align: top;"> २२, १-४* सूक्ष्मबादरवनस्पतयः १८, पर्याप्तापर्याप्ताः १९, प्रत्येकसाधारण- भेदौ २०, वृक्षगुल्मादि(१२)- भेदाः, (एकबहुबीजादि, एकाखण्ड- शरीरसमाधानम्) २१; १-४*, आलुकादिसाधारणभेदादिः २२ । २८ २६ तेजोवायुद्वीन्द्रियाद्यालसाः २३, सूक्ष्मबादरतेजसी २४, सूचीकलाप- संस्थिताः सूक्ष्माः २५, बादरेऽङ्गा- रादिभेदादिः २६ । २९ २७ सूक्ष्मबादरा वायवः, प्राचीनादि- भेदादिः, पताकासंस्थानं, शरीर- चतुष्कम् । ३० २९ द्वीन्द्रियाद्याः (४) उदारत्रसाः २८, </td></tr> </table>	श्रीजीवाजीवाभिगमस्य बृहद् विषयानुक्रमः सूत्राणि २७३; सूत्रगाथाः २३* मङ्गलं, प्रयोजनाद्युपन्यासः, द्वीप- समुद्रनामग्रहणस्य मङ्गलता, मङ्गल- त्रयम् । १ जिनमतादिविशेषणं जीवाजीवा- भिगमाध्ययनं स्थविरप्रणीतम् । ४ २ जीवाजीवाभिगमौ ५	५ रूप्यरूप्यजीवाभिगमौ ३, धर्मास्तिका- यादयोऽरूपिणः (१०) ४, स्कन्धा- दयो रूपिणः ५, (धर्मास्तिकायादि- सिद्धिः क्रमोपन्यासप्रयोजनम्) । ७ ७ संसारासंसारसमापन्नजीवाः ६, अन- न्तर(१५) परस्परसिद्धभेदाः ७ । ८ ८ संसारसमापन्ने प्रतिपत्तिनवकम् । ९ ९ त्रसस्थावराः । ” १० पृथिव्यववनस्पतयः स्थावराः । ” ११ सूक्ष्मबादरपृथ्वीकायिकाः । १० १२ पर्याप्तापर्याप्तसूक्ष्माः (पर्याप्तिस्वरूपं, शरीरावगाहनादीनि गत्यागत्यादीनि च द्वाराणि) । ११ १३ शरीरावगाहनसंहननसंस्थानकषाय-	सञ्ज्ञालेश्येन्द्रियसमुद्घातसञ्ज्ञावेद- पर्याप्त्यपर्याप्तिदृष्टिदर्शनज्ञानयोगोप- योगाः, अनन्तप्रदेशत्वाद्याहारस्वरूपं आगतिस्थितिमरणसमुद्घात- गतिनिरूपणं (स्वरूपानाभोगसंभवात् पृच्छा, शरीरपञ्चकव्युत्पत्त्यादि, संहननसंस्थानवर्णनं, इन्द्रियस्वरूपं, समुद्घातस्वरूपम्) । २१ १५ श्लक्ष्णखरबादरपृथिवीकायिकाः १४, श्लक्ष्णा सप्तधा, पर्याप्ताऽपर्याप्ता च, शरीरादीनि द्वाराणि, (चत्वारिंशत्- खरपृथ्वीभेदाः) १५ । २४ १७ अपकायस्य सूक्ष्मादिभेदादिः १६, बादरेऽवश्यायादिभेदादिः । २५	२२, १-४* सूक्ष्मबादरवनस्पतयः १८, पर्याप्तापर्याप्ताः १९, प्रत्येकसाधारण- भेदौ २०, वृक्षगुल्मादि(१२)- भेदाः, (एकबहुबीजादि, एकाखण्ड- शरीरसमाधानम्) २१; १-४*, आलुकादिसाधारणभेदादिः २२ । २८ २६ तेजोवायुद्वीन्द्रियाद्यालसाः २३, सूक्ष्मबादरतेजसी २४, सूचीकलाप- संस्थिताः सूक्ष्माः २५, बादरेऽङ्गा- रादिभेदादिः २६ । २९ २७ सूक्ष्मबादरा वायवः, प्राचीनादि- भेदादिः, पताकासंस्थानं, शरीर- चतुष्कम् । ३० २९ द्वीन्द्रियाद्याः (४) उदारत्रसाः २८,
श्रीजीवाजीवाभिगमस्य बृहद् विषयानुक्रमः सूत्राणि २७३; सूत्रगाथाः २३* मङ्गलं, प्रयोजनाद्युपन्यासः, द्वीप- समुद्रनामग्रहणस्य मङ्गलता, मङ्गल- त्रयम् । १ जिनमतादिविशेषणं जीवाजीवा- भिगमाध्ययनं स्थविरप्रणीतम् । ४ २ जीवाजीवाभिगमौ ५	५ रूप्यरूप्यजीवाभिगमौ ३, धर्मास्तिका- यादयोऽरूपिणः (१०) ४, स्कन्धा- दयो रूपिणः ५, (धर्मास्तिकायादि- सिद्धिः क्रमोपन्यासप्रयोजनम्) । ७ ७ संसारासंसारसमापन्नजीवाः ६, अन- न्तर(१५) परस्परसिद्धभेदाः ७ । ८ ८ संसारसमापन्ने प्रतिपत्तिनवकम् । ९ ९ त्रसस्थावराः । ” १० पृथिव्यववनस्पतयः स्थावराः । ” ११ सूक्ष्मबादरपृथ्वीकायिकाः । १० १२ पर्याप्तापर्याप्तसूक्ष्माः (पर्याप्तिस्वरूपं, शरीरावगाहनादीनि गत्यागत्यादीनि च द्वाराणि) । ११ १३ शरीरावगाहनसंहननसंस्थानकषाय-	सञ्ज्ञालेश्येन्द्रियसमुद्घातसञ्ज्ञावेद- पर्याप्त्यपर्याप्तिदृष्टिदर्शनज्ञानयोगोप- योगाः, अनन्तप्रदेशत्वाद्याहारस्वरूपं आगतिस्थितिमरणसमुद्घात- गतिनिरूपणं (स्वरूपानाभोगसंभवात् पृच्छा, शरीरपञ्चकव्युत्पत्त्यादि, संहननसंस्थानवर्णनं, इन्द्रियस्वरूपं, समुद्घातस्वरूपम्) । २१ १५ श्लक्ष्णखरबादरपृथिवीकायिकाः १४, श्लक्ष्णा सप्तधा, पर्याप्ताऽपर्याप्ता च, शरीरादीनि द्वाराणि, (चत्वारिंशत्- खरपृथ्वीभेदाः) १५ । २४ १७ अपकायस्य सूक्ष्मादिभेदादिः १६, बादरेऽवश्यायादिभेदादिः । २५	२२, १-४* सूक्ष्मबादरवनस्पतयः १८, पर्याप्तापर्याप्ताः १९, प्रत्येकसाधारण- भेदौ २०, वृक्षगुल्मादि(१२)- भेदाः, (एकबहुबीजादि, एकाखण्ड- शरीरसमाधानम्) २१; १-४*, आलुकादिसाधारणभेदादिः २२ । २८ २६ तेजोवायुद्वीन्द्रियाद्यालसाः २३, सूक्ष्मबादरतेजसी २४, सूचीकलाप- संस्थिताः सूक्ष्माः २५, बादरेऽङ्गा- रादिभेदादिः २६ । २९ २७ सूक्ष्मबादरा वायवः, प्राचीनादि- भेदादिः, पताकासंस्थानं, शरीर- चतुष्कम् । ३० २९ द्वीन्द्रियाद्याः (४) उदारत्रसाः २८,		

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमः [उपांगसूत्र-३ “जीवाजीवाभिगम”]			
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए ‘संवृत्तिक आगम सुत्ताणि’	श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ २२ ॥	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)		श्रीजीवा० बृहद्- विषयानुक्रमः <

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [उपांगसूत्र-३ “जीवाजीवाभिगम”]				
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए ‘संवृत्तिक आगम सुत्ताणि’	श्रीउपा० विषयानुक्रमे ॥ २५ ॥	शतानि, हरितकायाः, चतुरशीति- लक्षाः । १३७ १०० स्वस्तिकादि(११)विमानानां महत्त्वं देवातिक्रमकालश्च, तथैवा- चिरादिकामादिविजयादीनामपि, (चण्डादिगतिमानम्) । १३२ ॥ प्रथमस्तिर्यगुद्देशः ॥ १०१ पृथ्वीकायाद्याः सर्वार्थसिद्धान्ताः । १३९ १०३ श्लक्ष्णाद्याः पृथ्वीभेदाः (६) एकद्वादशचतुर्दशषोडशाष्टाद- शद्वात्रिंशतिसहस्रस्थितिकाः, नारकादीनां स्थितिः, सर्वदा जीवपृथिव्यादित्वम् १०२, पृथ्व्या-	दिनिलेपनविचारः १०३ । १४१ १०४ अविशुद्धासमवहतानगाराविशुद्ध- लेश्यदेवेतरादिज्ञानादिविचारः । १४२ १०५ सम्यक्त्वमिथ्यात्वक्रिययोर्न यौग- पद्यम् । १४३ ॥ द्वितीयस्तिर्यगुद्देशः ॥ १०७ संमूर्च्छिमगर्भजमनुज्याः १०६, संमूर्च्छिममनुज्योत्पत्त्यतिदेशः १०७ । १४४ १०९ कर्मभूमिजादिगर्भजाः १०८, एकोरुकाद्या आन्तरद्वीपकाः १०९ । १४४ ११० एकोरुकस्य स्थानायामादि- वेदिकान्तम् । १४५	१११ वनखण्डतृणवर्णादिवापीप्रभृतिः । १४५ ११२ एकोरुके भूमिभागः, उद्दालकहेरु- वालतिलकाद्यावृक्षाः, पद्माद्या लताः, सेरिकाद्या गुरुमाः, वनराज्यः, मत्ता- ङ्गाद्याः कल्पवृक्षाः (१०), तत्र नरा- णामाकारलक्षणस्वरसंहननाद्युच्छ्रय- पृष्ठकरण्डकाहारार्थाः, नारीणामपि, पृथ्वीपुष्पफलाहारास्ते, पृथ्व्यादी- नामास्वादः, वसतिवृक्षाणां संस्थानं, गृहादिग्रामाद्यस्याद्यभावः, हिरण्या- द्यनुपभोगः, राजदासाद्यभावः, मात्रा- दिभेदाल्पं, अरिमित्राऽऽवाहेन्द्रमह- नटप्रेक्षाशकटाश्वसिंहशालीगर्त्ता- स्थाणुदंशाहिग्रहदण्डडिम्बमहा-	श्रीजीवा० बृहद्- विषयानुक्रमः ॥ २५ ॥

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [उपांगसूत्र-३ “जीवाजीवाभिगम”]				
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए ‘संवृत्तिक आगम सुत्ताणि’	श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ २६ ॥	युद्धातिवर्षायाकारादिभावाभाव- विचारः, आयुर्गतिप्रसवाः, आभा- षिकादीनामपि । १५५ ११४, २६* हयकर्णाद्यन्तरद्वीपानां स्व- रूपम् ११३, २५-२६* हैम- वतभरतार्यादिभेदाः ११४ । १५८ ११८ भवनवास्यादयो देवाः ११५, असुरकुमारादिभेदातिदेशः ११६, भवनावासादिस्थानातिदेशः ११७; असुरकुमारादिभवनस्थानातिदेशः ११८ । १६४ ११९ चमरस्य समिताचण्डाजाताः पर्षदः, तद्देवसाहरुयः, तद्देवदेवीस्थितिश्च । १६६	१२० बलिनः पर्षत्तद्देवस्थित्यादयः । १६७ १२१ नागकुमारादिभवनादिः, धरणादि- पर्षदादिः । १७१ १२२ व्यन्तरतदिन्द्रस्थानपर्षदादिः । १७४ १२३ ज्योतिष्कानां स्थानादिः । १७६ १२४ द्वीपसमुद्रस्थानसंख्यामहत्त्वसंस्थाना- ऽऽकारादिः । १७७ १२५ जम्बूद्वीपाऽऽयामादिजगतिजाल- कटकवर्णनम् । १७८ १२६ पद्मवरवेदिकावर्णनम् । १८३ १२७ वनखण्डवर्णनम् । १९२ १२८ वापीत्रिसोपानतोरणाष्टमङ्गलोत्पा- तादिपर्वतहंसासनाद्यादिगृहादिजाति- मण्डपादिहंसासनादिवर्णनम् । २०१	१३० विजयादीनि द्वाराणि १२९, विजयद्वारकपाटादिनैषेधिकादि- वर्णनम् १३० । २०८ १३१ प्रकण्ठकप्रासादावतंसकमणिपीठिका- सिंहासनादिवर्णनम् । २११ १३२ नैषेधिकायां तोरणनागदन्तहयसंघाट- कभृङ्गारादर्शस्थालपात्रीसुप्रतिष्ठ- कमनोगुलिकाफलकशिकगवात- करकरत्नकरण्डकहयकण्ठपुष्पचङ्गे- र्यादिपुष्पपटलसिंहासनच्छत्रचा- मरतिलसमुद्रादिवर्णनम् । २१५ १३३ अष्टशतचक्रध्वजादि-भौमनवक- सिंहासनविजयदेव-तत्सामानि- काग्रमहिषीपर्षदारक्षकदेवदेवी-	श्रीजीवा० बृहद्- विषयानुक्रमः ॥ २६ ॥

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमः [उपांगसूत्र-३ “जीवाजीवाभिगम”]				
	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)				
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए ‘संवृत्तिक आगम सुत्ताणि’	श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ २८ ॥	पुस्तकरत्नवाचनधार्मिकव्यवसाय- ग्रहणनन्दापुष्करिणीप्रवेशहस्तादि- प्रक्षालनपद्मादिग्रहणसिद्धायतना- गमनपरिवारानुगमनदेवच्छन्दा- गमनजिनप्रतिमाप्रणामप्रमार्जन- स्नानदेवदृष्यनिवेशपुष्पाद्याभरणा- न्तारोहणाष्टमङ्गललेखनधूपोत्क्षेप- महावृत्तस्तुतिशकस्तवपाठमण्डला- लेखनद्वारचेटीप्रमार्जनादिचैत्यस्तूप प्रमार्जनादिजिनप्रतिमाप्रणामादि- सुधर्मासभाप्रवेशजिनसक्थिप्रक्षा- लनार्चनादिशृङ्गाटकाद्यर्चनादेश- सिंहासनोपवेशनानि । २५८ १४४ सामानिकाद्युपवेशनं, पल्योपम-	स्थितिः । २६० १४६ वैजयन्तजयन्तापराजितद्वाराणि १४५, परस्परद्वाराबाधा १४६ । २६१ १४७ द्वीपसमुद्रप्रदेशस्पर्शजीवोत्पाताद्याः । २६२ १४८ उत्तरकुरुवर्णनं, पद्मगन्धादिमनुष्या- नुसर्जना । २८५ १४९ यमकपर्वताधिकारः । २८७ १५० नीलवद्भद्रतत्पद्मभवनद्वारमणि- पीठिकापरिवारपद्मकर्णिकापरिरय- त्रयाणि । २९० १५१ काञ्चनकपर्वताधिकारः, उत्तर- कुरुद्रहाधिकारः । २९२	१५२ जम्बूपीठमणिपीठिकासुदर्शनायामा- दि चैत्यवृक्षवर्णनं च । २९५ १५३, २७-२८* शालचतुष्कप्रासादा- वतंसकसिद्धायतनादिपरिवारजम्बू- सामानिकादिजम्बूवनखण्डपुष्क- रिणीप्रासादावतंसकसिद्धायतन भवनकूटसिद्धायतनतिलकादिवृक्षा- ष्टमङ्गलानि, द्वादश नामानि, अना- द्वतराजधानीवर्णनादिः । ३०० १५४, २९* जम्बूद्वीपे चन्द्रसूर्यादि प्रभासनादिः । ” ॥ इति जम्बूद्वीपाधिकारः ॥ १५५, ३०* लवणसंस्थानविष्कम्भद्वार- चतुष्कतदवाधाप्रदेशस्पर्श-	श्रीजीवा० बृहद्- विषयानुक्रमः

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [उपांगसूत्र-३ “जीवाजीवाभिगम”]				
	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)				
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए ‘संवृत्तिक आगम सुत्ताणि’	श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ २९ ॥	नवर्थाः। ३०३ १५६ लवणे चन्द्रादिसंख्या, (लवणे दिवसरात्र्यादिविचारः, दकस्फा- टिकविमानानि ऊर्ध्वलेश्याकता च)। ३०४ १५७ लवणस्य चतुर्दश्यष्टम्युद्दिष्ट- पूर्णिमासु वर्धनं, वलयासुखाद्याः पातालकलशाः, कालाद्या अधि- ष्टायकाः, त्रयस्त्रिभागाः वायवादि- मन्तः, क्षुल्लकपातालाः, (७८८४) वायून्नामेनोदकोन्नामः। ३०७ १५८ अहोरात्रे द्विवृद्धिहानी। ३०८ १५९ लवणशिखाविष्कम्भान्तरबाह्य- वेलाग्नौदकधारकाः (४२७२६०	सहस्राः) ३०९ १६०, ३१* गोस्तूपाद्या वेलन्धर- नागराजाः, गोस्तूपोदकभास- शङ्खदकसीमावासपर्वतस्थाना- यामादिप्रासादावतंसकतद्राजधानी- वर्णनम्। ३१३ १६१ कर्कोटकादिवेलन्धरतदावासादि। ३१४ १६२ सुस्थितसत्कगौतमद्वीपभौमेय- विहारादिवर्णनम्। ३१५ १६७, ३३॥* जम्बूद्वीप-१६३ अभ्यन्तर- बाह्यलवण-१६४ धातकी- खण्ड-१६५ कालोदकपुष्कर- वरादिचन्द्रसूर्यद्वीपराजधान्यः १६६, जम्बूद्वीपलवणादिद्वीप-	समुद्रनामानि १६७, ३३॥* ३१९ १७० देवद्वीपसमुद्रस्वयम्भूरमणद्वीप- चन्द्रसूर्यद्वीपराजधान्यः १६८, लवणे एव वेलन्धराद्याः १६९, उच्छ्रितक्षुभितजलता लवणे वर्षा च, बाह्याः पूर्णाः १७०। ३२२ १७१ लवणे उद्वेधपरिवृद्धिः (९५)। ३२३ १७२ लवणे गोतीर्थतद्विरहितक्षेत्रो- दकमालप्रमाणम्। ३२४ १७४ लवणसंस्थानविष्कम्भोद्वेधोत्सेध- सर्वाग्राणि १७३, जम्बूद्वीपानु- त्पीडनेऽर्हदादिदेवलोकानुभावादि- कारणम्। (लवणघनप्रतरगणितानि) १७४। ३२६	श्रीजीवा० बृहद्- विषयानुक्रमः ॥ २९ ॥

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमः [उपांगसूत्र-३ “जीवाजीवाभिगम”]			
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए ‘संवृत्तिक आगम सुत्ताणि’	श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ३० ॥	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)		श्रीजीवा० बृहद्- विषयानुक्रमः

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [उपांगसूत्र-३ “जीवाजीवाभिगम”]				
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए ‘संवृत्तिक आगम सुत्ताणि’	श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ३१ ॥	लवणपुष्करक्षीरघृतक्षोदस्वयम्भू- रमणोदजलरसाः, लवणवरुण- क्षीरघृतोदाः प्रत्येकरसाः, काल- पुष्करस्वयम्भूगमणोदा उदकरसाः, शेषाः क्षोदरसाः १८८। ३७२ १८९. लवणकालोदस्वयम्भूरमणा बहु- मत्स्याः, सप्तनवार्द्धत्रयोदशलक्ष- मत्स्ययोनिकाः, पञ्चसप्त- दशयोजनमत्स्याश्च । ३७२ १९१. शुभनामादिमन्तः सार्द्धद्वयोद्धार- सागरसमयमाना द्वीपसमुद्राः १९०, पृथ्व्यादिपरिणामाः, सर्वजीवोत्पादोऽनन्तशः १९१। ३७३ ॥ इति द्वीपसमुद्राः ॥	१९२ इन्द्रियविषयपरिणामाः । ३७४ १९३ पुद्गलः पूर्वपश्चात्तर्शः प्रमन्दगतिः, देवस्य ग्रन्थिदीर्घह्रस्वानां करणम् । ३७५ १९५ ८५* यथाऽऽतपश्चन्द्रसूर्ययोरुपर्यादौ तारकाः १९४, चन्द्रसूर्य- परिवारे ग्रहनक्षत्रतारकाः १९५, ८५* ३७६ १९७ मेरुलोकान्तज्योतिश्चक्राबाधा, अधस्तनोपरितनतारकचन्द्रसूर्य- रत्नप्रभाबाधा १९६, बाह्याभ्यन्तर- नक्षत्राऽबाधा १९७। ३७८ १९८ चन्द्रादिविमानसंस्थानवाहल्यादि । ३८०	१९९ चन्द्रविमानवाहकदेववर्णनम् । ३८२ २०१ चन्द्रादिषु शीघ्रमन्दगत्योः २००, अल्पमहर्घ्योश्च स्वरूपम् २०१। ३८३ २०५ तारकयोरन्तरं २०२, चन्द्र- स्याग्रमहिष्यः २०३, जिन- सक्थिसद्भावाच्च सुधर्मसभायां मैथुनं २०४, सूर्यस्याग्रमहिष्यः २०५। ३८५ २०६ चन्द्रादीनां स्थित्याद्यतिदेशः । ” २०७ चन्द्रादीनामल्पबहुत्वम् । ” ॥ इति ज्योतिष्कोद्देशः ॥ २०८ वैमानिकविमानदेवस्थानाद्यति- देशः । ३८८	श्रीजीवा० बृहद्- विषयानुक्रमः ॥ ३१ ॥

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [उपांगसूत्र-३ "जीवाजीवाभिगम"]					
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ३२ ॥	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) <table border="0" style="width: 100%;"> <tr> <td style="width: 50%; vertical-align: top;"> २०९ शकेशानादीनां समिताचण्डाजाताः पर्षदः, तद्देवदेवीप्रमाणस्थितिः ॥ ३९० ॥ प्रथमो वैमानिकोद्देशः ॥ २१० विमानप्रतिष्ठानम् । ३९४ २१६ सौधर्मादिविमानपृथिवीबाहुर्यादि २११, विमानानामुच्चत्वं २१२, तेषां संस्थानं २१३, आयामादिवर्ण- गन्धरसस्पर्शाः, महत्त्वं, किमयत्वं जीवाद्युत्पादादि, शाश्वताशाश्वतत्वे, उत्पादः, समयसंख्या, असंख्यो- त्सर्पिणीमानता, ग्रैवेयकानुत्तरेषु पर्यासंख्याशमानता, भवधारणी- योत्तरवैक्रियमानं च २१४, देवानां संहननसंस्थाने २१५, वर्णगन्ध- </td> <td style="width: 50%; vertical-align: top;"> रसस्पर्शपुद्गलपरिणामलेश्यादृष्टि- ज्ञानादि । २१६ । ४०२ २१७, ८८* देवानामवधिमानम् । ,, २१८ समुद्घाताः, क्षुत्पिपासाऽभावः, वैक्रियं, सातर्द्धी । ४०४ २२१ देवदेवीनां विभूषा २१९, कामभोगातिदेशः २२०, स्थित्यतिदेशः २२१ । ४०५ २२२ कल्पेषु पृथिव्यादितया सर्वजीवो- त्पातोऽनन्तशः । ४०६ २२४ नारकादिस्थित्यन्तरे २२३, तेषामल्पबहुत्वं च २२४ । ४०७ ॥ द्वितीयो वैमानिकोद्देशः ॥ ॥ इति तृतीया प्रतिपत्तिः ॥ </td> </tr> </table>		२०९ शकेशानादीनां समिताचण्डाजाताः पर्षदः, तद्देवदेवीप्रमाणस्थितिः ॥ ३९० ॥ प्रथमो वैमानिकोद्देशः ॥ २१० विमानप्रतिष्ठानम् । ३९४ २१६ सौधर्मादिविमानपृथिवीबाहुर्यादि २११, विमानानामुच्चत्वं २१२, तेषां संस्थानं २१३, आयामादिवर्ण- गन्धरसस्पर्शाः, महत्त्वं, किमयत्वं जीवाद्युत्पादादि, शाश्वताशाश्वतत्वे, उत्पादः, समयसंख्या, असंख्यो- त्सर्पिणीमानता, ग्रैवेयकानुत्तरेषु पर्यासंख्याशमानता, भवधारणी- योत्तरवैक्रियमानं च २१४, देवानां संहननसंस्थाने २१५, वर्णगन्ध-	रसस्पर्शपुद्गलपरिणामलेश्यादृष्टि- ज्ञानादि । २१६ । ४०२ २१७, ८८* देवानामवधिमानम् । ,, २१८ समुद्घाताः, क्षुत्पिपासाऽभावः, वैक्रियं, सातर्द्धी । ४०४ २२१ देवदेवीनां विभूषा २१९, कामभोगातिदेशः २२०, स्थित्यतिदेशः २२१ । ४०५ २२२ कल्पेषु पृथिव्यादितया सर्वजीवो- त्पातोऽनन्तशः । ४०६ २२४ नारकादिस्थित्यन्तरे २२३, तेषामल्पबहुत्वं च २२४ । ४०७ ॥ द्वितीयो वैमानिकोद्देशः ॥ ॥ इति तृतीया प्रतिपत्तिः ॥	श्रीजीवा० बृहद्- विषयानुक्रमः ॥ ३२ ॥
२०९ शकेशानादीनां समिताचण्डाजाताः पर्षदः, तद्देवदेवीप्रमाणस्थितिः ॥ ३९० ॥ प्रथमो वैमानिकोद्देशः ॥ २१० विमानप्रतिष्ठानम् । ३९४ २१६ सौधर्मादिविमानपृथिवीबाहुर्यादि २११, विमानानामुच्चत्वं २१२, तेषां संस्थानं २१३, आयामादिवर्ण- गन्धरसस्पर्शाः, महत्त्वं, किमयत्वं जीवाद्युत्पादादि, शाश्वताशाश्वतत्वे, उत्पादः, समयसंख्या, असंख्यो- त्सर्पिणीमानता, ग्रैवेयकानुत्तरेषु पर्यासंख्याशमानता, भवधारणी- योत्तरवैक्रियमानं च २१४, देवानां संहननसंस्थाने २१५, वर्णगन्ध-	रसस्पर्शपुद्गलपरिणामलेश्यादृष्टि- ज्ञानादि । २१६ । ४०२ २१७, ८८* देवानामवधिमानम् । ,, २१८ समुद्घाताः, क्षुत्पिपासाऽभावः, वैक्रियं, सातर्द्धी । ४०४ २२१ देवदेवीनां विभूषा २१९, कामभोगातिदेशः २२०, स्थित्यतिदेशः २२१ । ४०५ २२२ कल्पेषु पृथिव्यादितया सर्वजीवो- त्पातोऽनन्तशः । ४०६ २२४ नारकादिस्थित्यन्तरे २२३, तेषामल्पबहुत्वं च २२४ । ४०७ ॥ द्वितीयो वैमानिकोद्देशः ॥ ॥ इति तृतीया प्रतिपत्तिः ॥					

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [उपांगसूत्र-३ “जीवाजीवाभिगम”]								
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए ‘संवृत्तिक आगम सुत्ताणि’	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) <table border="0" style="width: 100%; border-collapse: collapse;"> <tr> <td style="width: 25%; vertical-align: top;"> श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ३३ ॥ </td><td style="width: 25%; vertical-align: top;"> २३४ सूक्ष्मपर्याप्तापयानामरूपबहुत्वम् । ४१६ २३५ बादरपर्याप्तापयानां स्थितिः । ४१७ २३६, ९२* बादरबादरपृथिव्यादीनां कायस्थितिः । ४१८ २३७ बादरबादरवनस्पतिनिगोदबादर- निगोदानामन्तरम् । ” २३८ सप्रभेदसूक्ष्मबादराणामरूपबहुत्वम् । ४२३ २३९ निगोदभेदाः । ४२४ २४० सप्रभेदानां निगोदतज्जीवानां द्रव्यप्रदेशाभ्यामरूपबहुत्वम् । ४२७ ॥ इति पञ्चमी प्रतिपत्तिः ॥ २४१ नारकतिर्यङ्मूर्तदेवतस्त्रीणां </td><td style="width: 25%; vertical-align: top;"> स्थित्यन्तरारूपबहुत्वानि । ४२८ ॥ इति षष्ठी प्रतिपत्तिः ॥ २४२ प्रथमाप्रथमसमयनारकादीनां स्थित्यन्तरारूपबहुत्वानि । ४३१ ॥ इति सप्तमी प्रतिपत्तिः ॥ २४३ पृथ्व्यादिद्वीन्द्रियादीनां स्थित्यादि । ४३३ ॥ इत्यष्टमी प्रतिपत्तिः ॥ २४४ प्रथमाप्रथमसमयैकेन्द्रियादिस्थि- त्यन्तरारूपबहुत्वानि । ४३५ ॥ इति नवमी प्रतिपत्तिः ॥ ॥ इति संसारसमापन्नाः ॥ २४५ सिद्धासिद्धयोः स्थित्यन्तरारूपबहु- त्वानि । ४३६ </td><td style="width: 25%; vertical-align: top;"> २४६ इन्द्रियकायवेदकषायलेइयाभेदैः स्थित्यादि । ४३९ २४७ ज्ञानोपयोगैः स्थित्यादि । ४४० २४८ छद्मस्थभवस्थसयोग्याहारकेतराणां स्थित्यादि । (क्षुल्लकभवादि- निरूपणम्) ४४३ २४९ भाषकाभाषकशरीर्यशरीरिस्थित्यादि । ४४४ २५० चरमाचरमस्थित्यादि ” २५१ सम्यग्दृष्ट्यादिस्थित्यादि । ४४५ २५२ संसारकायपरीक्षादिस्थित्यादि । ४४७ २५३ पर्याप्तादिस्थित्यादि । ” २५४ सूक्ष्मादिस्थित्यादि । ४४८ २५५ सञ्ज्ञादिस्थित्यादि । ” </td><td style="width: 10%; vertical-align: top;"> श्रीजीवा० बृहद्- विषयानुक्रमः ॥ ३३ ॥ </td></tr> </table>				श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ३३ ॥	२३४ सूक्ष्मपर्याप्तापयानामरूपबहुत्वम् । ४१६ २३५ बादरपर्याप्तापयानां स्थितिः । ४१७ २३६, ९२* बादरबादरपृथिव्यादीनां कायस्थितिः । ४१८ २३७ बादरबादरवनस्पतिनिगोदबादर- निगोदानामन्तरम् । ” २३८ सप्रभेदसूक्ष्मबादराणामरूपबहुत्वम् । ४२३ २३९ निगोदभेदाः । ४२४ २४० सप्रभेदानां निगोदतज्जीवानां द्रव्यप्रदेशाभ्यामरूपबहुत्वम् । ४२७ ॥ इति पञ्चमी प्रतिपत्तिः ॥ २४१ नारकतिर्यङ्मूर्तदेवतस्त्रीणां	स्थित्यन्तरारूपबहुत्वानि । ४२८ ॥ इति षष्ठी प्रतिपत्तिः ॥ २४२ प्रथमाप्रथमसमयनारकादीनां स्थित्यन्तरारूपबहुत्वानि । ४३१ ॥ इति सप्तमी प्रतिपत्तिः ॥ २४३ पृथ्व्यादिद्वीन्द्रियादीनां स्थित्यादि । ४३३ ॥ इत्यष्टमी प्रतिपत्तिः ॥ २४४ प्रथमाप्रथमसमयैकेन्द्रियादिस्थि- त्यन्तरारूपबहुत्वानि । ४३५ ॥ इति नवमी प्रतिपत्तिः ॥ ॥ इति संसारसमापन्नाः ॥ २४५ सिद्धासिद्धयोः स्थित्यन्तरारूपबहु- त्वानि । ४३६	२४६ इन्द्रियकायवेदकषायलेइयाभेदैः स्थित्यादि । ४३९ २४७ ज्ञानोपयोगैः स्थित्यादि । ४४० २४८ छद्मस्थभवस्थसयोग्याहारकेतराणां स्थित्यादि । (क्षुल्लकभवादि- निरूपणम्) ४४३ २४९ भाषकाभाषकशरीर्यशरीरिस्थित्यादि । ४४४ २५० चरमाचरमस्थित्यादि ” २५१ सम्यग्दृष्ट्यादिस्थित्यादि । ४४५ २५२ संसारकायपरीक्षादिस्थित्यादि । ४४७ २५३ पर्याप्तादिस्थित्यादि । ” २५४ सूक्ष्मादिस्थित्यादि । ४४८ २५५ सञ्ज्ञादिस्थित्यादि । ”	श्रीजीवा० बृहद्- विषयानुक्रमः ॥ ३३ ॥
श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ३३ ॥	२३४ सूक्ष्मपर्याप्तापयानामरूपबहुत्वम् । ४१६ २३५ बादरपर्याप्तापयानां स्थितिः । ४१७ २३६, ९२* बादरबादरपृथिव्यादीनां कायस्थितिः । ४१८ २३७ बादरबादरवनस्पतिनिगोदबादर- निगोदानामन्तरम् । ” २३८ सप्रभेदसूक्ष्मबादराणामरूपबहुत्वम् । ४२३ २३९ निगोदभेदाः । ४२४ २४० सप्रभेदानां निगोदतज्जीवानां द्रव्यप्रदेशाभ्यामरूपबहुत्वम् । ४२७ ॥ इति पञ्चमी प्रतिपत्तिः ॥ २४१ नारकतिर्यङ्मूर्तदेवतस्त्रीणां	स्थित्यन्तरारूपबहुत्वानि । ४२८ ॥ इति षष्ठी प्रतिपत्तिः ॥ २४२ प्रथमाप्रथमसमयनारकादीनां स्थित्यन्तरारूपबहुत्वानि । ४३१ ॥ इति सप्तमी प्रतिपत्तिः ॥ २४३ पृथ्व्यादिद्वीन्द्रियादीनां स्थित्यादि । ४३३ ॥ इत्यष्टमी प्रतिपत्तिः ॥ २४४ प्रथमाप्रथमसमयैकेन्द्रियादिस्थि- त्यन्तरारूपबहुत्वानि । ४३५ ॥ इति नवमी प्रतिपत्तिः ॥ ॥ इति संसारसमापन्नाः ॥ २४५ सिद्धासिद्धयोः स्थित्यन्तरारूपबहु- त्वानि । ४३६	२४६ इन्द्रियकायवेदकषायलेइयाभेदैः स्थित्यादि । ४३९ २४७ ज्ञानोपयोगैः स्थित्यादि । ४४० २४८ छद्मस्थभवस्थसयोग्याहारकेतराणां स्थित्यादि । (क्षुल्लकभवादि- निरूपणम्) ४४३ २४९ भाषकाभाषकशरीर्यशरीरिस्थित्यादि । ४४४ २५० चरमाचरमस्थित्यादि ” २५१ सम्यग्दृष्ट्यादिस्थित्यादि । ४४५ २५२ संसारकायपरीक्षादिस्थित्यादि । ४४७ २५३ पर्याप्तादिस्थित्यादि । ” २५४ सूक्ष्मादिस्थित्यादि । ४४८ २५५ सञ्ज्ञादिस्थित्यादि । ”	श्रीजीवा० बृहद्- विषयानुक्रमः ॥ ३३ ॥					

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [उपांगसूत्र-३ “जीवाजीवाभिगम”]																																	
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ३४ ॥	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)																																
	<table><tr><td>२५७ भव्यादि २५६ त्रसादिस्थित्यादि ।</td><td>४४२</td><td>२६८ मत्यादिज्ञान्यज्ञानिस्थित्यादि । ४६०</td></tr><tr><td>२५८ मनोयोग्यादिस्थित्यादि ।</td><td>(सम्प्रदायप्रामाण्यम्) ४५०</td><td>२६९ नारकादिस्थित्यादि । ४६१</td></tr><tr><td>२५९ कृयादिस्थित्यादि ।</td><td>४५१</td><td>२७० एकेन्द्रियादिस्थित्यादि । ४६२</td></tr><tr><td>२६० चक्षुर्दर्शन्यादिस्थित्यादि ।</td><td>४५२</td><td>२७१ प्रथमसमयनारकादिस्थित्यादि । ४६४</td></tr><tr><td>२६१ संयतादिस्थित्यादि ।</td><td>४५३</td><td>२७२ पृथ्व्यादिस्थित्यादि । ४६५</td></tr><tr><td>२६२, ९३* क्रोधादिस्थित्यादि ।</td><td>४५४</td><td>२७३ प्रथमसमयनारकादिस्थित्यादि । ४६७</td></tr><tr><td>२६३ नारकादिस्थित्यादि ।</td><td>”</td><td>॥ प्रशस्तिः ॥</td></tr><tr><td>२६४ मतिज्ञान्याद्येकेन्द्रियादि- स्थित्यादि ।</td><td>४५६</td><td>॥ इति जीवाजीवाभिगमसूत्रविषयानुक्रमः॥</td></tr><tr><td>२६५ औदारिकादिस्थित्यादि ।</td><td>४५७</td><td></td></tr><tr><td>२६६ पृथ्वीकायिकादिस्थित्यादि ।</td><td>”</td><td></td></tr><tr><td>२६७ कृष्णलेइयादिस्थित्यादि ।</td><td>४५९</td><td></td></tr></table>	२५७ भव्यादि २५६ त्रसादिस्थित्यादि ।	४४२	२६८ मत्यादिज्ञान्यज्ञानिस्थित्यादि । ४६०	२५८ मनोयोग्यादिस्थित्यादि ।	(सम्प्रदायप्रामाण्यम्) ४५०	२६९ नारकादिस्थित्यादि । ४६१	२५९ कृयादिस्थित्यादि ।	४५१	२७० एकेन्द्रियादिस्थित्यादि । ४६२	२६० चक्षुर्दर्शन्यादिस्थित्यादि ।	४५२	२७१ प्रथमसमयनारकादिस्थित्यादि । ४६४	२६१ संयतादिस्थित्यादि ।	४५३	२७२ पृथ्व्यादिस्थित्यादि । ४६५	२६२, ९३* क्रोधादिस्थित्यादि ।	४५४	२७३ प्रथमसमयनारकादिस्थित्यादि । ४६७	२६३ नारकादिस्थित्यादि ।	”	॥ प्रशस्तिः ॥	२६४ मतिज्ञान्याद्येकेन्द्रियादि- स्थित्यादि ।	४५६	॥ इति जीवाजीवाभिगमसूत्रविषयानुक्रमः॥	२६५ औदारिकादिस्थित्यादि ।	४५७		२६६ पृथ्वीकायिकादिस्थित्यादि ।	”		२६७ कृष्णलेइयादिस्थित्यादि ।	४५९	
२५७ भव्यादि २५६ त्रसादिस्थित्यादि ।	४४२	२६८ मत्यादिज्ञान्यज्ञानिस्थित्यादि । ४६०																																
२५८ मनोयोग्यादिस्थित्यादि ।	(सम्प्रदायप्रामाण्यम्) ४५०	२६९ नारकादिस्थित्यादि । ४६१																																
२५९ कृयादिस्थित्यादि ।	४५१	२७० एकेन्द्रियादिस्थित्यादि । ४६२																																
२६० चक्षुर्दर्शन्यादिस्थित्यादि ।	४५२	२७१ प्रथमसमयनारकादिस्थित्यादि । ४६४																																
२६१ संयतादिस्थित्यादि ।	४५३	२७२ पृथ्व्यादिस्थित्यादि । ४६५																																
२६२, ९३* क्रोधादिस्थित्यादि ।	४५४	२७३ प्रथमसमयनारकादिस्थित्यादि । ४६७																																
२६३ नारकादिस्थित्यादि ।	”	॥ प्रशस्तिः ॥																																
२६४ मतिज्ञान्याद्येकेन्द्रियादि- स्थित्यादि ।	४५६	॥ इति जीवाजीवाभिगमसूत्रविषयानुक्रमः॥																																
२६५ औदारिकादिस्थित्यादि ।	४५७																																	
२६६ पृथ्वीकायिकादिस्थित्यादि ।	”																																	
२६७ कृष्णलेइयादिस्थित्यादि ।	४५९																																	

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [उपांगसूत्र-४ “प्रज्ञापना”]	
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए ‘संवृत्तिक आगम सुत्ताणि’	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ३४ ॥ [आगम-१५] उपांग-४ “प्रज्ञापना” श्रीप्रज्ञापनायाः विषयसूचि. १* श्रीवीरजिननतिरूपं मंगलम् २* आसन्नोपकारितादर्शनम् ३ ४* आर्यश्यामनमनं (प्र.) ५* भगवद्वचोऽनुसारिता ६-९* षट्त्रिंशत्पदानामानि १ प्रज्ञापनाभेदौ २ अजीवप्रज्ञापनाभेदौ ३ अरूप्यजीवप्रज्ञापनाभेदाः ४ रूप्यजीवप्रज्ञापनाभेदाः ५ जीवप्रज्ञापनाभेदौ ६ असंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापनाभेदौ ७ अनन्तरसिद्धप्रज्ञापनाभेदाः (स्त्रीशुक्तिसिद्धिः) (१५) (प्रत्येक बुद्धस्वयंबुद्धभेदाः) ८ परम्परसिद्धप्रज्ञापनाभेदाः ९ संसारसमापन्नजीवप्रज्ञापनाभेदाः (५) १० एकेन्द्रियप्रज्ञापनाभेदाः (५) ११ पृथ्वीकायप्रज्ञापनाभेदाः जीवाजीव विषयानुक्रमः ॥ ३४ ॥	

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ				
	[उपांगसूत्र-४ “प्रज्ञापना”]				
	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)				
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए ‘संवृत्तिक आगम सुत्ताणि’	श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ३५ ॥	१२ सूक्ष्मपृथ्वीकायभेदौ । २५ १३ बादरपृथिवीकायभेदौ । ” १४ श्लक्ष्णपृथ्वीकायभेदाः । (७) २६ १५, १०-१३* खरपृथ्वीकायभेदाः (अनन्ताः) । २७ १६ अप्कायभेदौ । २८ १७ तेजस्कायभेदौ । २९ १८ वायुकायभेदौ । ” १९ वनस्पतिकायभेदौ । ” २० सूक्ष्मवनस्पतिकायभेदौ । ” २१ बादरवनस्पतिकायभेदौ । ३० २२, १४* प्रत्येकबादरवनस्पतिकाय- भेदाः (१२) । ” २३, १५-१६* बादरप्रत्येकवनस्पति-	कायभेदाः । ३१ २४, ४७-८३* साधारणवनस्पतिकाय- वृक्षादीनां भेदाः (अनन्ताः) । ३४ २५, ८४-९६* अनन्त-प्रत्येकवनस्पति- कायलक्षणम् । (मूलाद्यपत्रवादः) । ३६ २६, ९७-११०* साधारणवनस्पति- लक्षणम् । ३९ २७ द्वीन्द्रियप्रज्ञापनाभेदाः । ४१ २८ त्रीन्द्रियप्रज्ञापनाभेदाः । ४२ २९, १११* चतुरिन्द्रियप्रज्ञापनाभेदाः ।, ४३ ३० पंचेन्द्रियप्रज्ञापनाभेदाः (४) । ” ३१ नैरयिकप्रज्ञापनाभेदाः (७) । ४३ ३२ तिर्यक्पंचेन्द्रियप्रज्ञापनाभेदाः (३) ।, ४३ ३३ जलचरपंचेन्द्रियतिर्यग्योनिक-	भेदाः (५) । ४४ ३४ स्थलचरपंचेन्द्रियतिर्यग्योनिक- भेदाः (२) । ४५ ३५ परिसर्पपञ्चेन्द्रियतिर्यग्भेदौ । ४६ ३६, ११२* खचरपंचेन्द्रियतिर्यक्- प्रभेदाः (४) । ४९ ३७, ११३-१३३* मनुष्यप्रज्ञापनाभेदौ (अन्तरद्वीपाः २०) (द्वाराणि २०) । ५० ३८ देवप्रज्ञापनाभेदाः (४) । ६९ इति प्रथमं प्रज्ञापनाख्यं पदम् । ३९ पृथ्व्यप्तेजःस्थानानि । ७२ ४० वायुवनस्पतिस्थानम् । ७७ ४१ विकलेन्द्रियस्थानम् । ७८ ४२ सामान्यपञ्चेन्द्रियनारकस्थानम् । ७९	प्रज्ञा० विषयसूचिः ॥ ३५ ॥

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमः [उपांगसूत्र-४ “प्रज्ञापना”]							
	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)							
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए ‘संवृत्तिक आगम सुत्ताणि’	श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ३६ ॥	<table border="0" style="width: 100%; border-collapse: collapse;"> <tr> <td style="width: 33%; vertical-align: top;"> ४३, १३४-१३७* रत्नप्रभादिनारक- स्थानम् । ८२ ४४ तिरश्चां पञ्चेन्द्रियाणां स्थानम् । ८४ ४५, १३८* मनुष्याणां स्थानम् । ,, ४६, १३९-१४९* भवनपतीनां स्थानं असुरादीनां च । ९२ ४७ व्यन्तरस्थानम् । ९५ ४८, १५०-१५१* पिशाचस्थानम् । ९७ ४९, १५२-१५४* वानमन्तरस्थानम् । ,, ५० ज्योतिष्कस्थानम् । ९९ ५१ वैमानिकस्थानम् । १०० ५२ सौधर्मस्थानम् । १०१ ५३, १५५-१५८* ईशानादिस्थानम् । १०५ ५४, १५९-१७२* सिद्धस्थानादि । १०६ </td><td style="width: 33%; vertical-align: top;"> इति द्वितीयं स्थानपदम् । १८०-१८१* दिगादिभेदाः (२७) । ११३ ५५ दिग्द्वारं सामान्येन । ११४ ५६ पृथिव्याद्यल्पबहुत्वम् । ११६ ५७ नारकादीनां पञ्चानामष्टानां(सवेदानां) चाल्पबहुत्वम् । ११९ ५८ एकेन्द्रियाद्यल्पबहुत्वम् । १२० ५९ षट्कायाल्पबहुत्वम् । १२२ ६० सूक्ष्मबादराल्पबहुत्वम् । १२४ ६१ बादराल्पबहुत्वम् । १२७ ६२ सूक्ष्मबादराणामल्पबहुत्वम् । १३१ ६३ योग्याल्पबहुत्वम् । १३४ ६४ वेदैरल्पबहुत्वम् । ,, ६५ कषायैरल्पबहुत्वम् । १३५ </td><td style="width: 33%; vertical-align: top;"> ६६ लेश्याभिरल्पबहुत्वम् । ,, ६७ दृष्टिभिरल्पबहुत्वम् । १३६ ६८ ज्ञानाज्ञानाल्पबहुत्वम् । १३७ ६९ दर्शनाल्पबहुत्वम् । ,, ७० संयताल्पबहुत्वम् । ,, ७१ उपयोगाल्पबहुत्वम् । ,, ७२ आहारकेतराल्पबहुत्वम् । ,, ७३ भाषकेतराल्पबहुत्वम् । ,, ७४ परीक्षितराल्पबहुत्वम् । ,, ७५ पर्याप्तेतराल्पबहुत्वम् । १३९ ७६ सूक्ष्मेतराल्पबहुत्वम् । ,, ७७ संज्ञ्यसंज्ञ्यल्पबहुत्वम् । ,, ७८ भवसिद्धिकेतराल्पबहुत्वम् । ,, ७९ अस्तिकायाल्पबहुत्वम् । १४० </td></tr> </table>			४३, १३४-१३७* रत्नप्रभादिनारक- स्थानम् । ८२ ४४ तिरश्चां पञ्चेन्द्रियाणां स्थानम् । ८४ ४५, १३८* मनुष्याणां स्थानम् । ,, ४६, १३९-१४९* भवनपतीनां स्थानं असुरादीनां च । ९२ ४७ व्यन्तरस्थानम् । ९५ ४८, १५०-१५१* पिशाचस्थानम् । ९७ ४९, १५२-१५४* वानमन्तरस्थानम् । ,, ५० ज्योतिष्कस्थानम् । ९९ ५१ वैमानिकस्थानम् । १०० ५२ सौधर्मस्थानम् । १०१ ५३, १५५-१५८* ईशानादिस्थानम् । १०५ ५४, १५९-१७२* सिद्धस्थानादि । १०६	इति द्वितीयं स्थानपदम् । १८०-१८१* दिगादिभेदाः (२७) । ११३ ५५ दिग्द्वारं सामान्येन । ११४ ५६ पृथिव्याद्यल्पबहुत्वम् । ११६ ५७ नारकादीनां पञ्चानामष्टानां(सवेदानां) चाल्पबहुत्वम् । ११९ ५८ एकेन्द्रियाद्यल्पबहुत्वम् । १२० ५९ षट्कायाल्पबहुत्वम् । १२२ ६० सूक्ष्मबादराल्पबहुत्वम् । १२४ ६१ बादराल्पबहुत्वम् । १२७ ६२ सूक्ष्मबादराणामल्पबहुत्वम् । १३१ ६३ योग्याल्पबहुत्वम् । १३४ ६४ वेदैरल्पबहुत्वम् । ,, ६५ कषायैरल्पबहुत्वम् । १३५	६६ लेश्याभिरल्पबहुत्वम् । ,, ६७ दृष्टिभिरल्पबहुत्वम् । १३६ ६८ ज्ञानाज्ञानाल्पबहुत्वम् । १३७ ६९ दर्शनाल्पबहुत्वम् । ,, ७० संयताल्पबहुत्वम् । ,, ७१ उपयोगाल्पबहुत्वम् । ,, ७२ आहारकेतराल्पबहुत्वम् । ,, ७३ भाषकेतराल्पबहुत्वम् । ,, ७४ परीक्षितराल्पबहुत्वम् । ,, ७५ पर्याप्तेतराल्पबहुत्वम् । १३९ ७६ सूक्ष्मेतराल्पबहुत्वम् । ,, ७७ संज्ञ्यसंज्ञ्यल्पबहुत्वम् । ,, ७८ भवसिद्धिकेतराल्पबहुत्वम् । ,, ७९ अस्तिकायाल्पबहुत्वम् । १४०	प्रज्ञा ० विषयसूचिः ॥ ३६ ॥
४३, १३४-१३७* रत्नप्रभादिनारक- स्थानम् । ८२ ४४ तिरश्चां पञ्चेन्द्रियाणां स्थानम् । ८४ ४५, १३८* मनुष्याणां स्थानम् । ,, ४६, १३९-१४९* भवनपतीनां स्थानं असुरादीनां च । ९२ ४७ व्यन्तरस्थानम् । ९५ ४८, १५०-१५१* पिशाचस्थानम् । ९७ ४९, १५२-१५४* वानमन्तरस्थानम् । ,, ५० ज्योतिष्कस्थानम् । ९९ ५१ वैमानिकस्थानम् । १०० ५२ सौधर्मस्थानम् । १०१ ५३, १५५-१५८* ईशानादिस्थानम् । १०५ ५४, १५९-१७२* सिद्धस्थानादि । १०६	इति द्वितीयं स्थानपदम् । १८०-१८१* दिगादिभेदाः (२७) । ११३ ५५ दिग्द्वारं सामान्येन । ११४ ५६ पृथिव्याद्यल्पबहुत्वम् । ११६ ५७ नारकादीनां पञ्चानामष्टानां(सवेदानां) चाल्पबहुत्वम् । ११९ ५८ एकेन्द्रियाद्यल्पबहुत्वम् । १२० ५९ षट्कायाल्पबहुत्वम् । १२२ ६० सूक्ष्मबादराल्पबहुत्वम् । १२४ ६१ बादराल्पबहुत्वम् । १२७ ६२ सूक्ष्मबादराणामल्पबहुत्वम् । १३१ ६३ योग्याल्पबहुत्वम् । १३४ ६४ वेदैरल्पबहुत्वम् । ,, ६५ कषायैरल्पबहुत्वम् । १३५	६६ लेश्याभिरल्पबहुत्वम् । ,, ६७ दृष्टिभिरल्पबहुत्वम् । १३६ ६८ ज्ञानाज्ञानाल्पबहुत्वम् । १३७ ६९ दर्शनाल्पबहुत्वम् । ,, ७० संयताल्पबहुत्वम् । ,, ७१ उपयोगाल्पबहुत्वम् । ,, ७२ आहारकेतराल्पबहुत्वम् । ,, ७३ भाषकेतराल्पबहुत्वम् । ,, ७४ परीक्षितराल्पबहुत्वम् । ,, ७५ पर्याप्तेतराल्पबहुत्वम् । १३९ ७६ सूक्ष्मेतराल्पबहुत्वम् । ,, ७७ संज्ञ्यसंज्ञ्यल्पबहुत्वम् । ,, ७८ भवसिद्धिकेतराल्पबहुत्वम् । ,, ७९ अस्तिकायाल्पबहुत्वम् । १४०						

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ					
	[उपांगसूत्र-४ “प्रज्ञापना”]					
	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)					
प्रत सूत्रांक यहां देखिए दीप क्रमांक के लिए देखिए ‘संवृत्तिक आगम सुत्ताणि’	श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ३७ ॥	८० चरमेतराल्पबहुत्वम् । १४३ ८१ जीवाल्लपबहुत्वम् । ” ८२ क्षेत्रानुपातेन जीवाल्लपबहुत्वम् । १४४ ८३ गत्यपेक्षयाऽल्लपबहुत्वम् । १४५ ८४ विशेषेण देवानामल्लपबहुत्वम् । १४६ ८५ एकेन्द्रियाल्लपबहुत्वम् । १४७ ८६ क्षेत्रानुपातेन विकलेन्द्रियाल्लप- बहुत्वम् । १४८ ८७ क्षेत्रानुपातेन पञ्चेन्द्रियाल्लपबहुत्वम् । १४९ ८८ क्षेत्रानुपातेन पृथ्व्यादीनामल्लप- बहुत्वम् । १५० ८९ क्षेत्रानुपातेन त्रसकायिकाल्लपबहुत्वम् । १५१ ९० आयुर्वन्धकाद्यल्लपबहुत्वम् । १५२	९१ क्षेत्रदिग्भ्यां पुद्गलद्रव्याल्लपबहुत्वम् । १५३ ९२ द्रव्यक्षेत्रकालभावाल्लपबहुत्वम् । १५४ ९३ महादण्डकः (९९ भेदानां) । १५५ ॥ इति तृतीयमल्लपबहुत्वपदम् ॥ ९४ सामान्यपर्याप्तपार्याप्तरत्नप्रभादिना- रकाणांस्थितिः । १५६ ९५ सामान्यविशेषतो देवानां स्थितिः । १५७ ९६ पृथ्व्यादीनां स्थितिः । ” ९७ द्वीन्द्रियादीनां स्थितिः । ” ९८ जलस्थलखचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्- योनिकानां सामान्यविशेषतः स्थितिः । १५८ ९९ मनुष्याणां स्थितिः । १५९ १०० व्यन्तराणां स्थितिः । ”	१०१ ज्योतिष्काणां स्थितिः । १६० १०२ वैमानिकानां स्थितिः । १६१ ॥ इति चतुर्थ स्थित्याख्यपदम् ॥ १०३ जीवपर्यायाः (पर्यायभेदौ) । १६२ १०४ नारकपर्यायाः द्रव्यप्रदेशस्थिति- भेदौ च । १६३ १०५ असुरकुमारादीनां पर्यायाः । १६४ १०६ पृथिवीकायिकादीनां पर्यायाः । १६५ १०७ द्वीन्द्रियादीनां पर्यायाः । ” १०८ पञ्चेन्द्रियतिरश्चां पर्यायाः । ” १०९ मनुष्याणां पर्यायाः । ” ११० वानव्यन्तराणां पर्यायाः । ” १११ जघन्यावगाहनादीनां नैरयि- काणां पर्यायाः । १६६	प्रज्ञा० विषयसूचिः ॥ ३७ ॥	

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [उपांगसूत्र-४ “प्रज्ञापना”]								
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए ‘संवृत्तिक आगम सुत्ताणि’	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) <table border="0" style="width: 100%; border-collapse: collapse;"> <tr> <td style="width: 15%; vertical-align: top;"> श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ३८ ॥ </td><td style="width: 45%; vertical-align: top;"> ११२ ज० असुरकुमारादीनां पर्यायाः । १८९ ११३ ज० पृथ्व्यादीनां पर्यायाः । ,, ११४ ज० द्वीन्द्रियादीनां पर्यायाः । १९० ११५ ज० पञ्चेन्द्रियतिरश्चां पर्यायाः । ,, ११६ ज० मनुष्याणां पर्यायाः । १९२ ११७ असुरकुमारादिपर्यायाः । १९५ ११८ अजीवपर्यायभेदौ । १९६ ११९ रूप्यजीवपर्यायाः (४) । ,, १२० परमाण्वादीनां द्रव्यप्रदेशावगाह- स्थितिगुणैः पर्यायाः । २०० १२१ जघन्यप्रदेशादीनां पर्यायाः । २०१ ॥ इति विशेषापरपर्यायं पर्यायाख्यं पञ्चमं पदम् ॥ </td><td style="width: 45%; vertical-align: top;"> १२२, १८२* उपपातविरहो गतिषु । २०५ १२३ रत्नप्रभादिभेदैरुपपातविरहः । २०६ १२४ रत्नप्रभादिभेदैरुद्वर्त्तनाविरहः । २०७ १२५ सान्तरनिरन्तरोपपातः । २०७ १२६ सान्तरनिरन्तरोद्वर्त्तना । ,, १२७ उपपातसंख्या । २०८ १२९, १८३-१८४ नारकाणामागतिः । ,, १३० असुरकुमाराणामुपपातः । २११ १३१ पृथिवीकायिकानामुपपातः । २१२ १३२ विकलेन्द्रियाणामुपपातः । २१३ १३३ पंचेन्द्रियतिरश्चांमुपपातः । ,, १३४ मनुष्याणामुपपातः । ,, १३५ वानव्यतराणामुपपातः । २१४ १३६ ज्योतिष्काणामुपपातः । ,, </td><td style="width: 15%; vertical-align: top;"> १३७ वैमानिकानामुपपातः । २१४ १३८ नारकाणामुद्वर्त्तना । २१६ १३९ असुरकुमाराणामुद्वर्त्तना । ,, १४० पृथ्वीकायिकादीनामुद्वर्त्तना । ,, १४१ पंचेन्द्रियतिरश्चांमुद्वर्त्तना । ,, १४२ मनुष्याणामुद्वर्त्तना । ,, १४३ वानव्यन्तरादीनामुद्वर्त्तना । २१६ १४४ परमवायुर्बन्धः । २१६ १४५ जातिनामनिधत्तवायुर्बन्धभेदाः (६) । २१७ ॥ इति व्युत्क्रान्त्याख्यं षष्ठं पदम् ॥ १४६ उच्छ्वसतद्विरहैः । २२० ॥ इति सप्तममुच्छ्वसाख्यं पदम् ॥ १४७ दश संज्ञाः । २२१ </td><td style="width: 10%; vertical-align: top;"> प्रज्ञा० विषयसूचिः ॥ ३८ ॥ </td></tr> </table>				श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ३८ ॥	११२ ज० असुरकुमारादीनां पर्यायाः । १८९ ११३ ज० पृथ्व्यादीनां पर्यायाः । ,, ११४ ज० द्वीन्द्रियादीनां पर्यायाः । १९० ११५ ज० पञ्चेन्द्रियतिरश्चां पर्यायाः । ,, ११६ ज० मनुष्याणां पर्यायाः । १९२ ११७ असुरकुमारादिपर्यायाः । १९५ ११८ अजीवपर्यायभेदौ । १९६ ११९ रूप्यजीवपर्यायाः (४) । ,, १२० परमाण्वादीनां द्रव्यप्रदेशावगाह- स्थितिगुणैः पर्यायाः । २०० १२१ जघन्यप्रदेशादीनां पर्यायाः । २०१ ॥ इति विशेषापरपर्यायं पर्यायाख्यं पञ्चमं पदम् ॥	१२२, १८२* उपपातविरहो गतिषु । २०५ १२३ रत्नप्रभादिभेदैरुपपातविरहः । २०६ १२४ रत्नप्रभादिभेदैरुद्वर्त्तनाविरहः । २०७ १२५ सान्तरनिरन्तरोपपातः । २०७ १२६ सान्तरनिरन्तरोद्वर्त्तना । ,, १२७ उपपातसंख्या । २०८ १२९, १८३-१८४ नारकाणामागतिः । ,, १३० असुरकुमाराणामुपपातः । २११ १३१ पृथिवीकायिकानामुपपातः । २१२ १३२ विकलेन्द्रियाणामुपपातः । २१३ १३३ पंचेन्द्रियतिरश्चांमुपपातः । ,, १३४ मनुष्याणामुपपातः । ,, १३५ वानव्यतराणामुपपातः । २१४ १३६ ज्योतिष्काणामुपपातः । ,,	१३७ वैमानिकानामुपपातः । २१४ १३८ नारकाणामुद्वर्त्तना । २१६ १३९ असुरकुमाराणामुद्वर्त्तना । ,, १४० पृथ्वीकायिकादीनामुद्वर्त्तना । ,, १४१ पंचेन्द्रियतिरश्चांमुद्वर्त्तना । ,, १४२ मनुष्याणामुद्वर्त्तना । ,, १४३ वानव्यन्तरादीनामुद्वर्त्तना । २१६ १४४ परमवायुर्बन्धः । २१६ १४५ जातिनामनिधत्तवायुर्बन्धभेदाः (६) । २१७ ॥ इति व्युत्क्रान्त्याख्यं षष्ठं पदम् ॥ १४६ उच्छ्वसतद्विरहैः । २२० ॥ इति सप्तममुच्छ्वसाख्यं पदम् ॥ १४७ दश संज्ञाः । २२१	प्रज्ञा० विषयसूचिः ॥ ३८ ॥
श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ३८ ॥	११२ ज० असुरकुमारादीनां पर्यायाः । १८९ ११३ ज० पृथ्व्यादीनां पर्यायाः । ,, ११४ ज० द्वीन्द्रियादीनां पर्यायाः । १९० ११५ ज० पञ्चेन्द्रियतिरश्चां पर्यायाः । ,, ११६ ज० मनुष्याणां पर्यायाः । १९२ ११७ असुरकुमारादिपर्यायाः । १९५ ११८ अजीवपर्यायभेदौ । १९६ ११९ रूप्यजीवपर्यायाः (४) । ,, १२० परमाण्वादीनां द्रव्यप्रदेशावगाह- स्थितिगुणैः पर्यायाः । २०० १२१ जघन्यप्रदेशादीनां पर्यायाः । २०१ ॥ इति विशेषापरपर्यायं पर्यायाख्यं पञ्चमं पदम् ॥	१२२, १८२* उपपातविरहो गतिषु । २०५ १२३ रत्नप्रभादिभेदैरुपपातविरहः । २०६ १२४ रत्नप्रभादिभेदैरुद्वर्त्तनाविरहः । २०७ १२५ सान्तरनिरन्तरोपपातः । २०७ १२६ सान्तरनिरन्तरोद्वर्त्तना । ,, १२७ उपपातसंख्या । २०८ १२९, १८३-१८४ नारकाणामागतिः । ,, १३० असुरकुमाराणामुपपातः । २११ १३१ पृथिवीकायिकानामुपपातः । २१२ १३२ विकलेन्द्रियाणामुपपातः । २१३ १३३ पंचेन्द्रियतिरश्चांमुपपातः । ,, १३४ मनुष्याणामुपपातः । ,, १३५ वानव्यतराणामुपपातः । २१४ १३६ ज्योतिष्काणामुपपातः । ,,	१३७ वैमानिकानामुपपातः । २१४ १३८ नारकाणामुद्वर्त्तना । २१६ १३९ असुरकुमाराणामुद्वर्त्तना । ,, १४० पृथ्वीकायिकादीनामुद्वर्त्तना । ,, १४१ पंचेन्द्रियतिरश्चांमुद्वर्त्तना । ,, १४२ मनुष्याणामुद्वर्त्तना । ,, १४३ वानव्यन्तरादीनामुद्वर्त्तना । २१६ १४४ परमवायुर्बन्धः । २१६ १४५ जातिनामनिधत्तवायुर्बन्धभेदाः (६) । २१७ ॥ इति व्युत्क्रान्त्याख्यं षष्ठं पदम् ॥ १४६ उच्छ्वसतद्विरहैः । २२० ॥ इति सप्तममुच्छ्वसाख्यं पदम् ॥ १४७ दश संज्ञाः । २२१	प्रज्ञा० विषयसूचिः ॥ ३८ ॥					

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [उपांगसूत्र-४ “प्रज्ञापना”]								
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए ‘संवृत्तिक आगम सुत्ताणि’	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) <table border="0" style="width: 100%; border-collapse: collapse;"> <tr> <td style="width: 15%; vertical-align: top;"> श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ३९ ॥ </td><td style="width: 45%; vertical-align: top;"> १४८ दण्डकभेदेनाहारसंज्ञादिमतामल्प- बहुता । २२३ ॥ इत्यष्टमं संज्ञाख्यं पदम् ॥ १४९ योनिभेदाः (३) । २२४ १५० नारकादीनां शीताद्या योनयः । १५१ नारकादीनां सचिचाद्या योनयः (३) । २२६ १५२ संवृताद्या योनयः २२७ १५३ मनुष्याणां कूर्मोन्नताद्या योनयः । २२८ ॥ इति योन्याख्यं नवमं पदम् ॥ १५४ पृथ्वीनां चरमाचरमते । ” १५५ रत्नप्रभादीनां चरमाचरमाद्यल्प- बहुत्वम् । २२९ १५६ अलोकस्य लोकालोकयोश्च चरमा- </td><td style="width: 45%; vertical-align: top;"> चरमादिभेदेनाल्पबहुत्वम् । २३० १५७ परमाणोश्चरमतादिविचारः । २३२ १५८, १८५-१९०* द्विप्रदेशादीनां चरमादित्वम् । २३८ १५९ संस्थानभेदाः (५) । २४२ १६०, १९१* जीवादीनां चरमाचरम- विभागः । २४४ ॥ इति दशमं चरमाख्यं पदम् ॥ १६१ अवधारिण्याः स्वरूपं सत्यारा- धिन्यादित्वं च । २४६ १६२ लिङ्गवाक्सत्यता । २४८ १६३ संज्ञिणां वागाहारादिराज- कुलादिवाचनज्ञानम् । २५२ १६४ एकवचनादिका भाषा । २५३ </td><td style="width: 15%; vertical-align: top;"> १६५, १९२-१९७* सामान्यतो भाषायाः कारणानि सप्रभेद- सत्यादिभेदाश्च । २५५ १६६ भाषकाभाषकौ । २५९ १६७ नारकादीनां भाषाजातानि । २६० १६८, १९८* भाषाद्रव्यग्रहणादि- विचारः । ” १६९ सान्तरनिरन्तरग्रहणनिसर्ग- भेदादि । २६२ १७० भाषाशब्दद्रव्यभेदाः (५) । २६५ १७१ नारकादिभाषा स्थितभाषा- द्रव्यग्रहणं च । २६६ १७२ सत्यादितया गृहीतनिसर्गयोर- भेदाः । ” </td><td style="width: 10%; vertical-align: top;"> प्रज्ञा० विषयसूचि ॥ ३९ ॥ </td></tr> </table>				श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ३९ ॥	१४८ दण्डकभेदेनाहारसंज्ञादिमतामल्प- बहुता । २२३ ॥ इत्यष्टमं संज्ञाख्यं पदम् ॥ १४९ योनिभेदाः (३) । २२४ १५० नारकादीनां शीताद्या योनयः । १५१ नारकादीनां सचिचाद्या योनयः (३) । २२६ १५२ संवृताद्या योनयः २२७ १५३ मनुष्याणां कूर्मोन्नताद्या योनयः । २२८ ॥ इति योन्याख्यं नवमं पदम् ॥ १५४ पृथ्वीनां चरमाचरमते । ” १५५ रत्नप्रभादीनां चरमाचरमाद्यल्प- बहुत्वम् । २२९ १५६ अलोकस्य लोकालोकयोश्च चरमा-	चरमादिभेदेनाल्पबहुत्वम् । २३० १५७ परमाणोश्चरमतादिविचारः । २३२ १५८, १८५-१९०* द्विप्रदेशादीनां चरमादित्वम् । २३८ १५९ संस्थानभेदाः (५) । २४२ १६०, १९१* जीवादीनां चरमाचरम- विभागः । २४४ ॥ इति दशमं चरमाख्यं पदम् ॥ १६१ अवधारिण्याः स्वरूपं सत्यारा- धिन्यादित्वं च । २४६ १६२ लिङ्गवाक्सत्यता । २४८ १६३ संज्ञिणां वागाहारादिराज- कुलादिवाचनज्ञानम् । २५२ १६४ एकवचनादिका भाषा । २५३	१६५, १९२-१९७* सामान्यतो भाषायाः कारणानि सप्रभेद- सत्यादिभेदाश्च । २५५ १६६ भाषकाभाषकौ । २५९ १६७ नारकादीनां भाषाजातानि । २६० १६८, १९८* भाषाद्रव्यग्रहणादि- विचारः । ” १६९ सान्तरनिरन्तरग्रहणनिसर्ग- भेदादि । २६२ १७० भाषाशब्दद्रव्यभेदाः (५) । २६५ १७१ नारकादिभाषा स्थितभाषा- द्रव्यग्रहणं च । २६६ १७२ सत्यादितया गृहीतनिसर्गयोर- भेदाः । ”	प्रज्ञा० विषयसूचि ॥ ३९ ॥
श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ३९ ॥	१४८ दण्डकभेदेनाहारसंज्ञादिमतामल्प- बहुता । २२३ ॥ इत्यष्टमं संज्ञाख्यं पदम् ॥ १४९ योनिभेदाः (३) । २२४ १५० नारकादीनां शीताद्या योनयः । १५१ नारकादीनां सचिचाद्या योनयः (३) । २२६ १५२ संवृताद्या योनयः २२७ १५३ मनुष्याणां कूर्मोन्नताद्या योनयः । २२८ ॥ इति योन्याख्यं नवमं पदम् ॥ १५४ पृथ्वीनां चरमाचरमते । ” १५५ रत्नप्रभादीनां चरमाचरमाद्यल्प- बहुत्वम् । २२९ १५६ अलोकस्य लोकालोकयोश्च चरमा-	चरमादिभेदेनाल्पबहुत्वम् । २३० १५७ परमाणोश्चरमतादिविचारः । २३२ १५८, १८५-१९०* द्विप्रदेशादीनां चरमादित्वम् । २३८ १५९ संस्थानभेदाः (५) । २४२ १६०, १९१* जीवादीनां चरमाचरम- विभागः । २४४ ॥ इति दशमं चरमाख्यं पदम् ॥ १६१ अवधारिण्याः स्वरूपं सत्यारा- धिन्यादित्वं च । २४६ १६२ लिङ्गवाक्सत्यता । २४८ १६३ संज्ञिणां वागाहारादिराज- कुलादिवाचनज्ञानम् । २५२ १६४ एकवचनादिका भाषा । २५३	१६५, १९२-१९७* सामान्यतो भाषायाः कारणानि सप्रभेद- सत्यादिभेदाश्च । २५५ १६६ भाषकाभाषकौ । २५९ १६७ नारकादीनां भाषाजातानि । २६० १६८, १९८* भाषाद्रव्यग्रहणादि- विचारः । ” १६९ सान्तरनिरन्तरग्रहणनिसर्ग- भेदादि । २६२ १७० भाषाशब्दद्रव्यभेदाः (५) । २६५ १७१ नारकादिभाषा स्थितभाषा- द्रव्यग्रहणं च । २६६ १७२ सत्यादितया गृहीतनिसर्गयोर- भेदाः । ”	प्रज्ञा० विषयसूचि ॥ ३९ ॥					

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [उपांगसूत्र-४ “प्रज्ञापना”]			
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए ‘संवृत्तिक आगम सुत्ताणि’	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)			
श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ४० ॥	१७३ षोडश वचनानि । २६६ १७४ चतस्रोऽप्याराधिन्यः सत्यभाषका- द्यल्पबहुत्वम् । २६७ १७५ सत्यादिभाषानामल्पबहुत्वम् । २६८ ॥ इति भाषाख्यमेकादशं पदम् ॥ १७६ शरीरभेदाः (५ दण्डकेषु) २७० १७७ औदारिकादीनां भेदौ संख्या च । ,, १७८ नारकाणामौदारिकादिशरीर- तत्संख्यापृच्छा । २७४ १७९ असुरकुमारादीनामौदारिकादि- शरीरतत्संख्यापृच्छा । २७५ १८० पृथ्वीकायिकादीनां द्वीन्द्रियादीनां चौदारिकादिशरीरतत्संख्यापृच्छा (गर्भजमनुष्यसंख्या) । २७७	॥ इति द्वादशं शरीराख्यं पदम् ॥ १८१ परिणामभेदौ । २७९ १८२ जीवपरिणामभेदाः (गत्यादि १०) । २८३ १८३ गतिपरिणामादिनिरूपणं (१०) । २८६ १८४ अजीवपरिणामभेदाः (१०) । २८७ १८५, १९९-२०० बन्धपरिणामादि- भेदाः । (१०) ,, ॥ इति त्रयोदशं परिणामाख्यं पदम् ॥ १८६ कषायभेदाः । २८९ १८७ कषायप्रतिष्ठोत्पत्तिश्च । ,, १८८ क्रोधादिभेदाः २८९ १८९ आभोगाद्याः क्रोधभेदाः । २९१	१९०, २००* अष्टकर्मप्रकृतिचयोप- चयादिहेतुता । २९२ ॥ इति चतुर्दशं कषायाख्यं पदम् ॥ २०२-२०३* इन्द्रियाणां संस्थानादि- द्वाराणि (१६) । २९३ १९१ इन्द्रियाणां संस्थानवाहल्यपृथक्त्व- प्रदेशाः । ,, १९२ अवगाहनाल्पबहुत्वे । २९५ १९३ नैरयिकादिषु इंद्रियादीनि । २९७ १९४ शब्दादेः स्पृष्टास्पृष्टत्वादि । २९८ १९५ इन्द्रियाणां विषयपरिमाण- निरूपणम् (इन्द्रियविषयेष्वं- गुलसंख्येयभागादि मानम्) । २९९ १९६ अन्त्यनिर्जरापुद्गलदर्शनज्ञाना-	प्रज्ञा० विषयसूचिः ॥ ४० ॥

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [उपांगसूत्र-४ “प्रज्ञापना”]								
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए ‘संवृत्तिक आगम सुत्ताणि’	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) <table border="0" style="width: 100%; border-collapse: collapse;"> <tr> <td style="width: 15%; vertical-align: top;"> श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ४१ ॥ </td><td style="width: 25%; vertical-align: top;"> हारादिप्रश्नः । ३०४ १९७ आदर्शादिच्छायप्रश्नः । ” १९८, २०४-२०६* कम्बलावकाशा- काशस्पर्शनादिप्रश्नः । ३०५ १९९, २०७-२०८* संस्थानादीनीन्द्रि- याणां द्वाराणि (९) अनगारादीन्य- लोकान्तानि च (१६) । ३०८ २०० इन्द्रियापायेहावग्रहभेदाः ३१० २०१ द्रव्येन्द्रियभावेन्द्रियसंख्या, नारका- दीनामतीतानागतवर्तमानद्रव्य- भावेन्द्रियसंख्या च । ३११ ॥ इति पञ्चदशमिन्द्रियाख्यं पदम् ॥ २०२ प्रयोगस्य भेदाः । ३१७ २०३ नारकादीनां प्रयोगाः । ३१९ </td><td style="width: 25%; vertical-align: top;"> २०४ जीवादिषु पदेषु नियतप्रयोगा- भावः । ३२० २०५ गतिप्रपाताः प्रयोगो(१५)पपात- (३)विहायो(१७)गतिभेदाः । ३२५ ॥ इति षोडशं प्रयोगपदम् ॥ २०६, २०७* समाहारशरीरादीनि द्वाराणि (७) (लेश्यास्वरूपम्) ३३१ २०७ समकर्मत्वाच्चधिकारः । ३३२ २०८ समक्रियाऽधिकारः । ३३४ २०९ असुरकुमारादिष्वाहारादि- पदनवक्रम् । ३३५ २१० समवेदनादि । ३३८ २११ लेश्यापदे मनुष्यविषये । ३३९ २१२ ” ” व्यन्तराणां विषये । ३४० </td><td style="width: 25%; vertical-align: top;"> २१३ लेश्यापदे चतुर्विंशतिदण्डकस्या- हारादिपदैर्निरूपणम् । ३४१ २१४ लेश्याभेदाः । ३४३ २१५ नैरयिकाणां लेश्याः । ” २१६ लेश्यादीनामष्टानामल्पबहुत्वम् । ” २१७ नैरयिकेषु लेश्यानामल्पबहुत्वम् । ३४५ २१८ तिर्यक्पञ्चेन्द्रियेष्वल्पबहुत्वम् । ३४६ २१९ मनुष्येष्वल्पबहुत्वम् । ३४७ २२० देवविषयमल्पबहुत्वम् । ३४८ २२१ भवनवासिदेवविषयम् । ” २२२ नैरयिकेषूपपातविषयम् । ३५२ २२३ कृष्णलेश्यादिनैरयिकसत्कावधि- ज्ञानदर्शनविषयक्षेत्रपरिमाण- तारतम्यम् । ३५५ </td><td style="width: 10%; vertical-align: top;"> प्रज्ञा० विषयसूचिः ॥ ४१ ॥ </td></tr> </table>				श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ४१ ॥	हारादिप्रश्नः । ३०४ १९७ आदर्शादिच्छायप्रश्नः । ” १९८, २०४-२०६* कम्बलावकाशा- काशस्पर्शनादिप्रश्नः । ३०५ १९९, २०७-२०८* संस्थानादीनीन्द्रि- याणां द्वाराणि (९) अनगारादीन्य- लोकान्तानि च (१६) । ३०८ २०० इन्द्रियापायेहावग्रहभेदाः ३१० २०१ द्रव्येन्द्रियभावेन्द्रियसंख्या, नारका- दीनामतीतानागतवर्तमानद्रव्य- भावेन्द्रियसंख्या च । ३११ ॥ इति पञ्चदशमिन्द्रियाख्यं पदम् ॥ २०२ प्रयोगस्य भेदाः । ३१७ २०३ नारकादीनां प्रयोगाः । ३१९	२०४ जीवादिषु पदेषु नियतप्रयोगा- भावः । ३२० २०५ गतिप्रपाताः प्रयोगो(१५)पपात- (३)विहायो(१७)गतिभेदाः । ३२५ ॥ इति षोडशं प्रयोगपदम् ॥ २०६, २०७* समाहारशरीरादीनि द्वाराणि (७) (लेश्यास्वरूपम्) ३३१ २०७ समकर्मत्वाच्चधिकारः । ३३२ २०८ समक्रियाऽधिकारः । ३३४ २०९ असुरकुमारादिष्वाहारादि- पदनवक्रम् । ३३५ २१० समवेदनादि । ३३८ २११ लेश्यापदे मनुष्यविषये । ३३९ २१२ ” ” व्यन्तराणां विषये । ३४०	२१३ लेश्यापदे चतुर्विंशतिदण्डकस्या- हारादिपदैर्निरूपणम् । ३४१ २१४ लेश्याभेदाः । ३४३ २१५ नैरयिकाणां लेश्याः । ” २१६ लेश्यादीनामष्टानामल्पबहुत्वम् । ” २१७ नैरयिकेषु लेश्यानामल्पबहुत्वम् । ३४५ २१८ तिर्यक्पञ्चेन्द्रियेष्वल्पबहुत्वम् । ३४६ २१९ मनुष्येष्वल्पबहुत्वम् । ३४७ २२० देवविषयमल्पबहुत्वम् । ३४८ २२१ भवनवासिदेवविषयम् । ” २२२ नैरयिकेषूपपातविषयम् । ३५२ २२३ कृष्णलेश्यादिनैरयिकसत्कावधि- ज्ञानदर्शनविषयक्षेत्रपरिमाण- तारतम्यम् । ३५५	प्रज्ञा० विषयसूचिः ॥ ४१ ॥
श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ४१ ॥	हारादिप्रश्नः । ३०४ १९७ आदर्शादिच्छायप्रश्नः । ” १९८, २०४-२०६* कम्बलावकाशा- काशस्पर्शनादिप्रश्नः । ३०५ १९९, २०७-२०८* संस्थानादीनीन्द्रि- याणां द्वाराणि (९) अनगारादीन्य- लोकान्तानि च (१६) । ३०८ २०० इन्द्रियापायेहावग्रहभेदाः ३१० २०१ द्रव्येन्द्रियभावेन्द्रियसंख्या, नारका- दीनामतीतानागतवर्तमानद्रव्य- भावेन्द्रियसंख्या च । ३११ ॥ इति पञ्चदशमिन्द्रियाख्यं पदम् ॥ २०२ प्रयोगस्य भेदाः । ३१७ २०३ नारकादीनां प्रयोगाः । ३१९	२०४ जीवादिषु पदेषु नियतप्रयोगा- भावः । ३२० २०५ गतिप्रपाताः प्रयोगो(१५)पपात- (३)विहायो(१७)गतिभेदाः । ३२५ ॥ इति षोडशं प्रयोगपदम् ॥ २०६, २०७* समाहारशरीरादीनि द्वाराणि (७) (लेश्यास्वरूपम्) ३३१ २०७ समकर्मत्वाच्चधिकारः । ३३२ २०८ समक्रियाऽधिकारः । ३३४ २०९ असुरकुमारादिष्वाहारादि- पदनवक्रम् । ३३५ २१० समवेदनादि । ३३८ २११ लेश्यापदे मनुष्यविषये । ३३९ २१२ ” ” व्यन्तराणां विषये । ३४०	२१३ लेश्यापदे चतुर्विंशतिदण्डकस्या- हारादिपदैर्निरूपणम् । ३४१ २१४ लेश्याभेदाः । ३४३ २१५ नैरयिकाणां लेश्याः । ” २१६ लेश्यादीनामष्टानामल्पबहुत्वम् । ” २१७ नैरयिकेषु लेश्यानामल्पबहुत्वम् । ३४५ २१८ तिर्यक्पञ्चेन्द्रियेष्वल्पबहुत्वम् । ३४६ २१९ मनुष्येष्वल्पबहुत्वम् । ३४७ २२० देवविषयमल्पबहुत्वम् । ३४८ २२१ भवनवासिदेवविषयम् । ” २२२ नैरयिकेषूपपातविषयम् । ३५२ २२३ कृष्णलेश्यादिनैरयिकसत्कावधि- ज्ञानदर्शनविषयक्षेत्रपरिमाण- तारतम्यम् । ३५५	प्रज्ञा० विषयसूचिः ॥ ४१ ॥					

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [उपांगसूत्र-४ “प्रज्ञापना”]					
	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)					
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए ‘संवृत्तिक आगम सुत्ताणि’	श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ४२ ॥	२२४ का लेइयाः कतिषु ज्ञानेषु लभ्यन्ते । ३५७ २२५, २१०* लेइयाणां परिणाम- लक्षणम् । ३५८ २२६ लेइयानां वर्णाधिकारः । ३६० २२७ लेइयानां रसाधिकारः । ३६४ २२८ लेइयानां गन्धाधिकारः । ३६६ २२९ लेइयानां परिणामद्वारम् । ३६७ २३० लेइयानां स्थानद्वारम् । ३६८ २३१ देवनैरयिकविषयम् । ३७० २३२ सामन्यतया लेइयावर्णनम् । ३७१ ॥ इति सप्तदशं लेइयाख्यं पदम् ॥ २३३, २११-२१२* कायस्थितिपरि- णामः । ३७४	२३४ कायस्थितीन्द्रियद्वारम् । ३७७ २३५ कायद्वारम् । ३७८ २३६ कायद्वारे सूक्ष्मकायिकादीनां कालनिरूपणम् । ३८१ २३७ योगद्वारम् । ३८२ २३८ वेदद्वारम् । ३८३ २३९ कषायद्वारम् । ३८५ २४० लेइयाद्वारम् । ३८६ २४१ सम्यक्त्वद्वारम् । ३८७ २४२ ज्ञानद्वारम् । ३८९ २४३ दर्शनद्वारम् । ३९० २४४ संयतद्वारम् । ३९१ २४५ उपयोगद्वारम् । ३९२ २४६ आहारकद्वारम् । ३९३	३७७ २४७ भाषाद्वारम् । ३९४ ३७८ २४८ परीत्तद्वारम् । ३९४ ३८१ २४९ पर्याप्तद्वारम् । ” ३८१ २५० सूक्ष्मद्वारम् । ” ३८२ २५१ संज्ञिद्वारम् । ” ३८३ २५२ भवसिद्धिकद्वारम् । ” ३८५ २५३ अस्तिकायद्वारम् । ” ३८६ २५४ चरिमद्वारम् । ” ३८७ ॥ इत्यष्टादशं कायस्थितिपदम् ॥ ३८९ १५५ सम्यग्दृष्ट्यादिभेदेन जीवाः । ३९५ ३९० इत्येकोनविंशतितमं सम्यक्त्वपदम् ॥ ३९१ १५६, २१३* अन्तक्रिया, तीर्थकृत्वा- दिप्राप्तिसंग्रहः, जीवादिष्वन्त- क्रियाविचारः । ३९६	प्रज्ञा० विषयसूचिः ॥ ४२ ॥	

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [उपांगसूत्र-४ “प्रज्ञापना”]								
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए ‘संवृत्तिक आगम सुत्ताणि’	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) <table border="0" style="width: 100%; border-collapse: collapse;"> <tr> <td style="width: 15%; vertical-align: top;"> श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ४४ ॥ </td><td style="width: 30%; vertical-align: top;"> २८३ जीवनारकादीनां जीवनारकादिभ्यः क्रियाः । ४३९ २८४ क्रियासंवेधः । ४४३ २८५ क्रिया(२)णां सहभावविचारः । ४४६ २८६ हिंसादिविरमणहेतुः । ४४८ २८७ प्राणातिपातविरमणे कर्मप्रकृति- बन्धमानम् । ” २८८ विरतानां क्रियाभावः । ४५१ ॥ इति द्वाविंशतितमं क्रियापदम् ॥ २८९, २९७* कर्मप्रकृतेर्भेदाः (८) । ४५२ २९० कर्मप्रकृतेर्बन्धः । ४५३ २९१ कर्मस्थानानि । ४५५ २९२ कर्मवेदना । ४५७ २९३ कर्मकर्मानुभावः । ४५८ </td><td style="width: 30%; vertical-align: top;"> २९४ कर्मप्रकृतिविचारः । ४६५ २९५ पंचविधज्ञानावरणीयादिकर्मस्थितिः । ४७५ २९६ एकेन्द्रियाणां कर्मस्थितिः । ४८५ २९७ द्वीन्द्रियादीनां कर्मस्थितिः । ४८८ २९८ ज्ञानावरणीयादिकर्मणां जघन्य- स्थितिबन्धः । ४८८ २९९ ज्ञाना० उत्कृष्टस्थितिबन्धः । ४९० ॥ इति त्रयोविंशतितमं कर्मप्रकृत्या- ख्यं पदम् ॥ ३०० कर्मप्रकृतिबन्धबन्धनम् (८) । ४९१ ॥ इति कर्मबन्धाख्यं चतुर्विंशति- तमं पदम् ॥ ३०१ कर्मबन्धवेदः । ४९४ </td><td style="width: 30%; vertical-align: top;"> इति पञ्चविंशतितमं कर्मवेदाख्यं पदम् ३०२ कर्मप्रकृतिवेदबन्धः । ४९५ इति षड्विंशतितमं वेदबन्धाख्यं पदम् ३०३ कर्मवेदवेदः । ४९७ इति वेदवेदाख्यं सप्तविंशतितमं पदम् ॥ ३०४ नारकादीनां सचिच्छाद्याहारादि । ४९८ ३०५, २९८-२९९* असुरकुमारादीना- माहारादि । ४९९ ३०६ पृथ्वीकायिकादीनामाहारादि । ५०५ ३०७ द्वीन्द्रियाणामाहारादि । ५०७ ३०८ नारकादीनामेकेन्द्रियशरीराद्याहारः । ५०८ ३०९ नारकाणामोजआहारादिः । ५१० २२०* आहारपदाधिकाराः (१३) । ५११ </td><td style="width: 10%; vertical-align: top;"> प्रज्ञा० विषयसूचिः ॥ ४४ ॥ </td></tr> </table>				श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ४४ ॥	२८३ जीवनारकादीनां जीवनारकादिभ्यः क्रियाः । ४३९ २८४ क्रियासंवेधः । ४४३ २८५ क्रिया(२)णां सहभावविचारः । ४४६ २८६ हिंसादिविरमणहेतुः । ४४८ २८७ प्राणातिपातविरमणे कर्मप्रकृति- बन्धमानम् । ” २८८ विरतानां क्रियाभावः । ४५१ ॥ इति द्वाविंशतितमं क्रियापदम् ॥ २८९, २९७* कर्मप्रकृतेर्भेदाः (८) । ४५२ २९० कर्मप्रकृतेर्बन्धः । ४५३ २९१ कर्मस्थानानि । ४५५ २९२ कर्मवेदना । ४५७ २९३ कर्मकर्मानुभावः । ४५८	२९४ कर्मप्रकृतिविचारः । ४६५ २९५ पंचविधज्ञानावरणीयादिकर्मस्थितिः । ४७५ २९६ एकेन्द्रियाणां कर्मस्थितिः । ४८५ २९७ द्वीन्द्रियादीनां कर्मस्थितिः । ४८८ २९८ ज्ञानावरणीयादिकर्मणां जघन्य- स्थितिबन्धः । ४८८ २९९ ज्ञाना० उत्कृष्टस्थितिबन्धः । ४९० ॥ इति त्रयोविंशतितमं कर्मप्रकृत्या- ख्यं पदम् ॥ ३०० कर्मप्रकृतिबन्धबन्धनम् (८) । ४९१ ॥ इति कर्मबन्धाख्यं चतुर्विंशति- तमं पदम् ॥ ३०१ कर्मबन्धवेदः । ४९४	इति पञ्चविंशतितमं कर्मवेदाख्यं पदम् ३०२ कर्मप्रकृतिवेदबन्धः । ४९५ इति षड्विंशतितमं वेदबन्धाख्यं पदम् ३०३ कर्मवेदवेदः । ४९७ इति वेदवेदाख्यं सप्तविंशतितमं पदम् ॥ ३०४ नारकादीनां सचिच्छाद्याहारादि । ४९८ ३०५, २९८-२९९* असुरकुमारादीना- माहारादि । ४९९ ३०६ पृथ्वीकायिकादीनामाहारादि । ५०५ ३०७ द्वीन्द्रियाणामाहारादि । ५०७ ३०८ नारकादीनामेकेन्द्रियशरीराद्याहारः । ५०८ ३०९ नारकाणामोजआहारादिः । ५१० २२०* आहारपदाधिकाराः (१३) । ५११	प्रज्ञा० विषयसूचिः ॥ ४४ ॥
श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ४४ ॥	२८३ जीवनारकादीनां जीवनारकादिभ्यः क्रियाः । ४३९ २८४ क्रियासंवेधः । ४४३ २८५ क्रिया(२)णां सहभावविचारः । ४४६ २८६ हिंसादिविरमणहेतुः । ४४८ २८७ प्राणातिपातविरमणे कर्मप्रकृति- बन्धमानम् । ” २८८ विरतानां क्रियाभावः । ४५१ ॥ इति द्वाविंशतितमं क्रियापदम् ॥ २८९, २९७* कर्मप्रकृतेर्भेदाः (८) । ४५२ २९० कर्मप्रकृतेर्बन्धः । ४५३ २९१ कर्मस्थानानि । ४५५ २९२ कर्मवेदना । ४५७ २९३ कर्मकर्मानुभावः । ४५८	२९४ कर्मप्रकृतिविचारः । ४६५ २९५ पंचविधज्ञानावरणीयादिकर्मस्थितिः । ४७५ २९६ एकेन्द्रियाणां कर्मस्थितिः । ४८५ २९७ द्वीन्द्रियादीनां कर्मस्थितिः । ४८८ २९८ ज्ञानावरणीयादिकर्मणां जघन्य- स्थितिबन्धः । ४८८ २९९ ज्ञाना० उत्कृष्टस्थितिबन्धः । ४९० ॥ इति त्रयोविंशतितमं कर्मप्रकृत्या- ख्यं पदम् ॥ ३०० कर्मप्रकृतिबन्धबन्धनम् (८) । ४९१ ॥ इति कर्मबन्धाख्यं चतुर्विंशति- तमं पदम् ॥ ३०१ कर्मबन्धवेदः । ४९४	इति पञ्चविंशतितमं कर्मवेदाख्यं पदम् ३०२ कर्मप्रकृतिवेदबन्धः । ४९५ इति षड्विंशतितमं वेदबन्धाख्यं पदम् ३०३ कर्मवेदवेदः । ४९७ इति वेदवेदाख्यं सप्तविंशतितमं पदम् ॥ ३०४ नारकादीनां सचिच्छाद्याहारादि । ४९८ ३०५, २९८-२९९* असुरकुमारादीना- माहारादि । ४९९ ३०६ पृथ्वीकायिकादीनामाहारादि । ५०५ ३०७ द्वीन्द्रियाणामाहारादि । ५०७ ३०८ नारकादीनामेकेन्द्रियशरीराद्याहारः । ५०८ ३०९ नारकाणामोजआहारादिः । ५१० २२०* आहारपदाधिकाराः (१३) । ५११	प्रज्ञा० विषयसूचिः ॥ ४४ ॥					

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [उपांगसूत्र-४ “प्रज्ञापना”]								
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए ‘संवृत्तिक आगम सुत्ताणि’	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) <table border="0" style="width: 100%; border-collapse: collapse;"> <tr> <td style="width: 15%; vertical-align: top;"> श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ४५ ॥ </td><td style="width: 25%; vertical-align: top;"> ३१० जीवानामाहारानाहारादि । ५१२ ३११ सलेश्यजीवानामाहारादि । ५१६ ३१२ गत्यादिष्वाहारकत्वादिः । ५२० ॥ इत्यष्टाविंशतितममाहाराख्यं पदम् ॥ ३१३ नारकादीनां सागारोपयोगादिभेदाः । ५२५ ॥ इत्येकोनविंशत्तमपुपयोगाख्यं पदम् ॥ ३१४ पश्यत्ताभेदाः (९) (मतिज्ञानाज्ञानयो- र्न) । ५२९ ३१५ आकारादिज्ञानदर्शनपृथक्त्वम् । ५३१ ॥ इति त्रिंशत्तमं पश्यत्तापदम् ॥ ३१६, २२१* संज्ञाभेदाः । ५३३ इत्येकत्रिंशत्तमं संज्ञाख्यं पदम् ॥ ३१७, २२२* संयतः । ५३४ </td><td style="width: 25%; vertical-align: top;"> ॥ इति द्वात्रिंशत्तमं संयमाख्यं पदम् ॥ ३१८, २२३* अवधिज्ञानभेदौ । ५३६ ३१९ अवधिज्ञानविषयः । ५४० ३२० अवधिज्ञानसंस्थानद्वारम् । ५४१ ३२१ नैरयिकभवनपतिव्यन्तरज्योतिष्क- वैमानिकानामवधिः । ५४२ ॥ इति त्रयस्त्रिंशत्तममवध्याख्यं पदम् ॥ ३२२, २२४-२२५* परिचारणा । ५४३ ३२३ परिचारणा, आहारविषयमाभोग- नम् । ५४४ ३२४ परिचारणाविषयः । ५४७ ३२५ परिचारणाभेदाः । ५४८ ३२६ शीतपरिचारणा । ” ३२७ शुक्लपरिचारणा । ” </td><td style="width: 25%; vertical-align: top;"> ३२८ स्पर्शपरिचारणा । ५४८ ३२९ कायपरिचारणा । ” ॥ इति चतुस्त्रिंशत्तमं प्रवीचारपदम् ॥ ३३०, २२६-२२७* वेदनाभेदाः । ५५३ ३३१, ३३२ वेदनाभेदौ । ५५६ ॥ इति वेदनाख्यं पञ्चत्रिंशत्तमं पदम् ॥ २२८* वेदनादिसमुद्घाताः । ५५९ ३३३ समुद्घातभेदाः । ५६१ ३३४ नैरयिकेषु समुद्घाताः । ५६२ ३३५ नैरयिकेषु वेदनासमुद्घाताः । ५६५ ३३६ स्वपरस्थाने वेदनासमुद्घाताः । ६७५ ३३७ स्व० कषायस्य समुद्घाताः । ५६९ ३३८ नारकादेर्नारिकत्वादौ मारणान्ति- काद्याः समुद्घाताः । ५७३ </td><td style="width: 15%; vertical-align: top;"> प्रज्ञा० विषयसूचिः ॥ ४५ ॥ </td></tr> </table>				श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ४५ ॥	३१० जीवानामाहारानाहारादि । ५१२ ३११ सलेश्यजीवानामाहारादि । ५१६ ३१२ गत्यादिष्वाहारकत्वादिः । ५२० ॥ इत्यष्टाविंशतितममाहाराख्यं पदम् ॥ ३१३ नारकादीनां सागारोपयोगादिभेदाः । ५२५ ॥ इत्येकोनविंशत्तमपुपयोगाख्यं पदम् ॥ ३१४ पश्यत्ताभेदाः (९) (मतिज्ञानाज्ञानयो- र्न) । ५२९ ३१५ आकारादिज्ञानदर्शनपृथक्त्वम् । ५३१ ॥ इति त्रिंशत्तमं पश्यत्तापदम् ॥ ३१६, २२१* संज्ञाभेदाः । ५३३ इत्येकत्रिंशत्तमं संज्ञाख्यं पदम् ॥ ३१७, २२२* संयतः । ५३४	॥ इति द्वात्रिंशत्तमं संयमाख्यं पदम् ॥ ३१८, २२३* अवधिज्ञानभेदौ । ५३६ ३१९ अवधिज्ञानविषयः । ५४० ३२० अवधिज्ञानसंस्थानद्वारम् । ५४१ ३२१ नैरयिकभवनपतिव्यन्तरज्योतिष्क- वैमानिकानामवधिः । ५४२ ॥ इति त्रयस्त्रिंशत्तममवध्याख्यं पदम् ॥ ३२२, २२४-२२५* परिचारणा । ५४३ ३२३ परिचारणा, आहारविषयमाभोग- नम् । ५४४ ३२४ परिचारणाविषयः । ५४७ ३२५ परिचारणाभेदाः । ५४८ ३२६ शीतपरिचारणा । ” ३२७ शुक्लपरिचारणा । ”	३२८ स्पर्शपरिचारणा । ५४८ ३२९ कायपरिचारणा । ” ॥ इति चतुस्त्रिंशत्तमं प्रवीचारपदम् ॥ ३३०, २२६-२२७* वेदनाभेदाः । ५५३ ३३१, ३३२ वेदनाभेदौ । ५५६ ॥ इति वेदनाख्यं पञ्चत्रिंशत्तमं पदम् ॥ २२८* वेदनादिसमुद्घाताः । ५५९ ३३३ समुद्घातभेदाः । ५६१ ३३४ नैरयिकेषु समुद्घाताः । ५६२ ३३५ नैरयिकेषु वेदनासमुद्घाताः । ५६५ ३३६ स्वपरस्थाने वेदनासमुद्घाताः । ६७५ ३३७ स्व० कषायस्य समुद्घाताः । ५६९ ३३८ नारकादेर्नारिकत्वादौ मारणान्ति- काद्याः समुद्घाताः । ५७३	प्रज्ञा० विषयसूचिः ॥ ४५ ॥
श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ४५ ॥	३१० जीवानामाहारानाहारादि । ५१२ ३११ सलेश्यजीवानामाहारादि । ५१६ ३१२ गत्यादिष्वाहारकत्वादिः । ५२० ॥ इत्यष्टाविंशतितममाहाराख्यं पदम् ॥ ३१३ नारकादीनां सागारोपयोगादिभेदाः । ५२५ ॥ इत्येकोनविंशत्तमपुपयोगाख्यं पदम् ॥ ३१४ पश्यत्ताभेदाः (९) (मतिज्ञानाज्ञानयो- र्न) । ५२९ ३१५ आकारादिज्ञानदर्शनपृथक्त्वम् । ५३१ ॥ इति त्रिंशत्तमं पश्यत्तापदम् ॥ ३१६, २२१* संज्ञाभेदाः । ५३३ इत्येकत्रिंशत्तमं संज्ञाख्यं पदम् ॥ ३१७, २२२* संयतः । ५३४	॥ इति द्वात्रिंशत्तमं संयमाख्यं पदम् ॥ ३१८, २२३* अवधिज्ञानभेदौ । ५३६ ३१९ अवधिज्ञानविषयः । ५४० ३२० अवधिज्ञानसंस्थानद्वारम् । ५४१ ३२१ नैरयिकभवनपतिव्यन्तरज्योतिष्क- वैमानिकानामवधिः । ५४२ ॥ इति त्रयस्त्रिंशत्तममवध्याख्यं पदम् ॥ ३२२, २२४-२२५* परिचारणा । ५४३ ३२३ परिचारणा, आहारविषयमाभोग- नम् । ५४४ ३२४ परिचारणाविषयः । ५४७ ३२५ परिचारणाभेदाः । ५४८ ३२६ शीतपरिचारणा । ” ३२७ शुक्लपरिचारणा । ”	३२८ स्पर्शपरिचारणा । ५४८ ३२९ कायपरिचारणा । ” ॥ इति चतुस्त्रिंशत्तमं प्रवीचारपदम् ॥ ३३०, २२६-२२७* वेदनाभेदाः । ५५३ ३३१, ३३२ वेदनाभेदौ । ५५६ ॥ इति वेदनाख्यं पञ्चत्रिंशत्तमं पदम् ॥ २२८* वेदनादिसमुद्घाताः । ५५९ ३३३ समुद्घातभेदाः । ५६१ ३३४ नैरयिकेषु समुद्घाताः । ५६२ ३३५ नैरयिकेषु वेदनासमुद्घाताः । ५६५ ३३६ स्वपरस्थाने वेदनासमुद्घाताः । ६७५ ३३७ स्व० कषायस्य समुद्घाताः । ५६९ ३३८ नारकादेर्नारिकत्वादौ मारणान्ति- काद्याः समुद्घाताः । ५७३	प्रज्ञा० विषयसूचिः ॥ ४५ ॥					

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [उपांगसूत्र-४ "प्रज्ञापना"]				
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) <table border="0" style="width: 100%;"> <tr> <td style="width: 15%; vertical-align: top;"> श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ४६ ॥ </td> <td style="width: 45%; vertical-align: top;"> ३३९ नारकादीनां नारकत्वादौ समुद्- घाताः ५७५ ३४०-३४१ समुद्घातानामल्पबहुत्वम् । ५७८ ३४२ स्वपरस्थाने कषायस० । ५८१ ३४३ क्रोधादिसमुद्घाताद्यल्पबहुत्वम् । ५८८ ३४४ छाग्नस्थिकाः समुद्घाताः । ५९० ३४५ समुद्घातपुद्गलपूरणादि । ” ३४६ वैक्रियसमुद्घातः । ५९६ ३४७ केवलिसमुद्घातनिर्जरापुद्गलसूक्ष्मता । ५९८ ३४८ केवलिसमुद्घातप्रयोजनम् । ६०५ ३४९ आवर्जीकरणम् । ६०७ ३५० केवलि० समयाः । ” </td> <td style="width: 40%; vertical-align: top;"> ३५१, २२९-२३०* कृतसमुद्घातस्य योगाः । ६०५ ३५२ योगनिरोधः । ६०७ ॥ इति षट्त्रिंशत्तमं समुद्घाताख्यं पदम् ॥ ॥ इति श्रीप्रज्ञापनाया विषयसूचिः ॥ </td> </tr> </table>	श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ४६ ॥	३३९ नारकादीनां नारकत्वादौ समुद्- घाताः ५७५ ३४०-३४१ समुद्घातानामल्पबहुत्वम् । ५७८ ३४२ स्वपरस्थाने कषायस० । ५८१ ३४३ क्रोधादिसमुद्घाताद्यल्पबहुत्वम् । ५८८ ३४४ छाग्नस्थिकाः समुद्घाताः । ५९० ३४५ समुद्घातपुद्गलपूरणादि । ” ३४६ वैक्रियसमुद्घातः । ५९६ ३४७ केवलिसमुद्घातनिर्जरापुद्गलसूक्ष्मता । ५९८ ३४८ केवलिसमुद्घातप्रयोजनम् । ६०५ ३४९ आवर्जीकरणम् । ६०७ ३५० केवलि० समयाः । ”	३५१, २२९-२३०* कृतसमुद्घातस्य योगाः । ६०५ ३५२ योगनिरोधः । ६०७ ॥ इति षट्त्रिंशत्तमं समुद्घाताख्यं पदम् ॥ ॥ इति श्रीप्रज्ञापनाया विषयसूचिः ॥	प्रज्ञा० विषयसूचि- बृहद्विषया- नुक्रमश्च ॥ ४६ ॥
श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ४६ ॥	३३९ नारकादीनां नारकत्वादौ समुद्- घाताः ५७५ ३४०-३४१ समुद्घातानामल्पबहुत्वम् । ५७८ ३४२ स्वपरस्थाने कषायस० । ५८१ ३४३ क्रोधादिसमुद्घाताद्यल्पबहुत्वम् । ५८८ ३४४ छाग्नस्थिकाः समुद्घाताः । ५९० ३४५ समुद्घातपुद्गलपूरणादि । ” ३४६ वैक्रियसमुद्घातः । ५९६ ३४७ केवलिसमुद्घातनिर्जरापुद्गलसूक्ष्मता । ५९८ ३४८ केवलिसमुद्घातप्रयोजनम् । ६०५ ३४९ आवर्जीकरणम् । ६०७ ३५० केवलि० समयाः । ”	३५१, २२९-२३०* कृतसमुद्घातस्य योगाः । ६०५ ३५२ योगनिरोधः । ६०७ ॥ इति षट्त्रिंशत्तमं समुद्घाताख्यं पदम् ॥ ॥ इति श्रीप्रज्ञापनाया विषयसूचिः ॥			

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [उपांगसूत्र-४ “प्रज्ञापना”]				
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए ‘संवृत्तिक आगम सुत्ताणि’	श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ४६ ॥	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)	अथ श्रीप्रज्ञापनोपाङ्गस्य बृहद्विषयानुक्रमः वीरनमस्कारमङ्गलादि । १ प्रज्ञापनाशब्दार्थः, प्रयोजनाभिधेय- मङ्गलचर्चा । २ १* महावीरनमस्कारः, (अतिशय- चतुष्कम्) । ४ २* वीरस्यासन्नोपकारिता । ५	४* प्र० आर्यश्यामनमस्कारः । ” ५* दृष्टिवादनस्स्यन्दाध्ययनकथन- प्रतिज्ञा । ६ ९* प्रज्ञापनादि(३६)पदानामुद्देशः । ६ १ जीवाजीवप्रज्ञापने । ७ २ रूप्यरूप्यजीवप्रज्ञापने । ७ ३ धर्मास्तिकायतद्देशादि(१०)भेदाः । ९ ४ स्कन्धादीनां (४) वर्णगन्धादि(५)- परिणामाः (परिमण्डलादिसंस्थानानि) १८ ५ संसारासंसारसमापन्नप्रज्ञापने । ” ८ अनन्तरपरस्परसिद्धप्रज्ञापने ६, तीर्था- दि(१५) सिद्धाः, (स्वयंबुद्धप्रत्येकबुद्ध- विचारः, स्त्रीमुक्तिसिद्धिः) ७, अप्रथम- समयसिद्धादिप्रज्ञापना (८) । २३	प्रज्ञा० विषयसूचि- बृहद्विषया- नुक्रमश्च ॥ ४६ ॥

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [उपांगसूत्र-४ “प्रज्ञापना”]				
	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)				
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए ‘संवृत्तिक आगम सुत्ताणि’	श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ४७ ॥	९ एकेन्द्रियादिप्रज्ञापना, (द्रव्यभावेन्द्रियाणि) २४ १० पृथ्वीकायादिप्रज्ञापना । ” ११ सूक्ष्मबादरपृथ्वीप्रज्ञापना । ” १२ पर्याप्तापर्याप्तसूक्ष्मपृथ्वीप्र० (पर्याप्तिनिरूपणम्) । २६ १३ श्लक्ष्णस्वरपृथ्वीप्र० ” १४ श्लक्ष्णकृष्णादि(७)मृत्तिकाप्रज्ञापना । ” १५, १३* स्वरपृथ्वीशर्करादि(४०)प्र- योनयः, पर्याप्तिनिश्चयोत्पत्तिः । २८ १६ सूक्ष्मबादरपर्याप्तापर्याप्ताप्रकायप्र० । २९ १७ सूक्ष्मबादरपर्याप्तापर्याप्तातेजस्काय० । २९	१८ सूक्ष्मबादरपर्याप्तापर्याप्तावायुकाय० । ३० २२, १४* सूक्ष्मबादरवनस्पतिप्र० १९, पर्याप्तापर्याप्तसूक्ष्मव० प्र० २०, प्रत्येकसाधारणबादरव० प्र० २१, वृक्षादि (१२) बादरव० प्र० २२, १४* । ३ २३, ४६* निम्बाम्राद्येकास्थिक१७*- अस्थिकादिबहुबीजवृक्ष२०*- वृन्ताकादिगुच्छ२५*सेचन- कादिगुल्म२८* पद्मादिलता २९*- पुंस्फल्यादिवल्ली ३४* इक्ष्वादिपर्वग- ३६* साण्डिकादिनृण ३८* ताला- दिवलय४०* आर्यावरोहादिहरित	४३* शाल्याद्यौषध्युदकादिजल- रुहआयादिकुहुणप्र०, एकानेकजीव- स्कन्धादिषु श्लेषवृत्तितिलपर्पटिकादृष्टा- न्तौ ४६* । ३४ २४, ८३* अवकाद्याः साधारणमेदाः ५३* संख्याऽसंख्यातजीवशृङ्गाटकजीवा- नन्तप्रत्येकमूलादिलक्षणम् । ८३* ३६ २५, ९६* अनन्तप्रत्येकचिह्नमेदाः । ३८ ९८* मूलप्रथमपत्रयोरेककर्तृकता ९७* किशलयोऽनन्तकायः ९८* । ३९ २६, ११०* साधारणानां युगषडुत्पत्त्यादि, अनन्तशरीरहृदयता, अनन्तप्रत्येक- मानं (गोला निगोदाश्च) १०६*, सूक्ष्मानामाज्ञाग्राह्यत्वम् १०७* प्र०,	प्रज्ञा० बृहद्- विषयानुक्रमः <

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [उपांगसूत्र-४ “प्रज्ञापना”]				
	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)				
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए ‘संवृत्तिक आगम सुत्ताणि’	श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ४८ ॥	पर्याप्तपर्याप्तवनस्पतिसंख्या, कन्दादीनां त्वगादिष्वनियतादि- योनिः ११०* । ४१ २७ पुताकुम्भ्यादिद्वीन्द्रियप्रज्ञापना (योनि- कुलयोर्भेदः) ४१ २८ औपयिकादित्रीन्द्रियप्र० । ४२ २९, १११* अन्धिकादिचतुरिन्द्रियप्र० । ” ३० नैरयिकादिपञ्चेन्द्रियप्र० । ४३ ३१ रत्नप्रभादिनारकप्र० । ” ३२ जलचरादितिर्यक्प्र० । ” ३३ मत्स्यादि(५) श्लक्ष्णमत्स्याद्यस्थि- कच्छपादिदिल्यादिग्राहसोण्डादि- मकरादिजलचरप्र० ४४	३४ अश्वाद्येकखुरोष्ठादिद्विखुरहस्त्यादि- गण्डीपदसिंहादिसनखचतुष्पदप्र० । ४५ ३५ आशीविषादिदर्वीकरदिव्याकादि- मुकुल्यङ्गजगराऽऽशालिकमहोर- गोरःपरिसर्पनकुलादिभुजपरिसर्पप्र० । ४६ ३६, ११२* वल्गुल्यादिचर्मपक्षिदङ्का- दिरोमपक्षिसमुद्भविततपक्षिप्र०, (कुलकोटिसंग्रहः) ११२* । ५० ३७, १३३* समूर्च्छिमनरोत्पत्तिस्थान- कर्माकर्मभूयन्तरद्वीपकमनुष्याधिकारः (युगलिकवर्णनम्), शकादयो म्लेच्छाः, ऋद्धिक्षेत्रजातिकुलकर्मशिल्प- भाषाज्ञानदर्शनचारित्र्यार्थाः, (नि-	सर्गादिभेदाः, निश्शङ्कितादय आ- चाराः, परिहारविशुद्धिः) । ६८ ३८ सप्रभेदभवनवास्यादिदेवप्रज्ञापना । ७१ ॥ इति प्रथमं प्रज्ञापनापदम् ॥ ३९ सूक्ष्मबादरपर्याप्तपर्याप्तपृथिव्यप्ते- जसां स्थानानि (शिष्यप्रत्ययाय गौतमप्रश्न., तिर्यग्लोकतट्टं च) । ७७ ४० बादरादिवायुवनस्पतिस्थानानि । ७८ ४१ द्वित्रिचतुःपञ्चेन्द्रियस्थानानि । ८१ ४२ नारकाणां स्थानम् (सर्वर्णनम्) । ” ४३, १३७* रत्नप्रभादिनारकस्थानानि सर्वर्णनानि । ८४ ४४ पञ्चेन्द्रियतिर्यक्स्थानानि । ” ४५ मनुष्यस्थानानि । ”	प्रज्ञा० बृहद्- विषयानुक्रमः

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमः [उपांगसूत्र-४ “प्रज्ञापना”]								
प्रत सूत्रांक यहां देखिए दीप क्रमांक के लिए देखिए ‘संवृत्तिक आगम सुत्ताणि’	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) <table border="0" style="width: 100%; border-collapse: collapse;"> <tr> <td style="width: 15%; vertical-align: top;"> श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ४९ ॥ </td><td style="width: 25%; vertical-align: top;"> ४६, १४९* सवर्णनभवनपत्यादिदक्षि- णोत्तरतद्भेदस्थानानि । ९५ ४७ सवर्णनव्यन्तरस्थानानि । ९७ ४९, १५४* पिशाचतद्भेदस्थानानि ४८, १५१,* अनपर्णिकादिस्थानानि ४९, १५४* । ९८ ५० ज्योतिष्कस्थानानि । ९९ ५१ वैमानिकस्थानानि । १०० ५२ सौधर्मदेवस्थानतदिन्द्रवर्णनम् । १०१ ५३, १५८* ईशानादिदेवस्थानवर्णनं, सामानिकात्मरक्षकविमानसंख्या च । १०६ ५४, १७९* सिद्धानां स्थानं तन्नाम- स्वरूपे, अपतिघातसंस्थानावगाहना- </td><td style="width: 25%; vertical-align: top;"> स्पर्शलक्षणसुखपर्यायाश्च । ११३ ॥ इति द्वितीयं स्थानपदम् ॥ १८१* दिगादीनि द्वाराणि (२७) । ११४ ५५ जीवानां दिगनुपातेनारूपबहुत्वम् । ११५ ५६ पृथिव्यप्तेजोवाय्वादीनां सिद्धान्तानां दिगनुपातेनारूपबहुत्वम् । ११९ ५७ नारकतिर्यग्देवसिद्धानां पञ्चाष्टगति- रूपेणारूपबहुत्वम् । १२० ५८ सैकादी(७)न्द्रियारूपबहुत्वं, ओष- पर्याप्तापर्याप्तविशेषितं च । १२२ ५९ सकायपृथ्वीकायाद्य(८)रूपबहुत्वम् । १२४ ६० सूक्ष्मसूक्ष्मपृथ्व्यादितत्पर्याप्ता- </td><td style="width: 25%; vertical-align: top;"> पर्याप्तारूपबहुत्वम् । १२६ ६१ बादरवादरपृथ्व्याद्यरूपबहुत्वम् । १२९ ६२ सूक्ष्मसूक्ष्मपृथ्व्यादिवादरवादरपृथ्व्या- द्यरूपबहुत्वम् । १३४ ६४ सयोगमनोयोग्या(५)द्यरूपबहुत्वम् ६३, सद्देवस्त्रीवेदाद्यरूपबहुत्वम् ६४ । १३५ ६६ सकषाययादि ६५सलेइयाद्यरूप- बहुत्वम् ६६ । १३६ ६८ सम्यग्दृष्ट्यादि ६७ आभिनि- बोधिकज्ञान्याद्यरूपबहुत्वम् ६८ । १३७ ७२ चक्षुर्दर्शन्यादि ६९ संयतादि ७०- साकारोपयुक्तादि ७१ आहारका- द्यरूपबहुत्वम् ७२ । १३८ </td><td style="width: 10%; vertical-align: top;"> प्रज्ञा० बृहद्- विषयानुक्रमः ॥ ४९ ॥ </td></tr> </table>				श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ४९ ॥	४६, १४९* सवर्णनभवनपत्यादिदक्षि- णोत्तरतद्भेदस्थानानि । ९५ ४७ सवर्णनव्यन्तरस्थानानि । ९७ ४९, १५४* पिशाचतद्भेदस्थानानि ४८, १५१,* अनपर्णिकादिस्थानानि ४९, १५४* । ९८ ५० ज्योतिष्कस्थानानि । ९९ ५१ वैमानिकस्थानानि । १०० ५२ सौधर्मदेवस्थानतदिन्द्रवर्णनम् । १०१ ५३, १५८* ईशानादिदेवस्थानवर्णनं, सामानिकात्मरक्षकविमानसंख्या च । १०६ ५४, १७९* सिद्धानां स्थानं तन्नाम- स्वरूपे, अपतिघातसंस्थानावगाहना-	स्पर्शलक्षणसुखपर्यायाश्च । ११३ ॥ इति द्वितीयं स्थानपदम् ॥ १८१* दिगादीनि द्वाराणि (२७) । ११४ ५५ जीवानां दिगनुपातेनारूपबहुत्वम् । ११५ ५६ पृथिव्यप्तेजोवाय्वादीनां सिद्धान्तानां दिगनुपातेनारूपबहुत्वम् । ११९ ५७ नारकतिर्यग्देवसिद्धानां पञ्चाष्टगति- रूपेणारूपबहुत्वम् । १२० ५८ सैकादी(७)न्द्रियारूपबहुत्वं, ओष- पर्याप्तापर्याप्तविशेषितं च । १२२ ५९ सकायपृथ्वीकायाद्य(८)रूपबहुत्वम् । १२४ ६० सूक्ष्मसूक्ष्मपृथ्व्यादितत्पर्याप्ता-	पर्याप्तारूपबहुत्वम् । १२६ ६१ बादरवादरपृथ्व्याद्यरूपबहुत्वम् । १२९ ६२ सूक्ष्मसूक्ष्मपृथ्व्यादिवादरवादरपृथ्व्या- द्यरूपबहुत्वम् । १३४ ६४ सयोगमनोयोग्या(५)द्यरूपबहुत्वम् ६३, सद्देवस्त्रीवेदाद्यरूपबहुत्वम् ६४ । १३५ ६६ सकषाययादि ६५सलेइयाद्यरूप- बहुत्वम् ६६ । १३६ ६८ सम्यग्दृष्ट्यादि ६७ आभिनि- बोधिकज्ञान्याद्यरूपबहुत्वम् ६८ । १३७ ७२ चक्षुर्दर्शन्यादि ६९ संयतादि ७०- साकारोपयुक्तादि ७१ आहारका- द्यरूपबहुत्वम् ७२ । १३८	प्रज्ञा० बृहद्- विषयानुक्रमः ॥ ४९ ॥
श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ४९ ॥	४६, १४९* सवर्णनभवनपत्यादिदक्षि- णोत्तरतद्भेदस्थानानि । ९५ ४७ सवर्णनव्यन्तरस्थानानि । ९७ ४९, १५४* पिशाचतद्भेदस्थानानि ४८, १५१,* अनपर्णिकादिस्थानानि ४९, १५४* । ९८ ५० ज्योतिष्कस्थानानि । ९९ ५१ वैमानिकस्थानानि । १०० ५२ सौधर्मदेवस्थानतदिन्द्रवर्णनम् । १०१ ५३, १५८* ईशानादिदेवस्थानवर्णनं, सामानिकात्मरक्षकविमानसंख्या च । १०६ ५४, १७९* सिद्धानां स्थानं तन्नाम- स्वरूपे, अपतिघातसंस्थानावगाहना-	स्पर्शलक्षणसुखपर्यायाश्च । ११३ ॥ इति द्वितीयं स्थानपदम् ॥ १८१* दिगादीनि द्वाराणि (२७) । ११४ ५५ जीवानां दिगनुपातेनारूपबहुत्वम् । ११५ ५६ पृथिव्यप्तेजोवाय्वादीनां सिद्धान्तानां दिगनुपातेनारूपबहुत्वम् । ११९ ५७ नारकतिर्यग्देवसिद्धानां पञ्चाष्टगति- रूपेणारूपबहुत्वम् । १२० ५८ सैकादी(७)न्द्रियारूपबहुत्वं, ओष- पर्याप्तापर्याप्तविशेषितं च । १२२ ५९ सकायपृथ्वीकायाद्य(८)रूपबहुत्वम् । १२४ ६० सूक्ष्मसूक्ष्मपृथ्व्यादितत्पर्याप्ता-	पर्याप्तारूपबहुत्वम् । १२६ ६१ बादरवादरपृथ्व्याद्यरूपबहुत्वम् । १२९ ६२ सूक्ष्मसूक्ष्मपृथ्व्यादिवादरवादरपृथ्व्या- द्यरूपबहुत्वम् । १३४ ६४ सयोगमनोयोग्या(५)द्यरूपबहुत्वम् ६३, सद्देवस्त्रीवेदाद्यरूपबहुत्वम् ६४ । १३५ ६६ सकषाययादि ६५सलेइयाद्यरूप- बहुत्वम् ६६ । १३६ ६८ सम्यग्दृष्ट्यादि ६७ आभिनि- बोधिकज्ञान्याद्यरूपबहुत्वम् ६८ । १३७ ७२ चक्षुर्दर्शन्यादि ६९ संयतादि ७०- साकारोपयुक्तादि ७१ आहारका- द्यरूपबहुत्वम् ७२ । १३८	प्रज्ञा० बृहद्- विषयानुक्रमः ॥ ४९ ॥					

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ				
	[उपांगसूत्र-४ “प्रज्ञापना”]				
	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)				
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए ‘संवृत्तिक आगम सुत्ताणि’	श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ५० ॥	७८ भाषकादि७३परीक्षादि७४पर्याप्तदि- ७५सूक्ष्मादि७६संज्ञादि७७- भव्याद्यल्पबहुत्वम् ७८ । १४० ७९ धर्मास्तिकायादीनां द्रव्यप्रदेशोभयैर- ल्पबहुत्वम्, (कालस्य/नन्तगुण- त्वसिद्धिः) । १४३ ८० चरमाचरमाल्पबहुत्वम् । ” ८१ जीवपुद्गलाद्वासर्वद्रव्यप्रदेशपर्याया- ल्पबहुत्वम् । १४४ ८२ ऊर्ध्वलोकादिक्षेत्रानुपातेनाल्प- १४५ ८३ क्षेत्रानुपातेन पञ्चदशगत्याल्प- १४८ ८४ क्षेत्रानुपातेन भवनपतितद्देवीव्यन्त- राद्यल्पबहुत्वम् । १५१	८५ ऊर्ध्वादिक्षेत्रेष्वेकेन्द्रियतदपर्याप्त- पर्याप्तानामल्पबहुत्वम् । १५२ ८६ ऊर्ध्वादिषु द्वीन्द्रियादितदपर्याप्त- पर्याप्तानामल्पबहुत्वम् । १५३ ८७ ऊर्ध्वादिषु पञ्चेन्द्रियतदपर्याप्त- पर्याप्तानामल्प- १५४ ८८ ऊर्ध्वादिषु पृथ्व्यादीनामोघिकापर्याप्त- पर्याप्तानामल्प- १५५ ८९ ऊर्ध्वादिषु त्रसानामोघिकापर्याप्त- पर्याप्तानामल्प- ” ९० आयुर्वन्धकादी(१४)नामल्प- १५८ ९१ त्रैलोक्यादिषूर्ध्वादिषु च पुद्गलानां द्रव्याणां चाल्पबहुत्वम् । १६० ९२ परमाणुसंख्याऽसंख्याऽनन्तपदे-	शानामेकादिप्रदेशावगाढानामेकादि- सम्यक्स्थितिकानामेकादिगुणकालका- दीनां पुद्गलानामल्पबहुत्वम् । १६१ ९३ गर्भव्युत्क्रान्तिकादि(९८)सर्वजीवा- ल्पबहुत्वम् (महादण्डकः) । १६८ ॥ इति तृतीयं बहुवक्तव्यतापदम् ॥ ९४ ओघिकरत्नप्रभादितदपर्याप्त- पर्याप्तानारकाणां परापरे स्थिती । १७० १०१ देवदेवीसप्रभेदभवनपत्यादि- देवदेवीनामपर्याप्तपर्याप्तानां परापरे स्थिती २५ ओघिकसूक्ष्मवादर- पृथिव्यादीनां ९६ द्वीन्द्रियादीनां ९७ ओघिकसंमूर्च्छिमगर्भजजल- चरचतुष्पदोरोभुजपरिसर्पस्वचराणां	प्रज्ञा० बृहद्- विषयानुक्रमः ॥ ५० ॥

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [उपांगसूत्र-४ “प्रज्ञापना”]								
प्रत सूत्रांक यहां देखिए दीप क्रमांक के लिए देखिए ‘संवृत्तिक आगम सुत्ताणि’	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) <table border="0" style="width: 100%; border-collapse: collapse;"> <tr> <td style="width: 15%; vertical-align: top; padding: 10px;"> श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ५१ ॥ </td><td style="width: 45%; vertical-align: top; padding: 10px;"> ९८ ओषसमूर्च्छिमर्गभजनराणां ९९ व्यन्तरदेवदेवीनां १००- ज्योतिष्कतदेवीचन्द्रादितदेवीनां परापरे स्थिती १०१। १७६ १०२ वैमानिकदे देवीसौधमेशान- देवपरिगृहीतापरिगृहीतदेवीसन- त्कुमारादिदेवानां परापरे स्थिती। १७८ ॥ इति चतुर्थं स्थितिपदम् ॥ १०३ जीवनारकासुरकुमारादीनां पर्यायाः। १७९ १०४ नारकाणां द्रव्यप्रदेशावगाहना- स्थितिकालादिवर्णादिमत्यादिज्ञान- दर्शनपर्यायैरल्पबहुत्वम्। १८४ </td><td style="width: 45%; vertical-align: top; padding: 10px;"> ११० असुरादीनां १०१ पृथ्व्यादीनां १०६ द्वीन्द्रियादीनां १०७ पञ्चेन्द्रियतिरश्चां १०८ मनुष्याणां १०९ व्यन्तरादीनां द्रव्यादिभिः पर्यायाः ११०। १८६ १११ नारकाणां जघन्यमध्यमोत्कृष्टा- वगाहनास्थितिकालादिज्ञानादि- पर्यायैरल्पबहुत्वम्। १८९ ११७ असुरादीनां ११२ पृथ्व्यादीनां- ११३ द्वीन्द्रियादीनां ११४ पञ्चेन्द्रियतिरश्चां ११५ मनुष्याणां ११६ व्यन्तरादीनां पर्यायाणां तुल्याधिकत्वादि ११७। १९६ १२१ अरूप्यजीवभेदाः (१०) ११८ </td><td style="width: 15%; vertical-align: top; padding: 10px;"> रूप्यजीवपर्यायाः ११९ पर- माण्वादीनां द्रव्यप्रदेशावगाहना- स्थितिकालादिपर्यायैस्तुल्याहीन- त्वादि १२०, जघन्यमध्यमोत्कृष्ट- प्रदेशानां पर्यायतुल्याधिकत्वादि १२१। २०४ ॥ इति पञ्चमं विशेषपदम् ॥ १२२, १८२* नारकादिसिद्ध्यन्तगतीना- मुत्पादोद्वर्त्तनाविरहः। २०५ १२४ रत्नप्रभाद्यसुरादिपृथ्व्यादिवि- न्द्रियादिसमूर्च्छिमर्गभजतिर्यग्- नरज्योतिष्कसौधर्मादिसिद्धोत्पाद- विरहः १२३ रत्नप्रभादिषूद्वर्त्तनाया विरहः १२४। २०७ </td><td style="width: 10%; vertical-align: top; padding: 10px;"> प्रज्ञा० बृहद्- विषयानुक्रमः ॥ ५१ </td></tr> </table>				श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ५१ ॥	९८ ओषसमूर्च्छिमर्गभजनराणां ९९ व्यन्तरदेवदेवीनां १००- ज्योतिष्कतदेवीचन्द्रादितदेवीनां परापरे स्थिती १०१। १७६ १०२ वैमानिकदे देवीसौधमेशान- देवपरिगृहीतापरिगृहीतदेवीसन- त्कुमारादिदेवानां परापरे स्थिती। १७८ ॥ इति चतुर्थं स्थितिपदम् ॥ १०३ जीवनारकासुरकुमारादीनां पर्यायाः। १७९ १०४ नारकाणां द्रव्यप्रदेशावगाहना- स्थितिकालादिवर्णादिमत्यादिज्ञान- दर्शनपर्यायैरल्पबहुत्वम्। १८४	११० असुरादीनां १०१ पृथ्व्यादीनां १०६ द्वीन्द्रियादीनां १०७ पञ्चेन्द्रियतिरश्चां १०८ मनुष्याणां १०९ व्यन्तरादीनां द्रव्यादिभिः पर्यायाः ११०। १८६ १११ नारकाणां जघन्यमध्यमोत्कृष्टा- वगाहनास्थितिकालादिज्ञानादि- पर्यायैरल्पबहुत्वम्। १८९ ११७ असुरादीनां ११२ पृथ्व्यादीनां- ११३ द्वीन्द्रियादीनां ११४ पञ्चेन्द्रियतिरश्चां ११५ मनुष्याणां ११६ व्यन्तरादीनां पर्यायाणां तुल्याधिकत्वादि ११७। १९६ १२१ अरूप्यजीवभेदाः (१०) ११८	रूप्यजीवपर्यायाः ११९ पर- माण्वादीनां द्रव्यप्रदेशावगाहना- स्थितिकालादिपर्यायैस्तुल्याहीन- त्वादि १२०, जघन्यमध्यमोत्कृष्ट- प्रदेशानां पर्यायतुल्याधिकत्वादि १२१। २०४ ॥ इति पञ्चमं विशेषपदम् ॥ १२२, १८२* नारकादिसिद्ध्यन्तगतीना- मुत्पादोद्वर्त्तनाविरहः। २०५ १२४ रत्नप्रभाद्यसुरादिपृथ्व्यादिवि- न्द्रियादिसमूर्च्छिमर्गभजतिर्यग्- नरज्योतिष्कसौधर्मादिसिद्धोत्पाद- विरहः १२३ रत्नप्रभादिषूद्वर्त्तनाया विरहः १२४। २०७	प्रज्ञा० बृहद्- विषयानुक्रमः ॥ ५१
श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ५१ ॥	९८ ओषसमूर्च्छिमर्गभजनराणां ९९ व्यन्तरदेवदेवीनां १००- ज्योतिष्कतदेवीचन्द्रादितदेवीनां परापरे स्थिती १०१। १७६ १०२ वैमानिकदे देवीसौधमेशान- देवपरिगृहीतापरिगृहीतदेवीसन- त्कुमारादिदेवानां परापरे स्थिती। १७८ ॥ इति चतुर्थं स्थितिपदम् ॥ १०३ जीवनारकासुरकुमारादीनां पर्यायाः। १७९ १०४ नारकाणां द्रव्यप्रदेशावगाहना- स्थितिकालादिवर्णादिमत्यादिज्ञान- दर्शनपर्यायैरल्पबहुत्वम्। १८४	११० असुरादीनां १०१ पृथ्व्यादीनां १०६ द्वीन्द्रियादीनां १०७ पञ्चेन्द्रियतिरश्चां १०८ मनुष्याणां १०९ व्यन्तरादीनां द्रव्यादिभिः पर्यायाः ११०। १८६ १११ नारकाणां जघन्यमध्यमोत्कृष्टा- वगाहनास्थितिकालादिज्ञानादि- पर्यायैरल्पबहुत्वम्। १८९ ११७ असुरादीनां ११२ पृथ्व्यादीनां- ११३ द्वीन्द्रियादीनां ११४ पञ्चेन्द्रियतिरश्चां ११५ मनुष्याणां ११६ व्यन्तरादीनां पर्यायाणां तुल्याधिकत्वादि ११७। १९६ १२१ अरूप्यजीवभेदाः (१०) ११८	रूप्यजीवपर्यायाः ११९ पर- माण्वादीनां द्रव्यप्रदेशावगाहना- स्थितिकालादिपर्यायैस्तुल्याहीन- त्वादि १२०, जघन्यमध्यमोत्कृष्ट- प्रदेशानां पर्यायतुल्याधिकत्वादि १२१। २०४ ॥ इति पञ्चमं विशेषपदम् ॥ १२२, १८२* नारकादिसिद्ध्यन्तगतीना- मुत्पादोद्वर्त्तनाविरहः। २०५ १२४ रत्नप्रभाद्यसुरादिपृथ्व्यादिवि- न्द्रियादिसमूर्च्छिमर्गभजतिर्यग्- नरज्योतिष्कसौधर्मादिसिद्धोत्पाद- विरहः १२३ रत्नप्रभादिषूद्वर्त्तनाया विरहः १२४। २०७	प्रज्ञा० बृहद्- विषयानुक्रमः ॥ ५१					

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [उपांगसूत्र-४ “प्रज्ञापना”]				
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए ‘संवृत्तिक आगम सुत्ताणि’	श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ५२ ॥	१२६ नारकादीनां सान्तरनिरन्तर- मुत्पत्तिः १२५ तथोद्वर्त्तना १२६। २०८ १२८ उरपाते नारकरत्नप्रभाद्यसुरादि- सिद्धान्तानामेकसमयसंख्या १२७, उद्वर्त्तनायां संख्या १२८। २०९ १३७, १८४* सप्रभेदनारकाणां १२९, १८४* असुरादीनां १३० पृथ्व्यादीनां १३१ द्वीन्द्रिया- दीनां १३२ पञ्चेन्द्रियतिरश्चां १३३ मनुष्याणां १३४ व्यन्त- राणां १३५ ज्योतिष्काणां १३६ सप्रभेदवैमानिकानां चागति- विचारः १३७। २१४	१४३ नारकाणां १३८ असुरादीनां १३९ पृथ्व्यादीनां १४० पञ्चेन्द्रियतिरश्चां १४१ मनु- ष्याणां १४२ व्यन्तरादीनां च गतिः १४३। २१६ १४४ नारकादीनां परभवयुर्वन्धकालः। २१७ १४५ जातिनामनिधत्तायुष्कादीना- माकर्षाः। २१८ ॥ इति षष्ठं व्युत्क्रान्तिपदम् ॥ १४६ नारकासुरादिपृथिव्यादिमनुष्य- व्यन्तरज्योतिष्कसप्रभेदवैमा- निकामुच्छ्रित्यान्तरम्। २२१ ॥ इति सप्तममुच्छ्रितिसप्तपदम् ॥	१४२ आहारादि(१०) सञ्ज्ञा, नार- कादीनां १४७ बाहुल्यसन्तति- भ्यां सञ्ज्ञोपयुक्तविचारः, गति- भेदेन सञ्ज्ञाऽरूपबहुत्वं च। २२४ ॥ इत्यष्टमं सञ्ज्ञापदम् ॥ १५० शीतोष्णमिश्रा योनयः १४९ नारकासुरपृथ्वीसंमूर्च्छिमगर्भज- तिर्यग्मनुष्यव्यन्तरादीनां योनिः शीतयोन्याद्यरूपबहुत्वं च १५०। २२६ १५१ नारकादीनां सचित्तादियोनिः। २२७ १५२ नारकादीनां संवृतादियोनिः। ,, १५३ कूर्मोन्नतादियोनिविचारः। २२८ ॥ इति नवमं योनिपदम् ॥	प्रज्ञा० बृहद्- विषयानुक्रमः ॥ ५२ ॥

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [उपांगसूत्र-४ “प्रज्ञापना”]				
	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)				
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए ‘संवृत्तिक आगम सुत्ताणि’	श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ५३ ॥	१५४ रत्नप्रभादीनां चरमाचरमत्वादि- विचारः । २३० १५६ रत्नप्रभादीनामचरमचरमतदन्त- प्रदेशानां द्रव्यप्रदेशोभयार्थैरल्प- बहुत्वं १५५ अलोकस्य लोका- लोकयोरचरमचरमाद्यल्पबहुत्वम् । १५६ । २३२ १५८, १९०* परमाणोश्चरमाचरमा- वक्तव्यतादिभङ्गाः (२६) १५७, द्विप्रदेशादीनां चरमत्वादि १९०* १५८ । २४२ १५९ संस्थानतत्संख्याप्रदेशमानावगाहाः, तच्चरमत्वादि च । २४४ १६०, १९१* जीवनारकादीनां गति-	स्थितिभवादिः (११) चरमा- चरमत्वं च । २४६ ॥ इति दशमं चरमाचरमपदम् ॥ १६१ अवधारिण्याः भाषायाः सत्यादिता । २४८ १६३ गोमृगादिख्याज्ञापन्यादिभाषा २५२ १६३ बालादीनां भाषाऽऽहारयोर- ज्ञानेऽपि प्रवृत्तिः । २५३ १६४ एकबहुवचनस्त्रीपुंनपुंसकादिभाषा । २५५ १६५, १९७* भाषाया आदिप्रवह- संस्थानान्ताः, पर्याप्तापर्याप्तभेदाः, सत्यमृषामिश्रव्यवहारभाषाभेदाः (१०-१०-१०-१२) । २५९	१६७ जीवादीनां भाषकाभाषकविचारः १६६ जीवादीनां सत्यामृषादि- भाषत्वम् । १६७ । २६० १६९, १९८* भाषाया द्रव्यावगाह- स्थितिवर्णादिस्वप्नावगाहादि- विचारः १६८, १९८*, सान्तर- निरन्तरभिन्नाभिन्नग्रहणविचारः १६९ । २६६ १७३ खण्डप्रतराद्या(५)भेदाः, तद- ल्पत्वादि १७०, नारकादीनां स्थितादिभाषापुद्गलग्रहण १७१ सत्यादितया ग्रहणनिसर्गौ १७२ एकद्विवचनादि(१६)वचनानि १७३ । २६७	प्रज्ञा० बृहद्- विषयानुक्रमः ॥ ५३ ॥

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [उपांगसूत्र-४ “प्रज्ञापना”]				
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए ‘संवृत्तिक आगम सुत्ताणि’	श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ५४ ॥	१७५ भाषाचतुष्केऽपि संयतासंयत- योराराधनाविराधने १७४ सत्या- दिभाषकारूपबहुत्वम् १७५। २६८ ॥ इत्येकादशं भाषापदम् ॥ १७६ शरीरभेदाः नारकादीनां शरीर- संख्या च। २७० १७७ औदारिकादीनां बद्धमुक्ताल्प- बहुत्वम्। २७४ १७८ नारकाणामौदारिकादिषु बद्धमुक्त- विचारः। २७२ १८० असुरादीनां १७९ पृथ्व्यादीनां द्वीन्द्रियादीनां मनुष्याणां व्यन्तरा- दीनां चौदारिकादिबद्धत्वादि- विचारः १८०। २८४	॥ इति द्वादशं शरीरपदम् ॥ १८२ जीवाजीवपरिणामौ १८१ गत्यादि- (१०)परिणामाः १८२। २८६ १८३ गतीन्द्रियकषायलेझयायोगो- पयोगज्ञानदर्शनचारित्रवेदभेदा- स्तैर्नारकादिविचारश्च। २८७ १८२, २००* बन्धनगतिस्थानादयो- (१०)ऽजीवपरिणामाः १८४ स्निग्धरूक्षबन्धस्पृशदस्पृशद्- त्यादिपरिणामविचारः १८२ २००*। २८२ ॥ इति त्रयोदशं परिणामपदम् ॥ १८८ नारकादीनां क्रोधादयः १८६ क्रोधादीनामात्मपरोभयनि-	प्रतिष्ठितत्वं, क्षेत्रवास्तुशरीरो- पधिभ्य उत्पत्तिः १८७ अन- न्तानुबन्ध्याद्या भेदाः १८८। २९१ १९०, २०१* आभोगानाभोगोप- शान्तानुपशान्तक्रोधादयः १८९ क्रोधादिभिरष्टकर्मचयोपचयबन्धो- दयोदीरणवेदननिर्जराः १९०, २०१। २९२ ॥ इति चतुर्दशं कषायपदम् ॥ २०३* संस्थानबाहल्यादिसहस्रहणीगाथे १०३। २९३ १९१ इन्द्रियाणां भेदसंस्थानबाहल्य- पृथक्त्वप्रदेशविचारः १९१। २९५ १९२ इन्द्रियाणामवगाहतदल्पबहुत्वे	प्रज्ञा० बृहद्- विषयानुक्रमः ॥ ५४ ॥

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [उपांगसूत्र-४ “प्रज्ञापना”]				
	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)				
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए ‘संवृत्तिक आगम सुत्ताणि’	श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ५५ ॥	कर्मशुभादिगुणारूपबहुत्वं च । २१६ १९३ नारकासुरादिभेदेनेन्द्रियतत्संस्था- नाद्विचारः २१८ १९४ स्पृष्टादिशब्दादिश्रवणादि- विचारः । २१९ १९५ श्रोत्रादीनां जघन्योत्कृष्टविषय- मानं (आत्माङ्गुलेनेन्द्रियमानं चक्षुषः प्रकाश्ये) । ३०२ १९६ लोकव्यापिचरमनिर्जरापुद्गला- नामभेदाद्यज्ञानेऽप्याहरणम् । ३०४ १९७ आदर्शादिषु स्वप्रतिभागप्रेक्षणम् । ३०५ १९८, २०६* आवेष्टितविततयोः समा- नोऽवगाहः, आकाशस्य धर्मास्ति-	कायादिभिर्न्यासिः, जम्बूद्वीपदे- र्धर्मादिभिः, द्वीपसमुद्रपरिपाटी, लोकालोकयोर्धर्मादिस्पर्श- विचारः । ३०८ ॥ इन्द्रियपदे प्रथमोद्देशः ॥ २०७-८* इन्द्रियोपचयनिर्वर्तनादिसङ्ग्र- हगाथे । ३०९ १९९ नारकादीनामिन्द्रियोपचयनिर्वर्तन- तत्समयमानलब्ध्युपयोगाद्धा- तज्जघन्योत्कृष्टारूपबहुत्वा- वगाहना । ३१० २०० अपायेहाऽवग्रहभेदाः नारकादीनां तत्संख्या च । ३११ २०१ नारकादीनां भूतानागतबद्धमुक्ते-	न्द्रियसंख्या । ३१७ ॥ द्वितीयोद्देशः, इन्द्रियपदं १५ ॥ २०२ सत्यमनआदयः प्रयोगाः(१५)। ३१९ २०३ नारकादीनां प्रयोगसंख्या । ३२० २०४ जीवादिषु सत्यमनआदिप्रयोग- भङ्गाः । ३२५ २०५ प्रयोग(१५)तद्बन्धच्छेदोपपात- (५)विहायो(१७)गतिभेदाः (स्पृष्टदस्पृष्टदुषसम्पद्यमानादि विहायोगतौ । ३३० ॥ इति षोडशं प्रयोगपदम् ॥ २०७, २०९* (लेश्याया योगपरिणाम- त्वसिद्धिः) आहारसमशरीरादि- संग्रहणी २०९* नारकाणां समा-	प्रज्ञा० बृहद्- विषयानुक्रम ॥ ५५ ॥

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमः [उपांगसूत्र-४ “प्रज्ञापना”]				
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए ‘संवृत्तिक आगम सुत्ताणि’	श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ५६ ॥	हारशरीरोच्छ्वासविचारः २०६ समकर्मवर्णलेख्यावेदनाविचारः २०७। ३३४ २०८ नारकाणामारम्भक्यादिक्रिया- ऽऽयुक्तातसमत्वविचारश्च । ३३२ २०९ असुरकुमारादीनां समाहारत्वादि- विचारः । ३३८ २१० पृथ्व्यादीनामपि, पञ्चेन्द्रिये संयतासंयतानां तु क्रियात्रयम् । ३४० २११ मनुष्याणां समाहारत्वादि, अप्र- मत्ते मायाप्रत्ययैव । ३४१ २१२ व्यन्तरादीनामपि समाहारत्वादि । ,, २१३ नारकादीनां लेख्याभेदे समा- हारत्वादिचिन्ता । ३४३	॥ इति लेख्यापदे प्रथमोद्देशकः ॥ २१६ षड् लेख्याः २१४, नारका- दीनां लेख्याविभागः २१५ सलेख्यादीनामरूपबहुत्वम् २१६। ३४५ २१८ कृष्णलेख्यादिनारकाणामरूप- बहुत्वं २१७ तिर्यगेकेन्द्रिय- पृथ्व्यसेजोवायुवनस्पतिद्वि- त्रिचतुःपञ्चेन्द्रियसंमूर्च्छिमगर्भज- तत्त्वादिदुभयसंमूर्च्छिमस्त्रीगर्भज- स्त्रीसंमूर्च्छिमगर्भजस्त्रीपञ्चेन्द्रिय- तिर्यक्स्त्रीतिर्यक्स्त्रीलेख्याऽरूप- बहुत्वम् । ३४७ २२१ मनुष्याणामपि २१९ देवदेवी-	भवनपतिज्योतिष्कवैमानिक- देवदेवीतदुभयसर्वेषामरूपबहु- त्वं २२० कृष्णादीनां लेख्यानाम- रूपमहद्विकत्वम् २२१ । ३५२ ॥ इति लेख्यापदे द्वितीयोद्देशकः ॥ २२२ नारकादीनामुत्पादोद्घातनयोः सम- लेख्यत्वं न पृथ्व्यादिषु । ३५५ २२३ नारकाणां लेख्याभेदेनावधि- भेदः । ३५७ २२४ लेख्यासु मत्यादिज्ञानविचारः । ३५८ ॥ इति लेख्यापदे तृतीयोद्देशः ॥ २२५, २१०* लेख्यापरिणामवर्ण- रसादि(१४)द्वारसंग्रहणी २१०* कृष्णादेर्नीलादितया परिणामश्च । ३६०	प्रज्ञा० बृहद्- विषयानुक्रमः

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [उपांगसूत्र-४ “प्रज्ञापना”]				
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए ‘संवृत्तिक आगम सुत्ताणि’	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)				
श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ५८ ॥	क्षराश्रद्धाने रुचिनिन्दयोरभावे- ऽपि मिथ्यादृष्टित्वम्) । ३८९ २४२ ओषमत्यादिज्ञान्यज्ञानिस्थितिः । ३९० २४३ चक्षुर्दर्शन्यादिस्थितिः (विभङ्गे ऽवधिदर्शनविचारः) । ३९१ २४५ संयतादिस्थितिः २४४, साकारो- पयोगादिस्थितिः २४५ । ३९२ २४६ छद्मस्थकेवलयाद्याहारकानाहारक- स्थितिः । ३९३ २५४ भाषकाभाषकयोः २४७काय- संसारपरीत्तापरीत्तादीनां २४८ पर्यासादीनां २४९सूक्ष्मादीनां २५०सञ्ज्ञादीनां २५१भव्या-	दीनां २५२धर्मास्तिकायादीनां २५३चरमाचरमयोश्च कायस्थितिः २५४ । ३९५ इत्यष्टादश कायस्थितिपदम् ॥ २५५ जीवनारकासुरादिषु दृष्टिविचारः । ३९६ ॥ इत्येकोनविंशतिः सम्यक्त्वपदम् ॥ २५८, २५३* नारकाद्यन्तक्रियाऽन- न्तरादि(१०)द्वारागाथा २५३* जीवनारकादीनामन्तक्रियाविचारः २५६नारकादीनामनन्तरपरम्परा- गतानां २५७अनन्तरागतनार- कादीनामेकसमयान्तक्रिया- विचारश्चः २५८ । ३९८	२५९ उद्धृतनारकाणां नरतिर्यग्गत्यो- धर्मश्रवणश्रद्धाज्ञानशीलाद्यवधि- संयतत्वादिप्राप्तिविचारः । ४०० २६० असुरादीनामुद्धर्तना । ” २६१ पृथिव्यादीनां परत्र धर्मश्रवणादि । ४०१ २६३ द्वीन्द्रियादीनां २६२पञ्चेन्द्रिय- तिरश्चाम् । २६३ । ४०२ २६४ रत्नप्रभादिनारकाणां तीर्थकृत्वा- न्तक्रियामनःपर्यवादिनामप्रश्नः । ४०३ २६५ रत्नप्रभादिनारकादीनां चक्रिबल- वासुदेवसेनापत्यादित्वलाभ- विचारः । ४०४	प्रज्ञा० बृहद्- विषयानुक्रमः ॥ ५८ ॥	

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [उपांगसूत्र-४ “प्रज्ञापना”]								
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए ‘संवृत्तिक आगम सुत्ताणि’	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) <table border="0" style="width: 100%; border-collapse: collapse;"> <tr> <td style="width: 25%; vertical-align: top; padding: 5px;"> श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ५९ ॥ </td><td style="width: 25%; vertical-align: top; padding: 5px;"> २६६ असंयतभग्यद्रव्यदेवादि(१४) जघन्योत्कृष्टोपपातविचारः । ४०६ २६७ असंयतभग्योर्भेदात्पबहुत्व- विचारः । ४०७ ॥ इति विंशतितममन्तक्रियापदम् ॥ २६८, २१४* विधिसंस्थानप्रमाणादि- (१०)द्वारसंग्रहगाथा २१४* शरीरभेदाः, औदारिकस्वामि- विचारश्च । ४१० २६९ एकेन्द्रियाद्यौदारिकशरीरस्य संस्थानम् । ४१२ २७०, २१६* एकेन्द्रियपृथिव्याद्य- पर्याप्तपर्याप्तभेदेनौदारिकाव- गाहनामानम् २१६*, २७० । ४१४ </td><td style="width: 25%; vertical-align: top; padding: 5px;"> २७१ वैक्रियशरीरस्य स्वामिनः । ४१६ २७२ तस्य संस्थानम् । ४१७ २७३ वायुकायरत्नप्रभादिनारकासुर- कुमारादीनां वैक्रियमानं(प्रस्तुत- भेदेन) । ४२३ २७४ आहारकस्य स्वामिसंस्थाना- वगाहनाः, (मनःपर्यादादिलब्धि- विचारः) । ४२६ २७५ तैजसस्य स्वामिसंस्थाने २७२, जीवैकेन्द्रियपृथिव्यादिनामनु- त्तरान्तानां मरणसमुद्भाते तैज- साऽवगाहना, कर्मणस्य स्वाम्यादि च २७६ । ४३१ २७७ औदारिकादीनां चयोपचयदिशः, </td><td style="width: 25%; vertical-align: top; padding: 5px;"> परस्परं संवेधश्च । ४३३ २७९ तेषां द्रव्यप्रदेशोभयैरल्पबहुत्वं २७८, जघन्योत्कृष्टावगाहनाऽ ल्पबहुत्वम् २७९ । ४३५ ॥ इत्येकविंशतितमं शरीरपदम् ॥ २८० कायिक्यादिक्रियाणामनुपरतादि- भेदाः । ४३६ २८१ हिंसामृषावादादिभिः षड्जीव- निकायादिषु क्रिया । ४३९ २८३ प्राणातिपातादीनां सप्तविधवन्धा- दिविचारः २८२, ज्ञानावरणीया- दिवन्धे क्रियात्रयादिविचारः, जीवनारकादीनां जीवनारकादि- भ्यस्त्रिक्रियत्वादिविचारः(गुण- </td><td style="width: 10%; vertical-align: top; padding: 5px;"> प्रज्ञा० बृहद्- विषयानुक्रमः ॥ ५९ ॥ </td></tr> </table>				श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ५९ ॥	२६६ असंयतभग्यद्रव्यदेवादि(१४) जघन्योत्कृष्टोपपातविचारः । ४०६ २६७ असंयतभग्योर्भेदात्पबहुत्व- विचारः । ४०७ ॥ इति विंशतितममन्तक्रियापदम् ॥ २६८, २१४* विधिसंस्थानप्रमाणादि- (१०)द्वारसंग्रहगाथा २१४* शरीरभेदाः, औदारिकस्वामि- विचारश्च । ४१० २६९ एकेन्द्रियाद्यौदारिकशरीरस्य संस्थानम् । ४१२ २७०, २१६* एकेन्द्रियपृथिव्याद्य- पर्याप्तपर्याप्तभेदेनौदारिकाव- गाहनामानम् २१६*, २७० । ४१४	२७१ वैक्रियशरीरस्य स्वामिनः । ४१६ २७२ तस्य संस्थानम् । ४१७ २७३ वायुकायरत्नप्रभादिनारकासुर- कुमारादीनां वैक्रियमानं(प्रस्तुत- भेदेन) । ४२३ २७४ आहारकस्य स्वामिसंस्थाना- वगाहनाः, (मनःपर्यादादिलब्धि- विचारः) । ४२६ २७५ तैजसस्य स्वामिसंस्थाने २७२, जीवैकेन्द्रियपृथिव्यादिनामनु- त्तरान्तानां मरणसमुद्भाते तैज- साऽवगाहना, कर्मणस्य स्वाम्यादि च २७६ । ४३१ २७७ औदारिकादीनां चयोपचयदिशः,	परस्परं संवेधश्च । ४३३ २७९ तेषां द्रव्यप्रदेशोभयैरल्पबहुत्वं २७८, जघन्योत्कृष्टावगाहनाऽ ल्पबहुत्वम् २७९ । ४३५ ॥ इत्येकविंशतितमं शरीरपदम् ॥ २८० कायिक्यादिक्रियाणामनुपरतादि- भेदाः । ४३६ २८१ हिंसामृषावादादिभिः षड्जीव- निकायादिषु क्रिया । ४३९ २८३ प्राणातिपातादीनां सप्तविधवन्धा- दिविचारः २८२, ज्ञानावरणीया- दिवन्धे क्रियात्रयादिविचारः, जीवनारकादीनां जीवनारकादि- भ्यस्त्रिक्रियत्वादिविचारः(गुण-	प्रज्ञा० बृहद्- विषयानुक्रमः ॥ ५९ ॥
श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ५९ ॥	२६६ असंयतभग्यद्रव्यदेवादि(१४) जघन्योत्कृष्टोपपातविचारः । ४०६ २६७ असंयतभग्योर्भेदात्पबहुत्व- विचारः । ४०७ ॥ इति विंशतितममन्तक्रियापदम् ॥ २६८, २१४* विधिसंस्थानप्रमाणादि- (१०)द्वारसंग्रहगाथा २१४* शरीरभेदाः, औदारिकस्वामि- विचारश्च । ४१० २६९ एकेन्द्रियाद्यौदारिकशरीरस्य संस्थानम् । ४१२ २७०, २१६* एकेन्द्रियपृथिव्याद्य- पर्याप्तपर्याप्तभेदेनौदारिकाव- गाहनामानम् २१६*, २७० । ४१४	२७१ वैक्रियशरीरस्य स्वामिनः । ४१६ २७२ तस्य संस्थानम् । ४१७ २७३ वायुकायरत्नप्रभादिनारकासुर- कुमारादीनां वैक्रियमानं(प्रस्तुत- भेदेन) । ४२३ २७४ आहारकस्य स्वामिसंस्थाना- वगाहनाः, (मनःपर्यादादिलब्धि- विचारः) । ४२६ २७५ तैजसस्य स्वामिसंस्थाने २७२, जीवैकेन्द्रियपृथिव्यादिनामनु- त्तरान्तानां मरणसमुद्भाते तैज- साऽवगाहना, कर्मणस्य स्वाम्यादि च २७६ । ४३१ २७७ औदारिकादीनां चयोपचयदिशः,	परस्परं संवेधश्च । ४३३ २७९ तेषां द्रव्यप्रदेशोभयैरल्पबहुत्वं २७८, जघन्योत्कृष्टावगाहनाऽ ल्पबहुत्वम् २७९ । ४३५ ॥ इत्येकविंशतितमं शरीरपदम् ॥ २८० कायिक्यादिक्रियाणामनुपरतादि- भेदाः । ४३६ २८१ हिंसामृषावादादिभिः षड्जीव- निकायादिषु क्रिया । ४३९ २८३ प्राणातिपातादीनां सप्तविधवन्धा- दिविचारः २८२, ज्ञानावरणीया- दिवन्धे क्रियात्रयादिविचारः, जीवनारकादीनां जीवनारकादि- भ्यस्त्रिक्रियत्वादिविचारः(गुण-	प्रज्ञा० बृहद्- विषयानुक्रमः ॥ ५९ ॥					

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [उपांगसूत्र-४ “प्रज्ञापना”]				
	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)				
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए ‘संवृत्तिक आगम सुत्ताणि’	श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ६१ ॥	॥ इति षड्विंशतितमं कर्मवेदवन्धपदम् ॥ ३०३ ज्ञानावरणीयादिवेदने सप्ताष्टविध- वेदनम् । ४९८ ॥ इति सप्तविंशतितमं कर्मवेदवेदपदम् ॥ ३०५, २१९* सचित्ताहारार्थादि(८)- द्वाराणि २१८*, एकेन्द्रियशरीर- लोमाहारमनोभक्षिद्वाराणि २१९*, नारकाणां सचित्ताद्याहारविचारः, आभोगानाभोगाहारकालः, अनन्त- प्रदेशिकादिपुद्गलैराहारः, आहारो- च्छ्वासयोरभीक्ष्णं, कादाचित्कत्वे असंख्येयभागे, आहारोऽनन्त- भागे, आस्वादः, दुःखतयापरिणामः ३०४, असुरादिस्तनितकुमारान्ता-	नामाहारार्थादि ३०५ । ५०५ ३०६ पृथ्व्यादिनामाहारार्थतद्दिगादि । ५०६ ३०७ द्वीन्द्रियादिमनुष्यव्यन्तरज्योति- ष्कसौधर्मादीनामाहारार्थादि । ५०८ ३०८ नारकादीनामेकेन्द्रियाद्याहार- लोमाद्याहारविचारश्च । ५१० ३०९ नारकादीनामोजोमनोभक्षितादि- विचारः । ५११ ॥ इत्याहारपदे प्रथमोद्देशकः ॥ २२०* आहाराभक्ष्यादि(१३)द्वाराणि । ५१२ ३१० जीवनारकादीनामाहारानाहारक- त्वभङ्गाः, भव्यसङ्ख्यादिजीवा- दीनामाहारकत्वादिभङ्गाः । ५१६ ३११ लेइयादृष्टिसंयतसकषाय्यादिष्वा-	हारकत्वादिभङ्गाः । ५२० ३१२ ज्ञान्यज्ञानिसयोगसवेदसशरीरा- हारादिपर्यासादिष्वाहारकत्वा- दिभङ्गाः । ५२४ ॥ इत्याहारपदे द्वितीयोद्देशकः ॥ ॥ इत्यष्टाविंशतितममाहारपदम् ॥ ३१३ नारकासुरादीनां साकारानाका- रोपयोगसंख्या । ५२८ ॥ इत्येकोनत्रिंशत्तममुपयोगपदम् ॥ ३१४ नारकादीनां साकारा(६)ऽनाकार- (३)पश्यत्ताविचारः । ५३१ ३१५ केवलिन एकसमयेन ज्ञानदर्शना- भावः । ५३३ ॥ इति त्रिंशत्तमं पश्यत्तापदम् ॥	प्रज्ञा १ बृहद्- विषयानुक्रमः <

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [उपांगसूत्र-४ “प्रज्ञापना”]									
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए ‘संवृत्तिक आगम सुत्ताणि’	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) <table border="0" style="width: 100%; border-collapse: collapse;"> <tr> <td style="width: 15%; vertical-align: top; border-right: 1px solid black; padding: 5px;"> श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ६२ ॥ </td> <td style="width: 35%; vertical-align: top; border-right: 1px solid black; padding: 5px;"> ३१६, २२१* जीवनारकादीनां सञ्ज्ञि- त्वादिविचारः । ५३४ ॥ इत्येकत्रिंशत्तमं सञ्ज्ञिपदम् ॥ ३१७, २२२* जीवनारकादीनां संयत- त्वादिविचारः । ५३६ ॥ इति द्वात्रिंशत्तमं संयतपदम् ॥ ३१८, २२३* भेदविषयसंस्थानादि- (१०) द्वारगाथा २२३*, भव- प्रत्ययक्षायोपशमिकस्वामिनः । ५३९ ३१९ नारकादीनामनुत्तरान्तानामवधि- क्षेत्रमानम् । ५४१ ३२१ नारकादीनामवधेराकारः ३२० नारकादीनामन्तरदेशानुगामि- वर्द्धमानप्रतिपात्यवस्थितेतरा- </td> <td style="width: 35%; vertical-align: top; border-right: 1px solid black; padding: 5px;"> वधिविचारः ३२१ । ५४३ ॥ इति त्रयस्त्रिंशत्तममवधिपदम् ॥ ३२२, २२५* अनन्तरागताहारादि- (७) द्वारगाथे २२५*, नारकादी- नामनन्तराहारादिवैक्रियान्तस्य विचारः । ५४४ ३२३ नारकादीनामाहारपुद्गलज्ञाना- ज्ञानादि । ५४७ ३२२ देवानां देवीतत्परिचारणादि ३२४ कायस्पर्शरूपशब्दमनः- प्रवीचारविचारः ३२५ इच्छा- मनसउपशान्तिः ३२६ देवशुक्र- पुद्गलपरिणामः ३२७ स्पर्शादि- प्रवीचाररीतिः ३२८ कायप्रवीचारा- </td> <td style="width: 35%; vertical-align: top; padding: 5px;"> दीनामलम्बचहुत्वम् ३२९ । ५५३ ॥ इति चतुस्त्रिंशत्तमं प्रवीचारपदम् ॥ ३३०, २२७* शीतद्रव्यशरीरादि- द्वारगाथे २२७*, नारकादीनां शीतादिद्रव्यादिशरीरादिसातादि- दुःखादिवेदना । ५५६ ३३१ नारकादीनामौपक्रमिकयादि- वेदनाविचारः । ५५७ ३३२ नारकादीनां निदाऽनिदा वेदनाविचारः ५५८ ॥ इति पञ्चत्रिंशत्तमं वेदनापदम् ॥ २२८* वेदनादिसमुद्घातास्तत्स्वामिनश्च । ५६१ ३३३ वेदनादिसमुद्घातकालमानं, </td> <td style="width: 10%; vertical-align: top; padding: 5px;"> प्रज्ञा० बृहद्- विषयानुक्रमः ॥ ६२ ॥ </td> </tr> </table>					श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ६२ ॥	३१६, २२१* जीवनारकादीनां सञ्ज्ञि- त्वादिविचारः । ५३४ ॥ इत्येकत्रिंशत्तमं सञ्ज्ञिपदम् ॥ ३१७, २२२* जीवनारकादीनां संयत- त्वादिविचारः । ५३६ ॥ इति द्वात्रिंशत्तमं संयतपदम् ॥ ३१८, २२३* भेदविषयसंस्थानादि- (१०) द्वारगाथा २२३*, भव- प्रत्ययक्षायोपशमिकस्वामिनः । ५३९ ३१९ नारकादीनामनुत्तरान्तानामवधि- क्षेत्रमानम् । ५४१ ३२१ नारकादीनामवधेराकारः ३२० नारकादीनामन्तरदेशानुगामि- वर्द्धमानप्रतिपात्यवस्थितेतरा-	वधिविचारः ३२१ । ५४३ ॥ इति त्रयस्त्रिंशत्तममवधिपदम् ॥ ३२२, २२५* अनन्तरागताहारादि- (७) द्वारगाथे २२५*, नारकादी- नामनन्तराहारादिवैक्रियान्तस्य विचारः । ५४४ ३२३ नारकादीनामाहारपुद्गलज्ञाना- ज्ञानादि । ५४७ ३२२ देवानां देवीतत्परिचारणादि ३२४ कायस्पर्शरूपशब्दमनः- प्रवीचारविचारः ३२५ इच्छा- मनसउपशान्तिः ३२६ देवशुक्र- पुद्गलपरिणामः ३२७ स्पर्शादि- प्रवीचाररीतिः ३२८ कायप्रवीचारा-	दीनामलम्बचहुत्वम् ३२९ । ५५३ ॥ इति चतुस्त्रिंशत्तमं प्रवीचारपदम् ॥ ३३०, २२७* शीतद्रव्यशरीरादि- द्वारगाथे २२७*, नारकादीनां शीतादिद्रव्यादिशरीरादिसातादि- दुःखादिवेदना । ५५६ ३३१ नारकादीनामौपक्रमिकयादि- वेदनाविचारः । ५५७ ३३२ नारकादीनां निदाऽनिदा वेदनाविचारः ५५८ ॥ इति पञ्चत्रिंशत्तमं वेदनापदम् ॥ २२८* वेदनादिसमुद्घातास्तत्स्वामिनश्च । ५६१ ३३३ वेदनादिसमुद्घातकालमानं,	प्रज्ञा० बृहद्- विषयानुक्रमः ॥ ६२ ॥
श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ६२ ॥	३१६, २२१* जीवनारकादीनां सञ्ज्ञि- त्वादिविचारः । ५३४ ॥ इत्येकत्रिंशत्तमं सञ्ज्ञिपदम् ॥ ३१७, २२२* जीवनारकादीनां संयत- त्वादिविचारः । ५३६ ॥ इति द्वात्रिंशत्तमं संयतपदम् ॥ ३१८, २२३* भेदविषयसंस्थानादि- (१०) द्वारगाथा २२३*, भव- प्रत्ययक्षायोपशमिकस्वामिनः । ५३९ ३१९ नारकादीनामनुत्तरान्तानामवधि- क्षेत्रमानम् । ५४१ ३२१ नारकादीनामवधेराकारः ३२० नारकादीनामन्तरदेशानुगामि- वर्द्धमानप्रतिपात्यवस्थितेतरा-	वधिविचारः ३२१ । ५४३ ॥ इति त्रयस्त्रिंशत्तममवधिपदम् ॥ ३२२, २२५* अनन्तरागताहारादि- (७) द्वारगाथे २२५*, नारकादी- नामनन्तराहारादिवैक्रियान्तस्य विचारः । ५४४ ३२३ नारकादीनामाहारपुद्गलज्ञाना- ज्ञानादि । ५४७ ३२२ देवानां देवीतत्परिचारणादि ३२४ कायस्पर्शरूपशब्दमनः- प्रवीचारविचारः ३२५ इच्छा- मनसउपशान्तिः ३२६ देवशुक्र- पुद्गलपरिणामः ३२७ स्पर्शादि- प्रवीचाररीतिः ३२८ कायप्रवीचारा-	दीनामलम्बचहुत्वम् ३२९ । ५५३ ॥ इति चतुस्त्रिंशत्तमं प्रवीचारपदम् ॥ ३३०, २२७* शीतद्रव्यशरीरादि- द्वारगाथे २२७*, नारकादीनां शीतादिद्रव्यादिशरीरादिसातादि- दुःखादिवेदना । ५५६ ३३१ नारकादीनामौपक्रमिकयादि- वेदनाविचारः । ५५७ ३३२ नारकादीनां निदाऽनिदा वेदनाविचारः ५५८ ॥ इति पञ्चत्रिंशत्तमं वेदनापदम् ॥ २२८* वेदनादिसमुद्घातास्तत्स्वामिनश्च । ५६१ ३३३ वेदनादिसमुद्घातकालमानं,	प्रज्ञा० बृहद्- विषयानुक्रमः ॥ ६२ ॥						

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [उपांगसूत्र-४ “प्रज्ञापना”]				
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ६३ ॥	नारकादीनां समुद्धातसंख्या च। ५६३ ३३४ नारकादीनामतीतानागतवेदना- समुद्धाताः। ५६५ ३३५ वेदनाऽऽहारककेवलिसमुद्धाताः। ५६७ ३३६ नारकादेनारकादित्वेऽतीता- नागतवेदनासमुद्धातमानम्। ५६९ ३३७ तथैव कषायसमुद्धातमानम्। ५७२ ३३८ सर्वदण्डकानां सर्वदण्डकेषु समुद्धातमानम्। ५७५ ३३९ नारकादीनां नारकादित्वे वेद- नादिसमुद्धातमानम्। ५७८ ३४१ समुद्धातानां जीवानामल्प-	बहुत्वं ३४०, समुद्धातानां नारकादीनामल्पबहुत्वं। ३४१ ५८१ ३४२ नारकादीनामतीतानागतक्रोधादि- समुद्धातसंख्या। ५८८ ३४३ क्रोधादिसमुद्धातालप्यबहुत्वं। ५९० ३४४ नारकादीनां छायास्थिकसमुद्धात- संख्या। ” ३४५ वेदनादिसमुद्धातजविश्वव्या- प्तपुद्गलेभ्यस्त्रिक्रियत्वादि, मारणा- न्तिकसमुद्धातव्याप्तिश्च। ५९६ ३४७ वैक्रियसमुद्धाते क्षेत्रकालमानं, तैजससमुद्धाते, आहारके च ३४६, क्षेत्रव्याप्तिक्रिये, लोकव्या-	पञ्चरूपनिर्जरापुद्गलज्ञाना- ज्ञानादि ३४७। ६०१ ३५०, २३०* केवलिनः समुद्धात- कारणं ३४८, २३०*, आव- र्जोत्करणकालमानं ३४९, केवलि- समुद्धातस्तत्र योगश्च ३५०। ६०५ ३५१ कृतसमुद्धातस्य मनोवचनकाय- योगाः (न षण्मासी शेषे)। ६०७ ३५२, २३१* योगनिरोधादिरिति, सिद्धस्वरूपं च। ६११ ॥ इति षट्त्रिंशत्तमं समुद्धातपदम् ॥ ॥ प्रशस्तिः ॥ ६११ ॥ इति श्रीप्रज्ञापनाया बृहद्विषयानुक्रमः ॥ ॥ ६३ ॥	प्रज्ञा० बृहद्- विषयानुक्रमः

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [उपांगसूत्र-५+६ “सूर्यप्रजप्ति+चन्द्रप्रजप्ति”]						
	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)						
	[आगम-१६+१७] उपांग-५+६ “सूर्य+चन्द्र-प्रजप्ति”						
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए ‘संवृत्तिक आगम सुत्ताणि’	श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ६४ ॥	अथ श्रीसूर्यप्रज्ञप्तेर्विषयसूचिः	८ मुहूर्त्तवृद्ध्यपवृद्धी । ९ दिवसरात्रिविषये मु० । १० सूर्यमण्डलानि । ११ सूर्यमण्डलविषयः । १२ दक्षिणार्द्धमण्डलसंस्थितिः । १३ उत्तरार्द्धमण्डलसंस्थितिः । १४ चीर्णचरणम् । १५ अन्तरपरिमाणं विप्रतिपत्तयश्च (६) । १६ १७ अवगाहनामानम् (५) । १८ विकम्पनमानविप्रतिपत्तयः (५) । १९ मण्डलसंस्थानविप्रतिपत्तयः (८) । २० मण्डलविष्कम्भविप्रतिपत्तयः (३) ।	९ १० ” ११ २१ ” ” २५ ३१ ३२ ३६ ३८	२१ सूर्यस्य तिर्यक्परिभ्रमः २२ भेदघातकर्णकले विप्रतिपत्तयः (२) । २३ मुहूर्त्तगतिः विप्रतिपत्तयश्च (४) । ॥ इति द्वितीयं प्राभृतम् ॥ २४ प्रकाश्यक्षेत्रपरिमाणम् । ॥ इति तृतीयं प्राभृतम् ॥ २५ प्रकाशसंस्थानम् । ॥ इति चतुर्थं प्राभृतम् ॥ २६ लेख्याप्रतिघातः । ॥ इति पञ्चमं प्राभृतम् ॥ २७ ओजः संस्थितिः । ॥ इति षष्ठं प्राभृतम् ॥ २८ सूर्यावारकः ।	४५ ४८ ५२ ६३ ६७ ७६ ७९ ८३	सूर्य० विषयसूचिः <

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [उपांगसूत्र-५+६ “सूर्यप्रजप्ति+चन्द्रप्रजप्ति”]									
	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)									
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए ‘संवृत्तिक आगम सुत्ताणि’	श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ६५ ॥	॥ इति सप्तमं प्राभृतम् ॥ २९ उदयसंस्थितिः । ॥ इत्यष्टमं प्राभृतम् ॥ ३० पौरुषीच्छायाप्रमाणम् । ३१ पौ० निर्वर्त्तनम् । ॥ इति नवमं प्राभृतम् ॥ ३२ योगस्वरूपे नक्षत्राणां विचारः । ३३ नक्षत्रे मुहूर्त्तमानं चन्द्रस्य । ३४ नक्षत्राणां सूर्येण योगः । ३५ पूर्वादिभागाः । ३६ योगस्यादिः । ३७ कुलोपकुलानि । ३८ पौर्णिमादिनक्षत्रम् । ३९ कुलोपकुलाधिकारः ।	८४ ९२ ९३ ९२ १०० १०१ १०४ १०३ १११ , १२०	४० सन्निपातो द्वयोश्चन्द्रं प्रति । ४१ नक्षत्राणामाकाराः । ४२ नक्षत्रेषु तारामानम् । ४३ नेतृणि नक्षत्राणि । ४४ चन्द्रमार्गाः । ४५ चन्द्रमण्डलमार्गः । ४६ नक्षत्रदेवाः । ४७, १६-१८* मुहूर्त्तनामानि । ४८, १९-२२* दिनरात्रिनामानि । ४९ तिथिभेदाः । ५० नक्षत्रगोत्राणि । ५१ नक्षत्रभोजनानि । ५२ युगे सूर्यचन्द्रचाराः । ५३, २३-२४* मासनामानि ।	१२८ १२९ १३१ १३२ १३७ १३८ १४६ , १४७ १४८ १५० १५१ १५२ १५३	५४ संवत्सराः । ५५ नक्षत्रसंवत्सराः । ५६ युगसंवत्सराः । ५७ प्रमाणसंवत्सराः । ५८, २५-२९* लक्षणसंवत्सराः । ५९ नक्षत्रद्वाराणि । ६० नक्षत्रयोगादि । ६१-६२ नक्षत्रसीमाविष्कम्भादि । ६३ पूर्णिमामावास्याः । ६४ सूर्यस्य पौर्णमासीदेशस्थितिः । ६५ चन्द्रस्य पौर्णमासीदेशस्थितिः । ६६ सूर्यचन्द्रयोर्युनक्ति । ६७ नक्षत्रेण सूर्यचन्द्रयोर्युनक्ति । ६८ अमावास्यानक्षत्राणि ।	१५३ , १५४ १६८ १७१ १७३ १७५ १७७ १८० १८१ १८२ , १८५ १९०	सूर्य० विषयसूचिः <		

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [उपांगसूत्र-५+६ “सूर्यप्रजप्ति+चन्द्रप्रजप्ति”]								
प्रत सूत्रांक यहां देखिए दीप क्रमांक के लिए देखिए ‘संवृत्तिक आगम सुत्ताणि’	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) <table border="0" style="width: 100%; border-collapse: collapse;"> <tr> <td style="width: 15%; vertical-align: top;"> श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ६६ ॥ </td><td style="width: 25%; vertical-align: top;"> ६९ तादृगन्यनक्षत्रयोगः । १९४ ७० चन्द्रादेः सर्वत्र समयोगिता । १९७ ॥ इति दशमं प्राभृतम् ॥ ७१ संवत्सराणामाद्यंतौ । १९८ ॥ इति एकादशमं प्राभृतम् ॥ ७२ नक्षत्रादिवर्षरात्रिन्दिवसुहूर्त्तमानम् । २०१ ७३ नोयुगयुगरात्रिन्दिवसुहूर्त्तमानम् । २०६ ७४ सूर्यादीनामाद्यन्तसाम्यम् । २०७ ७५, ३०* ऋतुन्यूनधिकरात्र्यधिकारः । २०९ ७६ आवृत्तयः । २१९ ७७ हेमन्य आवृत्तयः । २२८ ७८ वृषभानुजाताद्या योगाः । २३३ </td><td style="width: 25%; vertical-align: top;"> ॥ इति द्वादशमं प्राभृतम् ॥ ७९ चन्द्रमसौ वृद्ध्यपवृद्धी । २३४ ८० पूर्णिमामावास्यान्तरं । २३६ ८१ चन्द्रायनमण्डलचारः । २३८ ॥ इति त्रयोदशमं प्राभृतम् ॥ ८२ ज्योत्स्नाप्रमाणम् । २४४ ॥ इति चतुर्दशमं प्राभृतम् ॥ ८३-८४ चन्द्रादीनां गतितारतम्यम् । २४५ ८५ नक्षत्रादिमासैश्चन्द्रादीनां चारः । २५० ८६ चन्द्रादीनामहोरात्रमण्डलयुगगत्यः । २५३ ॥ इति पञ्चदशमं प्राभृतम् ॥ ८७ ज्योत्स्नालक्षणम् । २५५ </td><td style="width: 25%; vertical-align: top;"> इति षोडशमं प्राभृतम् ॥ ८८ च्यवनोपपातौ । २५७ ॥ इति सप्तदशमं प्राभृतम् ॥ ८९ चन्द्रसूर्याशुचत्वम् । २५८ ९० तारकस्याणुतादि । २५९ ९१ चन्द्रस्य ग्रहपरिवारः । ” ९२ अवाधाचाराः । ” ९३ अभ्यन्तरचाराः । ” ९४ चन्द्रादेः संस्थानमायामादिवाहिनश्च । २५२ ९५ अल्पेतरगतिऋद्धी । ” ९६ तारान्तरम् । २५३ ९७ चन्द्रादिदेवी । ” ९८ ज्योतिष्कस्थितिः । २६६ </td><td style="width: 10%; vertical-align: top;"> सूर्यो विषयसूचिः ॥ ६६ ॥ </td></tr> </table>				श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ६६ ॥	६९ तादृगन्यनक्षत्रयोगः । १९४ ७० चन्द्रादेः सर्वत्र समयोगिता । १९७ ॥ इति दशमं प्राभृतम् ॥ ७१ संवत्सराणामाद्यंतौ । १९८ ॥ इति एकादशमं प्राभृतम् ॥ ७२ नक्षत्रादिवर्षरात्रिन्दिवसुहूर्त्तमानम् । २०१ ७३ नोयुगयुगरात्रिन्दिवसुहूर्त्तमानम् । २०६ ७४ सूर्यादीनामाद्यन्तसाम्यम् । २०७ ७५, ३०* ऋतुन्यूनधिकरात्र्यधिकारः । २०९ ७६ आवृत्तयः । २१९ ७७ हेमन्य आवृत्तयः । २२८ ७८ वृषभानुजाताद्या योगाः । २३३	॥ इति द्वादशमं प्राभृतम् ॥ ७९ चन्द्रमसौ वृद्ध्यपवृद्धी । २३४ ८० पूर्णिमामावास्यान्तरं । २३६ ८१ चन्द्रायनमण्डलचारः । २३८ ॥ इति त्रयोदशमं प्राभृतम् ॥ ८२ ज्योत्स्नाप्रमाणम् । २४४ ॥ इति चतुर्दशमं प्राभृतम् ॥ ८३-८४ चन्द्रादीनां गतितारतम्यम् । २४५ ८५ नक्षत्रादिमासैश्चन्द्रादीनां चारः । २५० ८६ चन्द्रादीनामहोरात्रमण्डलयुगगत्यः । २५३ ॥ इति पञ्चदशमं प्राभृतम् ॥ ८७ ज्योत्स्नालक्षणम् । २५५	इति षोडशमं प्राभृतम् ॥ ८८ च्यवनोपपातौ । २५७ ॥ इति सप्तदशमं प्राभृतम् ॥ ८९ चन्द्रसूर्याशुचत्वम् । २५८ ९० तारकस्याणुतादि । २५९ ९१ चन्द्रस्य ग्रहपरिवारः । ” ९२ अवाधाचाराः । ” ९३ अभ्यन्तरचाराः । ” ९४ चन्द्रादेः संस्थानमायामादिवाहिनश्च । २५२ ९५ अल्पेतरगतिऋद्धी । ” ९६ तारान्तरम् । २५३ ९७ चन्द्रादिदेवी । ” ९८ ज्योतिष्कस्थितिः । २६६	सूर्यो विषयसूचिः ॥ ६६ ॥
श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ६६ ॥	६९ तादृगन्यनक्षत्रयोगः । १९४ ७० चन्द्रादेः सर्वत्र समयोगिता । १९७ ॥ इति दशमं प्राभृतम् ॥ ७१ संवत्सराणामाद्यंतौ । १९८ ॥ इति एकादशमं प्राभृतम् ॥ ७२ नक्षत्रादिवर्षरात्रिन्दिवसुहूर्त्तमानम् । २०१ ७३ नोयुगयुगरात्रिन्दिवसुहूर्त्तमानम् । २०६ ७४ सूर्यादीनामाद्यन्तसाम्यम् । २०७ ७५, ३०* ऋतुन्यूनधिकरात्र्यधिकारः । २०९ ७६ आवृत्तयः । २१९ ७७ हेमन्य आवृत्तयः । २२८ ७८ वृषभानुजाताद्या योगाः । २३३	॥ इति द्वादशमं प्राभृतम् ॥ ७९ चन्द्रमसौ वृद्ध्यपवृद्धी । २३४ ८० पूर्णिमामावास्यान्तरं । २३६ ८१ चन्द्रायनमण्डलचारः । २३८ ॥ इति त्रयोदशमं प्राभृतम् ॥ ८२ ज्योत्स्नाप्रमाणम् । २४४ ॥ इति चतुर्दशमं प्राभृतम् ॥ ८३-८४ चन्द्रादीनां गतितारतम्यम् । २४५ ८५ नक्षत्रादिमासैश्चन्द्रादीनां चारः । २५० ८६ चन्द्रादीनामहोरात्रमण्डलयुगगत्यः । २५३ ॥ इति पञ्चदशमं प्राभृतम् ॥ ८७ ज्योत्स्नालक्षणम् । २५५	इति षोडशमं प्राभृतम् ॥ ८८ च्यवनोपपातौ । २५७ ॥ इति सप्तदशमं प्राभृतम् ॥ ८९ चन्द्रसूर्याशुचत्वम् । २५८ ९० तारकस्याणुतादि । २५९ ९१ चन्द्रस्य ग्रहपरिवारः । ” ९२ अवाधाचाराः । ” ९३ अभ्यन्तरचाराः । ” ९४ चन्द्रादेः संस्थानमायामादिवाहिनश्च । २५२ ९५ अल्पेतरगतिऋद्धी । ” ९६ तारान्तरम् । २५३ ९७ चन्द्रादिदेवी । ” ९८ ज्योतिष्कस्थितिः । २६६	सूर्यो विषयसूचिः ॥ ६६ ॥					

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [उपांगसूत्र-५+६ “सूर्यप्रजप्ति+चन्द्रप्रजप्ति”]		
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए ‘संवृत्तिक आगम सुत्ताणि’	श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ६७ ॥	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) ९९ चन्द्रसूर्ययोरल्पबहुत्वम् । २६६ । ॥ इत्यष्टादशं प्राभृतम् ॥ १००, ३१-८७* चन्द्रसूर्यादिपरिमाणम् । २६८ १०१ पुष्करोदादयः । २८२ ॥ इत्येकोनविंशतितमं प्राभृतम् ॥ १०२ चन्द्रादीनामनुभावः । २८५ १०३ राहुक्रिया । २८७ १०४ चन्द्रादित्यान्वर्थः । २९१ १०५ कामभोगाः । ” १०६, ८८-१६* अष्टाशीतिग्रहाः । २९४ १०७, ९७-१०२* शास्त्रोपसंहारः । २९५ ॥ इति विंशतितमं प्राभृतम् ॥ ॥ इति श्रीसूर्यप्रज्ञप्तेर्विषयसूचिः ॥ सूर्य० विषयसूचि- बृहद्विषया- नुक्रमश्च ॥ ६७ ॥	

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [उपांगसूत्र-५+६ “सूर्यप्रजप्ति+चन्द्रप्रजप्ति”]			
	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)			
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ६७ ॥	अथ श्रीसूर्यप्रज्ञमेर्षद्विविषयानुक्रमः श्रीवीरश्रुतकेवलजिनवचनानां नमः स्कारादि, निर्युक्तेष्व्युच्छेदात्सूत्रवृत्ति- प्रतिज्ञा । १ १ मिथिलामाणिभद्रचैत्यजितशत्रुधारिणी- समवसरणपर्वन्निर्गमधर्मकथाद्यति- देशः । ३ २ इन्द्रभूतिवर्णनातिदेशः । ६ ३, १-५* मण्डलादि(२०)प्राभृतार्थाधि- कारः । ७ ७, ६-१५* मुहूर्तवृद्ध्यपवृद्ध्यादि(८)- प्राभृतप्राभृताधिकाराः ४, षडाद्याः प्रथमप्राभृतप्रतिपत्तयः ५, उदयास्त- मनाद्या द्वितीये प्रतिपत्तयः ६, आवलिका-	मुहूर्त्ताग्रादीनि(२२)दशमे प्राभृत- प्राभृतानि ७ । ९ ८ मुहूर्त्तवृद्ध्यपवृद्धी । ११ १० सर्वमण्डलचाराहोरात्रमानं ९, सकृद्- द्विर्वा मण्डलचारः १० । ११ ११ अष्टादशादिमुहूर्त्ता, रात्रिदिनमानम् । १६ ॥ इति प्रथमे प्रथमं प्राभृतप्राभृतम् ॥ १२ दक्षिणाद्धमण्डलचारे दिनरात्रिमानं १२, उत्तराद्धमण्डलचारेऽपि १३ । २१ ॥ इति प्रथमे द्वितीयं प्रा० प्राभृतम् ॥ १४ अर्द्धसंपूर्णमण्डलचीर्णचरणम् । २४ ॥ इति प्रथमे तृतीयं प्रा० प्राभृतम् ॥ १५ सूर्ययोरन्तरे प्रतिपत्तिषट्कं स्थितपक्ष-	सूर्य० विषयसूचि- बृहद्विषया- नुक्रमश्च

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [उपांगसूत्र-५+६ “सूर्यप्रजप्ति+चन्द्रप्रजप्ति”]				
	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)				
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए ‘संवृत्तिक आगम सुत्ताणि’	श्रीउपां० विषयानुक्रमे ॥ ६८ ॥	२८ श्व, प्रवेशनिर्गमयोर्दिनरात्रिमानम् । २८ ॥ इति प्रथमे चतुर्थं प्रा०प्राभृतम् ॥ १६ द्वीपसमुद्रवगाहे प्रतिपत्तिपञ्चकम् । ३१ १७ स्थितपक्षः । ३१ ॥ इति प्रथमे पञ्चमं प्रा०प्राभृतम् ॥ १८ दिनरात्र्योर्विकम्पने प्रतिपत्तिसप्तकं स्थितपक्षश्च । ३५ ॥ इति प्रथमे षष्ठं प्रा०प्राभृतम् ॥ १९ मण्डलसंस्थितौ प्रतिपत्त्यष्टकम् । ३७ ॥ इति प्रथमे सप्तमं प्रा०प्राभृतम् ॥ २० मण्डलपदायामादौ प्रतिपत्तित्रयं, स्थितपक्षः, तत्कारणं च । ४४ ॥ इति प्रथमे अष्टमं प्राभृतप्राभृतम् ॥ इति प्रथमं प्राभृतम् ॥	२१ सूर्यस्य तिर्यगतौ प्रतिपत्त्यष्टकं, स्थितपक्षश्च । ४८ ॥ इति द्वितीये प्रथमं प्रा०प्राभृतम् ॥ २२ मण्डलान्तरसङ्क्रमे प्रतिपत्तिद्वयं, भेदघातकरणकलाभ्याम् । ५० ॥ इति द्वितीये द्वितीयं प्रा०प्राभृतम् ॥ २३ प्रतिमुहूर्त्तं सूर्यगतौ प्रतिपत्तिचतुष्कं स्थितपक्षश्च (मुहूर्त्तगतिदृष्टिपथप्राप्ति- विचारः) । ६३ ॥ इति द्वितीये तृतीयं प्रा०प्राभृतम् ॥ ॥ इति द्वितीयं प्राभृतम् ॥ २४ चन्द्रसूर्यप्रकाश्यक्षेत्रे प्रतिपत्तिद्वा- दशकं स्थितपक्षश्च । ६६ ॥ इति तृतीयं प्राभृतम् ॥	२५ चन्द्रसूर्यतत्तापक्षेत्रसंस्थित्योः प्रति- पत्तिषोडशकं स्थितपक्षश्च । ६७ ॥ इति चतुर्थं प्राभृतम् ॥ २६ सूर्यलेश्याप्रतिघाते विंशतिः प्रतिपत्तयः स्थितपक्षश्च । ७९ ॥ इति पञ्चमं प्राभृतम् ॥ २७ ओजःसंस्थितौ पञ्चविंशतिः प्रति- पत्तयः, स्थितपक्षश्च, त्रिंशत् मुहूर्त्तानवस्थिता, षण्मासीभ्यां वृद्धिहानी । ८३ ॥ इति षष्ठं प्राभृतम् ॥ २८ सूर्यप्रकाश्ये विंशतिः प्रतिपत्तयः स्थितपक्षश्च । ८४ ॥ इति सप्तमं प्राभृतम् ॥	सूर्यपञ्चसे- बृहद्- विषयानुक्रमः ॥ ६८ ॥

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [उपांगसूत्र-५+६ “सूर्यप्रजप्ति+चन्द्रप्रजप्ति”]				
	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)				
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए ‘संवृत्तिक आगम सुत्ताणि’	श्रीउपांगादि विषयानुक्रमे ॥ ६९ ॥	२९ उदयसंस्थितौ प्रतिपत्तित्रयं, स्थित- पक्षश्च, मन्दरपूर्वपश्चिमोत्तरदक्षिणासु दिनरात्रिमानत्वादिप्रथमसमयादि- विचारः । ९२ ॥ इत्यष्टमं प्राभृतम् ॥ ३० पौरुषीच्छाये प्रतिपत्तित्रयं, छिन्न- लेइयासंमूर्च्छनादीनां स्थितपक्षः । ९४ ३१ पौरुषीपादे प्रतिपत्तयः पञ्चविंशतिः, सातिरेकैकोनषष्ठौ स्थितपक्षः, स्तम्भादि(२५)छायाभेदाः । ९९ ॥ इति नवमं प्राभृतम् ॥ ३२ नक्षत्रावलिकायोगे प्रतिपत्तिपञ्चकं, अभिजिदादियोगे स्थितपक्षः । १०० ॥ इति दशमे प्रथमं प्रा० प्राभृतम् ॥	३३ नक्षत्राणां चन्द्रेण योगकालः । १०२ ३४ नक्षत्राणां सूर्येण योगकालः । १०४ ॥ इति दशमे द्वितीयं प्रा० प्राभृतम् ॥ ३५ नक्षत्राणां पूर्वपश्चात्तक्तोभयभागाः । १०५ ॥ इति दशमे तृतीयं प्रा० प्राभृतम् ॥ ३६ श्रावणाद्यभिजिदादिदिनमानम् । ११० ॥ इति दशमे चतुर्थं प्रा० प्राभृतम् ॥ ३७ नक्षत्रेषु कुलोपकुलोभयानि । १११ ॥ इति दशमे पञ्चमं प्रा० प्राभृतम् ॥ ३८ श्रावणादिपौर्णमासीनक्षत्राणि । १२० ३९ श्रावणादिपौर्णमासीकुलोपकुलो- भयानि, अमावास्यानक्षत्रकुला-	दीनि । १२८ ॥ इति दशमे षष्ठं प्रा० प्राभृतम् ॥ ४० पूर्णिमाऽमावास्यानक्षत्रैक्यविचारः । १२९ ॥ इति दशमे सप्तमं प्रा० प्राभृतम् ॥ ४१ अभिजिदादीनां संस्थानानि । १३० ॥ इति दशमे अष्टमं प्राभृतप्रःभृतम् ॥ ४२ अभिजिदादीनां तारकसंख्या । १३१ ॥ इति दशमे नवमं प्रा० प्राभृतम् ॥ ४३ श्रावणादिमासेषु नक्षत्रदिनपौरुषी- मानं । १३७ ॥ इति दशमे दशमं प्रा० प्राभृतम् ॥ ४४ नक्षत्राणां चन्द्रेण दक्षिणोत्तरप्रमर्द- योगाः । १३८	सूर्यपञ्चमे- बृहद्- विषयानुक्रमः

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [उपांगसूत्र-५+६ “सूर्यप्रजप्ति+चन्द्रप्रजप्ति”]				
	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)				
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए ‘संवृत्तिक आगम सुत्ताणि’	श्रीउपांगादि- विषयानुक्रमे ॥ ७० ॥	४५ चन्द्रमण्डलानि नक्षत्रैर्युक्तान्ययुक्तानि च । १४५ ॥ इति दशमे एकादशं प्रा०प्राभृतम् ॥ ४६ नक्षत्राणां देवताः । १४६ ॥ इति दशमे द्वादशं प्रा०प्राभृतम् ॥ ४७, १८* रौद्रादिमुहूर्त्तनामानि । १४७ ॥ इति दशमे त्रयोदशं प्रा०प्राभृतम् ॥ ४८, २२* दिवसरात्रिनामानि । १४८ ॥ इति दशमे चतुर्दशं प्रा०प्राभृतम् ॥ ४९ दिवसरात्रितिथिनामानि । १५० ॥ इति दशमे पञ्चदशं प्रा०प्राभृतम् ॥ ५० अभिजिदादीनां गोत्राणि । १५१ इति दशमे षोडशं प्रा०प्राभृतम् ॥ ५१ नक्षत्रभोजनानि । १५२	॥ इति दशमे सप्तदशं प्रा०प्राभृतम् ॥ ५२ युगे नक्षत्रमासादिसंख्या । १५३ ॥ इति दशमे अष्टादशं प्रा०प्राभृतम् ॥ ५३, २४* अभिनन्दादिमासनामानि । १५३ ॥ इति दशमे एकोनविंशतितमं प्रा०प्राभृतम् ॥ ५५ नक्षत्रादयः संवत्सराः ५४, नक्षत्रादि- संवत्सरमासाः ५२ । १५४ ५६ चन्द्रादिसंवत्सरास्तत्पर्वाणि च । १५८ ५७ प्रमाणसंवत्सरे नक्षत्रचन्द्रादि- वर्षभेदाः । १७१ ५८, २९* लक्षणसंवत्सरभेदाः, नक्षत्र- संवत्सरादीनां लक्षणानि, शनैश्चर- संवत्सरभेदाः । १७३	॥ इति दशमे विंशतितमं प्रा० प्राभृतम् ॥ ५९ नक्षत्राणां द्वारेषु प्रतिपत्तिपञ्चकं, अभिजिदादीनां पूर्वादिद्वारेण स्थित- पक्षः । १७२ ॥ इति दशमे एकविंशतितमं प्रा०प्राभृतम् ॥ ६० जम्बूद्वीपे सूर्यचन्द्रनक्षत्राणां मानं नक्षत्राणां योगमानं च । १७६ ६२ नक्षत्राणां सीमविष्कम्भः ६१, प्रातः- सन्ध्यादियोगश्च ६२ । १८० ६३ द्वाषष्टिपूर्णिमाचन्द्रयोगाः । १८१ ६६ द्वाषष्टिपूर्णिमासूर्ययोगाः ६४, द्वाषष्ट्य- मावास्याचन्द्रयोगाः ६५, द्वाषष्ट्य- मावास्यासूर्ययोगाः ६६ । १८५ ६७ द्वाषष्टिपूर्णिमानक्षत्राणि । १९०	सूर्यपञ्चसे- बृहद्विषया- नुक्रमः

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [उपांगसूत्र-५+६ “सूर्यप्रजप्ति+चन्द्रप्रजप्ति”]								
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए ‘संवृत्तिक आगम सुत्ताणि’	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) <table border="0" style="width: 100%; border-collapse: collapse;"> <tr> <td style="width: 15%; vertical-align: top;"> श्री उपांगादि- विषयानुक्रमे ॥ ७१ ॥ </td><td style="width: 25%; vertical-align: top;"> ६८ द्वाषष्ट्यमावास्यानक्षत्राणि । १९४ ६९ नक्षत्रचन्द्रसूर्ययोगान्तरम् । १९६ ७० परस्परचन्द्रगतिरयोगादिसाम्यम् । १९७ ॥ इति दशमे द्वाविंशतितमं प्रा० प्राभृतम् ॥ ॥ इति दशमं प्राभृतम् ॥ ७१ युगसंवत्सरादिनक्षत्रयोगाः । २०२ ॥ इत्येकादशं प्राभृतम् ॥ ७२ नक्षत्रसंवत्सरादिदिनरात्रिमुहूर्त्तमानम् । २०६ ७३ नोयुगदिनरात्रिमुहूर्त्तमानम् । २०७ ७४ आदित्यसंवत्सरादीनां समादि- पर्यवसाने । २०९ ७५, ३०* प्रावृडादिऋतुदिनरात्रि- मानमवमातिरात्राश्च २१९ </td><td style="width: 25%; vertical-align: top;"> ७६ प्रावृडाद्यावृत्तिषु चन्द्रसूर्यनक्षत्रयोगाः । २२८ ७७ हैमन्तिक्यावृत्तिषु चन्द्रसूर्यनक्षत्र- योगाः । २३३ ७८ वृषभवेणुकमञ्चादि(१०)योगाः । २३४ ॥ इति द्वादशं प्राभृतम् ॥ ७९ चन्द्रवृद्ध्यपवृद्धिमुहूर्त्तसंख्या । २३६ ८० पूर्णमास्यमावास्यामुहूर्त्तानि । ,, ८१ चन्द्रार्द्धमासमण्डलानि । २४३ ॥ इति त्रयोदशं प्राभृतम् ॥ ८२ ज्योत्स्नान्धकारयोरल्पबहुत्वम् । २४५ ॥ इति चतुर्दशं प्राभृतम् ॥ ८३ चन्द्रादीनां शीघ्रमन्दगतिस्त्वम् । २४७ ८४ चन्द्रसूर्यादीनां गतिषु विशेषः । २४९ </td><td style="width: 25%; vertical-align: top;"> ८५ नक्षत्रादिमासेषु चन्द्रादीनां मण्डल- चारसंख्या । २५३ ८६ दिनेन चन्द्रमण्डलादिसंख्या, मण्डले- नाहोरात्रसंख्या च । २५६ ॥ इति पञ्चदशं प्राभृतम् ॥ ८७ ज्योत्स्नासूर्यलेइयादेर्लक्षणानि । ,, ॥ इति षोडशं प्राभृतम् ॥ ८८ चन्द्रादीनां च्यवनोत्पातयोः प्रति- पक्षयः पञ्चविंशतिः, स्थितपक्षे चन्द्रादिस्वरूपम् । २५८ ॥ इति सप्तदशं प्राभृतम् ॥ ९३ सूर्यस्योच्चत्वे प्रतिपक्षयः पञ्च- विंशतिः, स्थितपक्षे सूर्याद्युच्चत्वं ८९, चन्द्रादेरधस्तनादिषु तारकाः </td><td style="width: 10%; vertical-align: top;"> सूर्यपञ्चसे- र्बृहद्विषया- नुक्रमः ॥ ७१ ॥ </td></tr> </table>				श्री उपांगादि- विषयानुक्रमे ॥ ७१ ॥	६८ द्वाषष्ट्यमावास्यानक्षत्राणि । १९४ ६९ नक्षत्रचन्द्रसूर्ययोगान्तरम् । १९६ ७० परस्परचन्द्रगतिरयोगादिसाम्यम् । १९७ ॥ इति दशमे द्वाविंशतितमं प्रा० प्राभृतम् ॥ ॥ इति दशमं प्राभृतम् ॥ ७१ युगसंवत्सरादिनक्षत्रयोगाः । २०२ ॥ इत्येकादशं प्राभृतम् ॥ ७२ नक्षत्रसंवत्सरादिदिनरात्रिमुहूर्त्तमानम् । २०६ ७३ नोयुगदिनरात्रिमुहूर्त्तमानम् । २०७ ७४ आदित्यसंवत्सरादीनां समादि- पर्यवसाने । २०९ ७५, ३०* प्रावृडादिऋतुदिनरात्रि- मानमवमातिरात्राश्च २१९	७६ प्रावृडाद्यावृत्तिषु चन्द्रसूर्यनक्षत्रयोगाः । २२८ ७७ हैमन्तिक्यावृत्तिषु चन्द्रसूर्यनक्षत्र- योगाः । २३३ ७८ वृषभवेणुकमञ्चादि(१०)योगाः । २३४ ॥ इति द्वादशं प्राभृतम् ॥ ७९ चन्द्रवृद्ध्यपवृद्धिमुहूर्त्तसंख्या । २३६ ८० पूर्णमास्यमावास्यामुहूर्त्तानि । ,, ८१ चन्द्रार्द्धमासमण्डलानि । २४३ ॥ इति त्रयोदशं प्राभृतम् ॥ ८२ ज्योत्स्नान्धकारयोरल्पबहुत्वम् । २४५ ॥ इति चतुर्दशं प्राभृतम् ॥ ८३ चन्द्रादीनां शीघ्रमन्दगतिस्त्वम् । २४७ ८४ चन्द्रसूर्यादीनां गतिषु विशेषः । २४९	८५ नक्षत्रादिमासेषु चन्द्रादीनां मण्डल- चारसंख्या । २५३ ८६ दिनेन चन्द्रमण्डलादिसंख्या, मण्डले- नाहोरात्रसंख्या च । २५६ ॥ इति पञ्चदशं प्राभृतम् ॥ ८७ ज्योत्स्नासूर्यलेइयादेर्लक्षणानि । ,, ॥ इति षोडशं प्राभृतम् ॥ ८८ चन्द्रादीनां च्यवनोत्पातयोः प्रति- पक्षयः पञ्चविंशतिः, स्थितपक्षे चन्द्रादिस्वरूपम् । २५८ ॥ इति सप्तदशं प्राभृतम् ॥ ९३ सूर्यस्योच्चत्वे प्रतिपक्षयः पञ्च- विंशतिः, स्थितपक्षे सूर्याद्युच्चत्वं ८९, चन्द्रादेरधस्तनादिषु तारकाः	सूर्यपञ्चसे- र्बृहद्विषया- नुक्रमः ॥ ७१ ॥
श्री उपांगादि- विषयानुक्रमे ॥ ७१ ॥	६८ द्वाषष्ट्यमावास्यानक्षत्राणि । १९४ ६९ नक्षत्रचन्द्रसूर्ययोगान्तरम् । १९६ ७० परस्परचन्द्रगतिरयोगादिसाम्यम् । १९७ ॥ इति दशमे द्वाविंशतितमं प्रा० प्राभृतम् ॥ ॥ इति दशमं प्राभृतम् ॥ ७१ युगसंवत्सरादिनक्षत्रयोगाः । २०२ ॥ इत्येकादशं प्राभृतम् ॥ ७२ नक्षत्रसंवत्सरादिदिनरात्रिमुहूर्त्तमानम् । २०६ ७३ नोयुगदिनरात्रिमुहूर्त्तमानम् । २०७ ७४ आदित्यसंवत्सरादीनां समादि- पर्यवसाने । २०९ ७५, ३०* प्रावृडादिऋतुदिनरात्रि- मानमवमातिरात्राश्च २१९	७६ प्रावृडाद्यावृत्तिषु चन्द्रसूर्यनक्षत्रयोगाः । २२८ ७७ हैमन्तिक्यावृत्तिषु चन्द्रसूर्यनक्षत्र- योगाः । २३३ ७८ वृषभवेणुकमञ्चादि(१०)योगाः । २३४ ॥ इति द्वादशं प्राभृतम् ॥ ७९ चन्द्रवृद्ध्यपवृद्धिमुहूर्त्तसंख्या । २३६ ८० पूर्णमास्यमावास्यामुहूर्त्तानि । ,, ८१ चन्द्रार्द्धमासमण्डलानि । २४३ ॥ इति त्रयोदशं प्राभृतम् ॥ ८२ ज्योत्स्नान्धकारयोरल्पबहुत्वम् । २४५ ॥ इति चतुर्दशं प्राभृतम् ॥ ८३ चन्द्रादीनां शीघ्रमन्दगतिस्त्वम् । २४७ ८४ चन्द्रसूर्यादीनां गतिषु विशेषः । २४९	८५ नक्षत्रादिमासेषु चन्द्रादीनां मण्डल- चारसंख्या । २५३ ८६ दिनेन चन्द्रमण्डलादिसंख्या, मण्डले- नाहोरात्रसंख्या च । २५६ ॥ इति पञ्चदशं प्राभृतम् ॥ ८७ ज्योत्स्नासूर्यलेइयादेर्लक्षणानि । ,, ॥ इति षोडशं प्राभृतम् ॥ ८८ चन्द्रादीनां च्यवनोत्पातयोः प्रति- पक्षयः पञ्चविंशतिः, स्थितपक्षे चन्द्रादिस्वरूपम् । २५८ ॥ इति सप्तदशं प्राभृतम् ॥ ९३ सूर्यस्योच्चत्वे प्रतिपक्षयः पञ्च- विंशतिः, स्थितपक्षे सूर्याद्युच्चत्वं ८९, चन्द्रादेरधस्तनादिषु तारकाः	सूर्यपञ्चसे- र्बृहद्विषया- नुक्रमः ॥ ७१ ॥					

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [उपांगसूत्र-५+६ “सूर्यप्रजप्ति+चन्द्रप्रजप्ति”]								
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए ‘संवृत्तिक आगम सुत्ताणि’	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) <table border="0" style="width: 100%; border-collapse: collapse;"> <tr> <td style="width: 15%; vertical-align: top; padding: 5px;"> श्रीउपांगादि- विषयानुक्रमे ॥ ७२ ॥ </td><td style="width: 45%; vertical-align: top; padding: 5px;"> ९०, चन्द्रादेर्ग्रहादिपरिवारमानं ९१, मेरुपर्वतउद्योतिश्चक्रावाधा ९२, सर्वाभ्यन्तरबाह्यादिनक्षत्राणि ९३ । २६० ९५ चन्द्रादिविमानसंस्थानायामबाहक- देवस्वरूपनिरूपणं ९४, चन्द्रादीनां शीघ्रमन्दगतित्वं ९५ । २६५ ९९ तारकयोरन्तरं ९६, चन्द्रादेर्ग्रम- हिषी, जिनसक्थ्याशातनाभया- दन्यत्र भोगः ९७, चन्द्रादेः परापरे स्थिती ९८, चन्द्राद्यल्प- बहुत्वम् ९९ । २६८ ॥ इत्यष्टादशं प्राभृतम् ॥ १००, ३१-८७* चन्द्रसूर्यसङ्ख्यायां </td><td style="width: 45%; vertical-align: top; padding: 5px;"> द्वादश प्रतिपत्तयः, स्वमते द्वयोर्दि- चन्द्रसूर्यसङ्ख्या । २८२ १०१ पुष्करवरद्वीपादयस्तच्चन्द्रसूर्यादि- सङ्ख्या च । २८५ ॥ इत्येकोनविंशतितमं प्राभृतम् ॥ १०२ चन्द्राद्यनुभावे प्रतिपत्तिद्वयं, स्थितपक्षे तद्देवस्वरूपम् । २८६ १०३ राहुप्रतिपत्तिद्वयं, स्थितपक्षे तद्देव- स्वरूपनाम(१२)विमान(५)- गमनागमनविकुर्वणादि, ध्रुव- पर्वराहुचन्द्रलेख्यावर्णादि । २९१ १०४ चन्द्रसूर्ययोः राश्यादित्यत्वे हेतुः १०४, चन्द्रसूर्यकाम- भोगस्वरूपम् १०५ । २९४ </td><td style="width: 15%; vertical-align: top; padding: 5px;"> १०७, ८८-१०२* अष्टाशीतिर्ग्रहनामानि । १०६, ९६* उपसंहारः १०७, १०२* । २९७ ॥ इति विंशतितमं प्राभृतम् ॥ प्रशस्तिः । ” ॥ इति श्रीसूर्यप्रज्ञप्तौ विषयानुक्रमः ॥ </td><td style="width: 10%; vertical-align: top; padding: 5px;"> सूर्यप्रज्ञप्ते- बृहद्विषया- नुक्रमः जम्बूद्वीप- विषयसूचिश्च ॥ ७२ ॥ </td></tr> </table>				श्रीउपांगादि- विषयानुक्रमे ॥ ७२ ॥	९०, चन्द्रादेर्ग्रहादिपरिवारमानं ९१, मेरुपर्वतउद्योतिश्चक्रावाधा ९२, सर्वाभ्यन्तरबाह्यादिनक्षत्राणि ९३ । २६० ९५ चन्द्रादिविमानसंस्थानायामबाहक- देवस्वरूपनिरूपणं ९४, चन्द्रादीनां शीघ्रमन्दगतित्वं ९५ । २६५ ९९ तारकयोरन्तरं ९६, चन्द्रादेर्ग्रम- हिषी, जिनसक्थ्याशातनाभया- दन्यत्र भोगः ९७, चन्द्रादेः परापरे स्थिती ९८, चन्द्राद्यल्प- बहुत्वम् ९९ । २६८ ॥ इत्यष्टादशं प्राभृतम् ॥ १००, ३१-८७* चन्द्रसूर्यसङ्ख्यायां	द्वादश प्रतिपत्तयः, स्वमते द्वयोर्दि- चन्द्रसूर्यसङ्ख्या । २८२ १०१ पुष्करवरद्वीपादयस्तच्चन्द्रसूर्यादि- सङ्ख्या च । २८५ ॥ इत्येकोनविंशतितमं प्राभृतम् ॥ १०२ चन्द्राद्यनुभावे प्रतिपत्तिद्वयं, स्थितपक्षे तद्देवस्वरूपम् । २८६ १०३ राहुप्रतिपत्तिद्वयं, स्थितपक्षे तद्देव- स्वरूपनाम(१२)विमान(५)- गमनागमनविकुर्वणादि, ध्रुव- पर्वराहुचन्द्रलेख्यावर्णादि । २९१ १०४ चन्द्रसूर्ययोः राश्यादित्यत्वे हेतुः १०४, चन्द्रसूर्यकाम- भोगस्वरूपम् १०५ । २९४	१०७, ८८-१०२* अष्टाशीतिर्ग्रहनामानि । १०६, ९६* उपसंहारः १०७, १०२* । २९७ ॥ इति विंशतितमं प्राभृतम् ॥ प्रशस्तिः । ” ॥ इति श्रीसूर्यप्रज्ञप्तौ विषयानुक्रमः ॥	सूर्यप्रज्ञप्ते- बृहद्विषया- नुक्रमः जम्बूद्वीप- विषयसूचिश्च ॥ ७२ ॥
श्रीउपांगादि- विषयानुक्रमे ॥ ७२ ॥	९०, चन्द्रादेर्ग्रहादिपरिवारमानं ९१, मेरुपर्वतउद्योतिश्चक्रावाधा ९२, सर्वाभ्यन्तरबाह्यादिनक्षत्राणि ९३ । २६० ९५ चन्द्रादिविमानसंस्थानायामबाहक- देवस्वरूपनिरूपणं ९४, चन्द्रादीनां शीघ्रमन्दगतित्वं ९५ । २६५ ९९ तारकयोरन्तरं ९६, चन्द्रादेर्ग्रम- हिषी, जिनसक्थ्याशातनाभया- दन्यत्र भोगः ९७, चन्द्रादेः परापरे स्थिती ९८, चन्द्राद्यल्प- बहुत्वम् ९९ । २६८ ॥ इत्यष्टादशं प्राभृतम् ॥ १००, ३१-८७* चन्द्रसूर्यसङ्ख्यायां	द्वादश प्रतिपत्तयः, स्वमते द्वयोर्दि- चन्द्रसूर्यसङ्ख्या । २८२ १०१ पुष्करवरद्वीपादयस्तच्चन्द्रसूर्यादि- सङ्ख्या च । २८५ ॥ इत्येकोनविंशतितमं प्राभृतम् ॥ १०२ चन्द्राद्यनुभावे प्रतिपत्तिद्वयं, स्थितपक्षे तद्देवस्वरूपम् । २८६ १०३ राहुप्रतिपत्तिद्वयं, स्थितपक्षे तद्देव- स्वरूपनाम(१२)विमान(५)- गमनागमनविकुर्वणादि, ध्रुव- पर्वराहुचन्द्रलेख्यावर्णादि । २९१ १०४ चन्द्रसूर्ययोः राश्यादित्यत्वे हेतुः १०४, चन्द्रसूर्यकाम- भोगस्वरूपम् १०५ । २९४	१०७, ८८-१०२* अष्टाशीतिर्ग्रहनामानि । १०६, ९६* उपसंहारः १०७, १०२* । २९७ ॥ इति विंशतितमं प्राभृतम् ॥ प्रशस्तिः । ” ॥ इति श्रीसूर्यप्रज्ञप्तौ विषयानुक्रमः ॥	सूर्यप्रज्ञप्ते- बृहद्विषया- नुक्रमः जम्बूद्वीप- विषयसूचिश्च ॥ ७२ ॥					

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [उपांगसूत्र-७ “जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति”]									
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए ‘संवृत्तिक आगम सुत्ताणि’	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)									
	अथ श्रीजम्बूद्वीपप्रज्ञप्तेर्विषयसूचिः		सूरिस्तुतिः २।		”		हीरविजयगुरुस्तुतिः ४-५।		”	
	वीरस्तुतिः १।		१		मलयगिरिस्तुतिः ३।		”		वाचकानाशीर्वादः ६।	
	”		”		”		”		ग्रन्थनाम ७।	
	श्री उपांगादि- विषयानुक्रमे ॥ ७३ ॥		१ नमस्कारनिक्षेपाः।		९		१५ वैताढ्यवर्णनम्।		८४	
	२ गौतमवर्णनम्।		१४		१६ उत्तरभरतवर्णनम्।		”		२७ द्वितीयारकस्वरूपम्।	
	३ जम्बूद्वीपस्थानादिः।		१८		१७ ऋषभकूटाधिकारः।		८६		२८ तृतीयारकस्वरूपम्।	
	४ वेदिकावर्णनम्।		२०		॥ इति भरतक्षेत्रनिरूपणो नाम प्रथमो		२९ कुलकराः।		१३२	
	५ वनषण्डाधिकारः।		२७		वक्षुस्कारः ॥		३० कुलकरनीतिः।		१३३	
	६ पद्मवरवेदिकावनषण्डवर्णनम्।		३१		१८, ४-६* समयादिशीर्षप्रहेलिकान्त-		३१ कलादि ऋषभदीक्षा च।		१३५	
७ जम्बूद्वीप(४)द्वाराधिकारः।		४७		कालवर्णनम्।		८९		३२ श्रीऋषभप्रभोः श्रामण्यादि।		
८ विजयद्वारवर्णनम्।		”		१९, ७-८* पर्योपमप्ररूपणा।		९२		३३ श्रीऋषभप्रभोः जन्मकल्याणकादि-		
९, १* विजयादिद्वारान्तराणि।		६५		२० सुषमसुषमाधिकारः।		९७		नक्षत्राणि।		
१० भरतक्षेत्रवर्णनम्।		६६		२१ कल्पद्रुमाधिकारः।		९९		३४ प्रभोः संहननादि निर्वाणगमनं च।		
११ दक्षिणभरतार्द्धवर्णनम्।		६८		२२ युग्मिस्वरूपम्।		१०८		३५ चतुर्थारकस्वरूपम्।		
१२ वैताढ्यस्वरूपम्।		७१		२३ प्रथमारकनराहारवर्णनम्।		११८		३६ पञ्चमारकस्वरूपम्।		
१३ तत्सिद्धायतनवर्णनम्।		७७		२४-२५ प्रथमारकनरवासादिवर्णनम्।		११९		३७ षष्ठारकस्वरूपम्।		
१४, २-३* दक्षिणार्द्धकूटादिवर्णनम्।		८२		२६ प्रथमारकनराणां स्थित्यादि।		१२६		३८ उत्सर्पिण्यां प्रथमद्वितीयारकस्व-		
”		”		”		”		रूपम्।		
”		”		”		”		१७१		
”		”		”		”		॥ ७३ ॥		

[आगम-१८] उपांग-७ “जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति”

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [उपांगसूत्र-७ “जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति”]								
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए ‘संवृत्तिक आगम सुत्ताणि’	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) <table border="0" style="width: 100%; border-collapse: collapse;"> <tr> <td style="width: 15%; vertical-align: top;"> श्रीउपांगादि विषयानुक्रमे ॥ ७४ ॥ </td><td style="width: 25%; vertical-align: top;"> ३९ पुष्कलसंवत्क्षीरवृषामृतसमेधाः । १७३ ४० मांसवर्जनव्यवस्था । १७२ ४१ शेषोत्सर्पिणीवर्णनम् । १७८ ॥ इति द्वितीयो वक्षस्कारः ॥ ४२ विनीतावर्णनम् । १७२ ४३ भरतराजवर्णनम् । १८१ ४४, ९-११* चक्रोत्पत्तितत्पूजोत्सवाः । १८४ ४५ सचक्रस्य मागधतीर्थगमनम् । १९४ ४६, १२-१५* मागधतीर्थकुमार- साधनम् । १९८ ४७ वरदामतीर्थसाधनम् । २०५ ४८, १६-१७* वास्तुनिवेशविधिः । २०७ </td><td style="width: 25%; vertical-align: top;"> ४९ चतुर्घण्टाधरथवर्णनम् । २१० ५० सिन्धुदेवीसाधनम् । २१४ ५१ वैताड्यकुमारकृतमालसुरसाधनम् । २१६ ५२ सुषेणेन सिन्धुपश्चिमनिष्कृतसाधनम् । २१७ ५३ सुषेणेन तिमिश्रगुहादक्षिणकपाटो- दघाटनम् । २२२ ५४ मणिरत्नं, काकिणीरत्नेन मण्डला- लेखनं च । २२४ ५५ उन्मग्नानिमग्नस्वरूपम् । २२९ ५६ आपातचिलातयुद्धम् । २३१ ५७, १८* अश्वरत्नखङ्गरत्ने । २३३ ५८ मेघमुखदेवाराधना वृष्टिश्च । २३८ </td><td style="width: 25%; vertical-align: top;"> ५९, १९* छत्ररत्नवर्णनम् । २४१ ६०, २०* चर्मरत्ने धान्याद्युत्पादनम् । २४३ ६१, २१-२४* आपातकिरातसाधनम् । २४५ ६२ क्षुल्लकहिमवद्गिरिदेवसाधनम् । २४८ ६३, २५-२६* ऋषभकूटे नामलिख- नम् । २५० ६४, २७* नमिविनमिसाधनं स्त्रीरत्ना- सिन्धु । २५१ ६५ खण्डप्रपाताधिपनृत्तमालसाधनं निर्गमश्च गुहायाः । २५५ ६६, २८-४१* गङ्गाकुले निधिप्राप्तिः पश्चिमदिक्साधनं विनीतागमश्च । २५७ </td><td style="width: 10%; vertical-align: top;"> जम्बूद्वीप० विषयसूचिः ॥ ७४ ॥ </td></tr> </table>				श्रीउपांगादि विषयानुक्रमे ॥ ७४ ॥	३९ पुष्कलसंवत्क्षीरवृषामृतसमेधाः । १७३ ४० मांसवर्जनव्यवस्था । १७२ ४१ शेषोत्सर्पिणीवर्णनम् । १७८ ॥ इति द्वितीयो वक्षस्कारः ॥ ४२ विनीतावर्णनम् । १७२ ४३ भरतराजवर्णनम् । १८१ ४४, ९-११* चक्रोत्पत्तितत्पूजोत्सवाः । १८४ ४५ सचक्रस्य मागधतीर्थगमनम् । १९४ ४६, १२-१५* मागधतीर्थकुमार- साधनम् । १९८ ४७ वरदामतीर्थसाधनम् । २०५ ४८, १६-१७* वास्तुनिवेशविधिः । २०७	४९ चतुर्घण्टाधरथवर्णनम् । २१० ५० सिन्धुदेवीसाधनम् । २१४ ५१ वैताड्यकुमारकृतमालसुरसाधनम् । २१६ ५२ सुषेणेन सिन्धुपश्चिमनिष्कृतसाधनम् । २१७ ५३ सुषेणेन तिमिश्रगुहादक्षिणकपाटो- दघाटनम् । २२२ ५४ मणिरत्नं, काकिणीरत्नेन मण्डला- लेखनं च । २२४ ५५ उन्मग्नानिमग्नस्वरूपम् । २२९ ५६ आपातचिलातयुद्धम् । २३१ ५७, १८* अश्वरत्नखङ्गरत्ने । २३३ ५८ मेघमुखदेवाराधना वृष्टिश्च । २३८	५९, १९* छत्ररत्नवर्णनम् । २४१ ६०, २०* चर्मरत्ने धान्याद्युत्पादनम् । २४३ ६१, २१-२४* आपातकिरातसाधनम् । २४५ ६२ क्षुल्लकहिमवद्गिरिदेवसाधनम् । २४८ ६३, २५-२६* ऋषभकूटे नामलिख- नम् । २५० ६४, २७* नमिविनमिसाधनं स्त्रीरत्ना- सिन्धु । २५१ ६५ खण्डप्रपाताधिपनृत्तमालसाधनं निर्गमश्च गुहायाः । २५५ ६६, २८-४१* गङ्गाकुले निधिप्राप्तिः पश्चिमदिक्साधनं विनीतागमश्च । २५७	जम्बूद्वीप० विषयसूचिः ॥ ७४ ॥
श्रीउपांगादि विषयानुक्रमे ॥ ७४ ॥	३९ पुष्कलसंवत्क्षीरवृषामृतसमेधाः । १७३ ४० मांसवर्जनव्यवस्था । १७२ ४१ शेषोत्सर्पिणीवर्णनम् । १७८ ॥ इति द्वितीयो वक्षस्कारः ॥ ४२ विनीतावर्णनम् । १७२ ४३ भरतराजवर्णनम् । १८१ ४४, ९-११* चक्रोत्पत्तितत्पूजोत्सवाः । १८४ ४५ सचक्रस्य मागधतीर्थगमनम् । १९४ ४६, १२-१५* मागधतीर्थकुमार- साधनम् । १९८ ४७ वरदामतीर्थसाधनम् । २०५ ४८, १६-१७* वास्तुनिवेशविधिः । २०७	४९ चतुर्घण्टाधरथवर्णनम् । २१० ५० सिन्धुदेवीसाधनम् । २१४ ५१ वैताड्यकुमारकृतमालसुरसाधनम् । २१६ ५२ सुषेणेन सिन्धुपश्चिमनिष्कृतसाधनम् । २१७ ५३ सुषेणेन तिमिश्रगुहादक्षिणकपाटो- दघाटनम् । २२२ ५४ मणिरत्नं, काकिणीरत्नेन मण्डला- लेखनं च । २२४ ५५ उन्मग्नानिमग्नस्वरूपम् । २२९ ५६ आपातचिलातयुद्धम् । २३१ ५७, १८* अश्वरत्नखङ्गरत्ने । २३३ ५८ मेघमुखदेवाराधना वृष्टिश्च । २३८	५९, १९* छत्ररत्नवर्णनम् । २४१ ६०, २०* चर्मरत्ने धान्याद्युत्पादनम् । २४३ ६१, २१-२४* आपातकिरातसाधनम् । २४५ ६२ क्षुल्लकहिमवद्गिरिदेवसाधनम् । २४८ ६३, २५-२६* ऋषभकूटे नामलिख- नम् । २५० ६४, २७* नमिविनमिसाधनं स्त्रीरत्ना- सिन्धु । २५१ ६५ खण्डप्रपाताधिपनृत्तमालसाधनं निर्गमश्च गुहायाः । २५५ ६६, २८-४१* गङ्गाकुले निधिप्राप्तिः पश्चिमदिक्साधनं विनीतागमश्च । २५७	जम्बूद्वीप० विषयसूचिः ॥ ७४ ॥					

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [उपांगसूत्र-७ “जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति”]								
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए ‘संवृत्तिक आगम सुत्ताणि’	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) <table border="0" style="width: 100%; border-collapse: collapse;"> <tr> <td style="width: 15%; vertical-align: top;"> श्रीउपांगादि- विषयानुक्रमे ॥ ७५ ॥ </td><td style="width: 25%; vertical-align: top;"> ६७ भरतस्य विनीतायां प्रवेशः । २६० ६८ भरतस्य चक्रवर्त्तिवामिषेकः । २६८ ६९ रत्नानि । २७७ ७० चक्रिणः समृद्धिः । २७७ ७१ भरतस्य केवलं श्रामण्यं मोक्षश्च । २७८ ७२ भरतनामान्वर्थम् । २८० ॥ इति भरतचक्रिचरितवर्णनो नाम तृतीयो वक्षस्कारः ॥ ७३ क्षुल्लकहिमवत्स्वरूपम् । २८१ ७४ पद्महृदस्वरूपम् । २८२ ७५ गङ्गासिन्धुरोहितांशा नद्यः । २९० ७६ हिमवति कूटानि । २९६ ७७ हैमवतं वर्षम् । २९८ ७८ शब्दापातिवैताड्यः । २९९ </td><td style="width: 25%; vertical-align: top;"> ७९ हैमवतान्वर्थः । ३०० ८० महाहिमवान् पर्वतः । ३०१ ८१ महाहिमवति महापद्मादि । ३०२ ८२ महाहिमवति कूटानि । ३०३ ८३ हरिवर्षम् । ३०४ ८४ निषधः । ३०६ ८५ सनदीकतिगिच्छिद्रहवर्णनम् । ३०७ ८६ महाविदेहाः । ३१० ८७ गन्धमादनः । ३१३ ८८ उत्तरकुरवः । ” ८९, ४२-४३* यमकः । ३१६ ९०, ४४-४६* नीलवदादिद्रहकाञ्चन- पर्वताः । ३२९ ९१, ४७-५३* जम्बूद्वीपः । ३३० </td><td style="width: 25%; vertical-align: top;"> ९२, ५४* उत्तरकुरुमाल्यवदादि- वक्षस्काराः । ३३७ ९३ सहस्राङ्गकूटं माल्यवदर्थश्च । ३३८ ९४, ५६* कच्छविजयः । ३४१ ९५ चित्रकूटवक्षस्कारः । ३४४ ९६, ५६* शेषविजयादि । ३४६ ९७, ५७-५८* विदेहद्वितीयविभागः । ३५२ ९८, ५९* सौमनसदेवकुरवः । ३५३ ९९ चित्रविचित्रकूटौ । ” १०० निषधादिद्रहाः । ” १०१ कूटशालमली । ३५५ १०२, ६०* विद्युत्प्रभः । ” १०३, ६१-६४* विजयाः । ३५७ </td><td style="width: 10%; vertical-align: top;"> जम्बूद्वीपः विषयसूचिः ॥ ७६ ॥ </td></tr> </table>				श्रीउपांगादि- विषयानुक्रमे ॥ ७५ ॥	६७ भरतस्य विनीतायां प्रवेशः । २६० ६८ भरतस्य चक्रवर्त्तिवामिषेकः । २६८ ६९ रत्नानि । २७७ ७० चक्रिणः समृद्धिः । २७७ ७१ भरतस्य केवलं श्रामण्यं मोक्षश्च । २७८ ७२ भरतनामान्वर्थम् । २८० ॥ इति भरतचक्रिचरितवर्णनो नाम तृतीयो वक्षस्कारः ॥ ७३ क्षुल्लकहिमवत्स्वरूपम् । २८१ ७४ पद्महृदस्वरूपम् । २८२ ७५ गङ्गासिन्धुरोहितांशा नद्यः । २९० ७६ हिमवति कूटानि । २९६ ७७ हैमवतं वर्षम् । २९८ ७८ शब्दापातिवैताड्यः । २९९	७९ हैमवतान्वर्थः । ३०० ८० महाहिमवान् पर्वतः । ३०१ ८१ महाहिमवति महापद्मादि । ३०२ ८२ महाहिमवति कूटानि । ३०३ ८३ हरिवर्षम् । ३०४ ८४ निषधः । ३०६ ८५ सनदीकतिगिच्छिद्रहवर्णनम् । ३०७ ८६ महाविदेहाः । ३१० ८७ गन्धमादनः । ३१३ ८८ उत्तरकुरवः । ” ८९, ४२-४३* यमकः । ३१६ ९०, ४४-४६* नीलवदादिद्रहकाञ्चन- पर्वताः । ३२९ ९१, ४७-५३* जम्बूद्वीपः । ३३०	९२, ५४* उत्तरकुरुमाल्यवदादि- वक्षस्काराः । ३३७ ९३ सहस्राङ्गकूटं माल्यवदर्थश्च । ३३८ ९४, ५६* कच्छविजयः । ३४१ ९५ चित्रकूटवक्षस्कारः । ३४४ ९६, ५६* शेषविजयादि । ३४६ ९७, ५७-५८* विदेहद्वितीयविभागः । ३५२ ९८, ५९* सौमनसदेवकुरवः । ३५३ ९९ चित्रविचित्रकूटौ । ” १०० निषधादिद्रहाः । ” १०१ कूटशालमली । ३५५ १०२, ६०* विद्युत्प्रभः । ” १०३, ६१-६४* विजयाः । ३५७	जम्बूद्वीपः विषयसूचिः ॥ ७६ ॥
श्रीउपांगादि- विषयानुक्रमे ॥ ७५ ॥	६७ भरतस्य विनीतायां प्रवेशः । २६० ६८ भरतस्य चक्रवर्त्तिवामिषेकः । २६८ ६९ रत्नानि । २७७ ७० चक्रिणः समृद्धिः । २७७ ७१ भरतस्य केवलं श्रामण्यं मोक्षश्च । २७८ ७२ भरतनामान्वर्थम् । २८० ॥ इति भरतचक्रिचरितवर्णनो नाम तृतीयो वक्षस्कारः ॥ ७३ क्षुल्लकहिमवत्स्वरूपम् । २८१ ७४ पद्महृदस्वरूपम् । २८२ ७५ गङ्गासिन्धुरोहितांशा नद्यः । २९० ७६ हिमवति कूटानि । २९६ ७७ हैमवतं वर्षम् । २९८ ७८ शब्दापातिवैताड्यः । २९९	७९ हैमवतान्वर्थः । ३०० ८० महाहिमवान् पर्वतः । ३०१ ८१ महाहिमवति महापद्मादि । ३०२ ८२ महाहिमवति कूटानि । ३०३ ८३ हरिवर्षम् । ३०४ ८४ निषधः । ३०६ ८५ सनदीकतिगिच्छिद्रहवर्णनम् । ३०७ ८६ महाविदेहाः । ३१० ८७ गन्धमादनः । ३१३ ८८ उत्तरकुरवः । ” ८९, ४२-४३* यमकः । ३१६ ९०, ४४-४६* नीलवदादिद्रहकाञ्चन- पर्वताः । ३२९ ९१, ४७-५३* जम्बूद्वीपः । ३३०	९२, ५४* उत्तरकुरुमाल्यवदादि- वक्षस्काराः । ३३७ ९३ सहस्राङ्गकूटं माल्यवदर्थश्च । ३३८ ९४, ५६* कच्छविजयः । ३४१ ९५ चित्रकूटवक्षस्कारः । ३४४ ९६, ५६* शेषविजयादि । ३४६ ९७, ५७-५८* विदेहद्वितीयविभागः । ३५२ ९८, ५९* सौमनसदेवकुरवः । ३५३ ९९ चित्रविचित्रकूटौ । ” १०० निषधादिद्रहाः । ” १०१ कूटशालमली । ३५५ १०२, ६०* विद्युत्प्रभः । ” १०३, ६१-६४* विजयाः । ३५७	जम्बूद्वीपः विषयसूचिः ॥ ७६ ॥					

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [उपांगसूत्र-७ "जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति"]				
	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)				
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	श्रीउपांगादि विषयानुक्रमे ॥ ७६ ॥	१०४, ६५* मेरुपर्वतः । ३६० १०५ नन्दनवनम् । ३६६ १०६ सौमनसवनम् । ३६९ १०७ पण्डकवनम् । ३७० १०८ अभिषेकशिला । ३७२ १०९ मेरुकाण्डानि । ३७३ ११०, ६६-६७* मेरुनामानि । ३७२ १११, ६८* नीलवह्निर्वर्णनम् । ३७६ ११२, ६९* रम्यकादीनि । ३७८ ॥ इति चतुर्थो वक्षस्कारः ॥ ११३, ७०* दिक्कुमार्युत्सवः । ३८३ ११४, ७१* ऊर्ध्वलोकादिक्कुमार्युत्सवः । ३८८ ११५, ७२-७५* रुचकवासिकुमार्यु-	त्सवः । ३९१ ११६ पालकविमानम् । ३९५ ११७ जन्ममहोत्सवाय यानविमानम् । ३९९ ११८ जन्ममहे शक्रेन्द्रागमः । ४०१ ११९, ७६-७८* जन्ममहे ईशानेन्द्रा- द्यागमः । ४०५ १२०, ७९* जन्ममहे चमराद्यागमः । ४०७ १२१-१२२ जन्ममहे अच्युताभियोगः । ४१२ १२३, ८०* अच्युताशीर्वादः शेषे- न्द्राभिषेकश्च । ४१९ १२४ कृताभिषेकजिनानयम् । ४२२	॥ इति पञ्चमो जिनजन्माभिषेकारण्यो वक्षस्कारः ॥ १२५, परस्परस्पर्शजीवोत्पादौ । ४२५ १२६, ८१-८२* खण्डयोजनादिपिण्डः । ४२६ ॥ इति षष्ठो वक्षस्कारः ॥ १२७, ८३* चन्दौ । ४३३ १२८ सूर्यमण्डलानि । ४३४ १२९ अवाधाः । ,, १३० सूर्यस्यान्तरावाधाः । ४३५ १३१ सूर्यपरिमाणम् । ,, १३२ मेरुमण्डलावाधा । ४३६ १३३ मण्डलायामादि । ४३८ १३४ मुहूर्तगतिः । ४४०	जम्बूद्वीप० विषयसूचिः

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [उपांगसूत्र-७ “जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति”]								
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए ‘संवृत्तिक आगम सुत्ताणि’	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) <table border="0" style="width: 100%; border-collapse: collapse;"> <tr> <td style="width: 15%; vertical-align: top;"> श्रीउपांगादि- विषयानुक्रमे ॥ ७८ ॥ </td><td style="width: 15%; vertical-align: top;"> वाहकाः । १६९ ज्योतिष्कगतिः । १७० ज्योतिष्काणामृद्धिः । १७१ तारकान्तराणि । १७२, १२८-१२९* अग्रमहिष्यो ग्रहाश्च । १७३ स्थितिः । १७४, १३०-१३१* नक्षत्राधिष्ठातारः । १७५ चन्द्राद्यल्पवहुत्वम् । १७६ द्वीपेजघन्योत्कृष्टजिनादिसंख्या १७७ द्वीपस्योद्वेधाः । १७८ शाश्वतत्वादि । १७९ परिणामाः । </td><td style="width: 15%; vertical-align: top;"> ५२६ ५३१ ” ” ५३२ ” ५३५ ५३६ ” ५३८ ” ” </td><td style="width: 15%; vertical-align: top;"> १८० द्वीपनामहेतुः । १८१ उपसंहारः । ॥ इति सप्तमो वक्षस्कारः ॥ ॥ इति जंबूद्वीपप्रज्ञप्तेर्विषयसूचिः ॥ </td><td style="width: 15%; vertical-align: top;"> ५४० ” </td></tr> </table>				श्रीउपांगादि- विषयानुक्रमे ॥ ७८ ॥	वाहकाः । १६९ ज्योतिष्कगतिः । १७० ज्योतिष्काणामृद्धिः । १७१ तारकान्तराणि । १७२, १२८-१२९* अग्रमहिष्यो ग्रहाश्च । १७३ स्थितिः । १७४, १३०-१३१* नक्षत्राधिष्ठातारः । १७५ चन्द्राद्यल्पवहुत्वम् । १७६ द्वीपेजघन्योत्कृष्टजिनादिसंख्या १७७ द्वीपस्योद्वेधाः । १७८ शाश्वतत्वादि । १७९ परिणामाः ।	५२६ ५३१ ” ” ५३२ ” ५३५ ५३६ ” ५३८ ” ”	१८० द्वीपनामहेतुः । १८१ उपसंहारः । ॥ इति सप्तमो वक्षस्कारः ॥ ॥ इति जंबूद्वीपप्रज्ञप्तेर्विषयसूचिः ॥ 	५४० ”
श्रीउपांगादि- विषयानुक्रमे ॥ ७८ ॥	वाहकाः । १६९ ज्योतिष्कगतिः । १७० ज्योतिष्काणामृद्धिः । १७१ तारकान्तराणि । १७२, १२८-१२९* अग्रमहिष्यो ग्रहाश्च । १७३ स्थितिः । १७४, १३०-१३१* नक्षत्राधिष्ठातारः । १७५ चन्द्राद्यल्पवहुत्वम् । १७६ द्वीपेजघन्योत्कृष्टजिनादिसंख्या १७७ द्वीपस्योद्वेधाः । १७८ शाश्वतत्वादि । १७९ परिणामाः ।	५२६ ५३१ ” ” ५३२ ” ५३५ ५३६ ” ५३८ ” ”	१८० द्वीपनामहेतुः । १८१ उपसंहारः । ॥ इति सप्तमो वक्षस्कारः ॥ ॥ इति जंबूद्वीपप्रज्ञप्तेर्विषयसूचिः ॥ 	५४० ” 					
	श्रीउपांगादि- विषयानुक्रमे ॥ ७८ ॥ जंबूद्वीप० विषयसूचि बृहद्विषया- नुक्रमश्च ॥ ७८ ॥								

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [उपांगसूत्र-७ “जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति”]		
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए ‘संवृत्तिक आगम सुत्ताणि’	श्रीउपांगादि- विषयानुक्रमे ॥ ७८ ॥	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) ॥ अथ श्रीजम्बूद्वीपप्रज्ञप्तेर्वृहद्- विषयानुक्रमः ॥ श्रीवीरगन्धहस्तिमलयगिरिहीरविजय- सकलचन्द्राणां स्तुतिनमस्कारादि, शेषाङ्गोपाङ्गविवरणात्परिशेषताऽस्य, मलयगिरिकृतवृत्तिऽपुच्छेदः, गणिता- नुयोगोऽत्र, फलयोगमङ्गलादिविचारः, दशवर्षानन्तरमस्य दानं, उपक्रमादि- द्वारावतारः जम्बूद्वीप प्रज्ञप्तीनां-	निक्षेपाः । ९ १ मिथिलामाणिभद्रजितशत्रुधारिणी- वर्णनातिदेशः, स्वाम्यागमनादि (नम- स्कारार्हतोनिक्षेपाः, नामस्थापना- द्रव्यभावनयमतानि, स्थापनानम- स्कार्यता) । १४ ३ श्रीगौतमवर्णनाद्यतिदेशः २, जम्बू द्वीपस्य महत्त्वस्थानाकारादिप्रश्नो- त्तराणि (परिध्यानयनम्) ३। २० ४ जगतीपद्मवरवेदिकावर्णनम् । २७ ५ वनखण्डवर्णनातिदेशः । ३० ६ वनखण्डभूमिभागवर्णनातिदेशः । ४७ ८ विजयादिद्वारराजधान्यतिदेशः ७, विजयादिद्वारतत्स्थानोच्छ्वादि जम्बूद्वीप० विषयसूचि वृहद्विषया- नुक्रमश्च ॥ ७८ ॥

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [उपांगसूत्र-७ “जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति”]								
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए ‘संवृत्तिक आगम सुत्ताणि’	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) <table border="0" style="width: 100%; border-collapse: collapse;"> <tr> <td style="width: 15%; vertical-align: top;"> श्रीउपांगादि विषयानुक्रमे ॥ ७९ ॥ </td><td style="width: 25%; vertical-align: top;"> वर्णनातिदेशः ८। ६५ ९, १* परस्परं द्वाराणामबाधा । ॥ १० भरतक्षेत्रस्थानस्वरूपाकारविभागाः । ६७ ११ दक्षिणाद्धभरतविभागायामादि भूमि भागतन्मनुजवर्णनं च । ७० १२ वैताढ्यस्य स्थानायामादिवनखण्ड- गुहाविद्याधरश्रेणिनगरतन्मनुजाभि- योग्यश्रेणिदेवशिखरतलकूटसङ्ख्याः । ७७ १३ सिद्धायतनकूटदेवच्छन्दकजिन- प्रतिमावर्णनादि । ८२ १४, २३* दक्षिणाद्धभरतकूटादितद्वासि- देवराजान्यादिवर्णनादि । ८४ </td><td style="width: 25%; vertical-align: top;"> १६ वैताढ्यस्यान्वर्थतद्देवनामशाश्वत- त्वानि १५, उत्तरभरताद्धस्थानाकार- भागायामाकारमनुष्याकाराः १६, (जीवानयनयनरीतिर्जीवा च) । ८६ १७ ऋषभकूटवर्णनम् । ८८ ॥ इति प्रथमो बध्दस्कारः ॥ १८, ४-६* सुषमसुषमायाः काल- भेदाः, शीर्षप्रहेलिकान्तानां कालानां वर्णनं च । ९२ १९, ७८* निश्चयव्यवहारपरमाणोरारभ्य योजनान्तानां पल्योपमसागरोपमा- दीनां च निरूपणम् । ९३ २० भरतसुषमसुषमारकस्य वर्णनम् । ९९ </td><td style="width: 25%; vertical-align: top;"> २१ मत्ताङ्गशदिकल्पवृक्षवर्णनातिदेशः । १०८ २२ भरते सुषमसुषमारकनरवर्णनम् । ११८ २३ तन्मनुजानामाहारार्थास्वादौ । ११९ २५ तद्वसतिः २४, गृह्णामासिहिरण्य- राजदासात्रारिमित्रावाधेन्द्रमहनट- प्रेक्षाशकटगवाश्वसिंहशार्दुमाहि- स्थानुदंशमशकडिम्बदुर्भूतादिभावा- भावविचारः २५ । १२५ २६ तद्व्युत्पन्नामायुरुच्चत्वसंहननसंस्थान- गतियुगलप्रसवाः पद्मगन्धादि(६)- भेदाश्च । १२८ २७ द्वितीयाकतद्व्युत्पन्नत्वादि, एका- दि(४)भेदाश्च । १३१ </td><td style="width: 10%; vertical-align: top;"> जम्बूद्वीप० बृहद्विषया- नुक्रमः ॥ ७९ ॥ </td></tr> </table>				श्रीउपांगादि विषयानुक्रमे ॥ ७९ ॥	वर्णनातिदेशः ८। ६५ ९, १* परस्परं द्वाराणामबाधा । ॥ १० भरतक्षेत्रस्थानस्वरूपाकारविभागाः । ६७ ११ दक्षिणाद्धभरतविभागायामादि भूमि भागतन्मनुजवर्णनं च । ७० १२ वैताढ्यस्य स्थानायामादिवनखण्ड- गुहाविद्याधरश्रेणिनगरतन्मनुजाभि- योग्यश्रेणिदेवशिखरतलकूटसङ्ख्याः । ७७ १३ सिद्धायतनकूटदेवच्छन्दकजिन- प्रतिमावर्णनादि । ८२ १४, २३* दक्षिणाद्धभरतकूटादितद्वासि- देवराजान्यादिवर्णनादि । ८४	१६ वैताढ्यस्यान्वर्थतद्देवनामशाश्वत- त्वानि १५, उत्तरभरताद्धस्थानाकार- भागायामाकारमनुष्याकाराः १६, (जीवानयनयनरीतिर्जीवा च) । ८६ १७ ऋषभकूटवर्णनम् । ८८ ॥ इति प्रथमो बध्दस्कारः ॥ १८, ४-६* सुषमसुषमायाः काल- भेदाः, शीर्षप्रहेलिकान्तानां कालानां वर्णनं च । ९२ १९, ७८* निश्चयव्यवहारपरमाणोरारभ्य योजनान्तानां पल्योपमसागरोपमा- दीनां च निरूपणम् । ९३ २० भरतसुषमसुषमारकस्य वर्णनम् । ९९	२१ मत्ताङ्गशदिकल्पवृक्षवर्णनातिदेशः । १०८ २२ भरते सुषमसुषमारकनरवर्णनम् । ११८ २३ तन्मनुजानामाहारार्थास्वादौ । ११९ २५ तद्वसतिः २४, गृह्णामासिहिरण्य- राजदासात्रारिमित्रावाधेन्द्रमहनट- प्रेक्षाशकटगवाश्वसिंहशार्दुमाहि- स्थानुदंशमशकडिम्बदुर्भूतादिभावा- भावविचारः २५ । १२५ २६ तद्व्युत्पन्नामायुरुच्चत्वसंहननसंस्थान- गतियुगलप्रसवाः पद्मगन्धादि(६)- भेदाश्च । १२८ २७ द्वितीयाकतद्व्युत्पन्नत्वादि, एका- दि(४)भेदाश्च । १३१	जम्बूद्वीप० बृहद्विषया- नुक्रमः ॥ ७९ ॥
श्रीउपांगादि विषयानुक्रमे ॥ ७९ ॥	वर्णनातिदेशः ८। ६५ ९, १* परस्परं द्वाराणामबाधा । ॥ १० भरतक्षेत्रस्थानस्वरूपाकारविभागाः । ६७ ११ दक्षिणाद्धभरतविभागायामादि भूमि भागतन्मनुजवर्णनं च । ७० १२ वैताढ्यस्य स्थानायामादिवनखण्ड- गुहाविद्याधरश्रेणिनगरतन्मनुजाभि- योग्यश्रेणिदेवशिखरतलकूटसङ्ख्याः । ७७ १३ सिद्धायतनकूटदेवच्छन्दकजिन- प्रतिमावर्णनादि । ८२ १४, २३* दक्षिणाद्धभरतकूटादितद्वासि- देवराजान्यादिवर्णनादि । ८४	१६ वैताढ्यस्यान्वर्थतद्देवनामशाश्वत- त्वानि १५, उत्तरभरताद्धस्थानाकार- भागायामाकारमनुष्याकाराः १६, (जीवानयनयनरीतिर्जीवा च) । ८६ १७ ऋषभकूटवर्णनम् । ८८ ॥ इति प्रथमो बध्दस्कारः ॥ १८, ४-६* सुषमसुषमायाः काल- भेदाः, शीर्षप्रहेलिकान्तानां कालानां वर्णनं च । ९२ १९, ७८* निश्चयव्यवहारपरमाणोरारभ्य योजनान्तानां पल्योपमसागरोपमा- दीनां च निरूपणम् । ९३ २० भरतसुषमसुषमारकस्य वर्णनम् । ९९	२१ मत्ताङ्गशदिकल्पवृक्षवर्णनातिदेशः । १०८ २२ भरते सुषमसुषमारकनरवर्णनम् । ११८ २३ तन्मनुजानामाहारार्थास्वादौ । ११९ २५ तद्वसतिः २४, गृह्णामासिहिरण्य- राजदासात्रारिमित्रावाधेन्द्रमहनट- प्रेक्षाशकटगवाश्वसिंहशार्दुमाहि- स्थानुदंशमशकडिम्बदुर्भूतादिभावा- भावविचारः २५ । १२५ २६ तद्व्युत्पन्नामायुरुच्चत्वसंहननसंस्थान- गतियुगलप्रसवाः पद्मगन्धादि(६)- भेदाश्च । १२८ २७ द्वितीयाकतद्व्युत्पन्नत्वादि, एका- दि(४)भेदाश्च । १३१	जम्बूद्वीप० बृहद्विषया- नुक्रमः ॥ ७९ ॥					

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [उपांगसूत्र-७ “जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति”]			
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए ‘संवृत्तिक आगम सुत्ताणि’	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)	जम्बूद्वीप- बृहद्विषया- नुक्रमः 		

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [उपांगसूत्र-७ “जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति”]			
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए ‘संवृत्तिक आगम सुत्ताणि’	श्रीउपांगादि- विषयानुक्रमे ॥ ८१ ॥	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)		जम्बूद्वीप० बृहद्विषया- नुक्रमः ॥ ८१ ॥
		४७ सैन्यवर्णनं, वरदामसाधनाय चक्रिणो गमनम् । २०७ ४८, १७* एकाशीतिपदादिविभागे पौषधशालाकरणम् । २१० ४९ रथाश्वयोर्वर्णनं, वरदामप्रभाससाध- नादि । २१४ ५० सिन्धुदेव्या अष्टमपौषधादि, अव- धिनाऽऽलोक्य भद्रासनाद्युपायनादि । २१६ ५१ वैताड्यगिरिकुमाराष्टमपौषधान्ते कटका- र्घ्यणादि, तिमिरगुहाधिपकृतमाला- ष्टमान्ते तिलकचतुर्दशकार्पणादि । २१७ ५२ सेनापतिवर्णनं पाश्चात्यनिष्कुटे हस्त्यादिरत्नैः सिंहलवर्बरादि- देशसाधनाऽऽभरणभूषणोपायनादि । २२२ ५३ सुषेणकृततिमिरगुहाद्वारोद्घाटन- पौषधादि । २२४ ५४ समहिममणिरत्नेनोद्घोतः, काकिणी- रत्नेन मण्डला(४९)लेखनम् । २२९ ५५ संक्रमेणोन्मग्ननिमग्नोत्तरणम् । २३१ ५६ आपातचिलतैः सैन्यप्रतिरोधः । २३२ ५७, १८* सुषेणकृतः समहिमाश्वासिरत्ना- भ्यामापातचिलतनिषेधः । २३८ ५८ नागकुमाराराधनाऽऽगमनवृष्ट्यादि । २४१ ५९, १९* समहिमचर्मच्छत्ररत्नाभ्यां सैन्यरक्षा । २४३	६०, २०* गाथापतिरत्नकृता शाल्या- द्युत्पत्तिः । २४५ ६१, २४* नागकुमारनिर्घाटनं, चिलत- वशीकाररत्नोपायनादि । २४८ ६२ क्षुल्लकहिमवत्कुमाराष्टममाला- गोशीर्षोपायनादि । २५० ६३, २६* ऋषभकूटे नामलिखनम् । २५१ ६४, २७* विनमिनम्यष्टमो दिव्यमत्या स्त्रीरत्नरत्नाद्युवयनं, गङ्गासाधनादि च । २५४ ६६ खण्डप्रपाताधिपनृत्तमालसाधना- ऽलङ्कारोपायनादि, सुषेणकृतगङ्गा- पाश्चात्यनिष्कुटसाधनरत्नानयनादि, खण्डप्रपातगुहाद्वारोद्घाटनादि,	

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमः [उपांगसूत्र-७ “जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति”]				
	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)				
प्रत सूत्रांक यहां देखिए दीप क्रमांक के लिए देखिए ‘संवृत्तिक आगम सुत्ताणि’	श्रीउपांगादि- विषयानुक्रमे ॥ ८२ ॥	उन्मग्ननिमग्नोत्तरणम् । २५६ ६६, ४१* गङ्गापश्चिमकूले निधयष्टम- तःप्रादुर्भाववर्णनादि । २६० ६७ चतुर्दशरत्ननिषिनवकस्त्रीरत्नादि- युतस्य महद्भ्यां विनीताप्रवेशः । २६४ ६८ चक्रवर्तिताऽभिषेकवर्णनं, देवादि- सत्कारादि । २७६ ६९ चक्रादिरत्नोत्पत्तिस्थानानि । २७७ ७० चक्रवर्तित्रहृद्विवर्णनम् । २७८ ७१ आदर्शप्रेक्षणं, कैवल्यं, दशसाहस्र्या दीक्षा, अष्टापदेऽनशनादि । २८० ॥ इति भरतचरित्रम् ॥ ७२ भरतान्वर्थे पर्योपमस्थितिको भरतो देवोऽपि । २८१	॥ इति तृतीयो वक्षस्कारः ॥ ७३ क्षुल्लकहिमवद्वर्षधरवर्णनम् । २८२ ७४ पद्महृदतत्पद्ममणिपीठिकाशयनीय- श्रीदेवीतत्सामानिकपद्मपरिक्षेपादि- वर्णनम् । २८८ ७५ गङ्गासिन्धुरोहितांशाप्रपातकुण्डद्वी- पादिवर्णनम् । २९५ ७६ हिमवति सिद्धायतनक्षुल्लहिमवत्कूटादि- (११)वर्णनम् । २९८ ७७ हिमवद्वर्षाधिकारः । २९९ ७८ शब्दापातिवृत्तवैताड्यतद्देववर्णनम् । ३०० ७९ हिमवद्वर्षान्वर्थः । ३०१ ८० महाहिमवत्पर्यताधिकारः । ३०१	८१ महापद्महृदहीदेवीरोहिताहरि- कान्तानदीप्रपातकुण्डद्वीपादिवर्णनम् । ३०४ ८२ महाहिमवत्कूटानि(८) । ” ८३ हरिवर्षविकटापातिवर्णनम् । ३०६ ८४ निषधपर्वततिगिन्ध्रहृदधृतिदेवी- वर्णनम् । ३०७ ८५ हरिसीतोदाप्रपातादिसिद्धायतन- कूटादि(२)वर्णनम् । ३१० ८६ पूर्वपश्चिमविदेहदेवोत्तरकुरुभेदे- र्महाविदेहवर्णनम् । ३१२ ८८ गन्धमादनतत्कूट(७)८७, उत्तर- कुरुतद्भूमेभागवर्णनं, पद्मगन्धाद्याः (६) जातयः ८८ । ३१६	जम्बूद्वीप० बृहद्विषया- नुक्रमः ॥ ८२ ॥

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [उपांगसूत्र-७ “जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति”]				
	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)				
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए ‘संवृत्तिक आगम सुत्ताणि’	श्रीउपांगादि विषयानुक्रमे ॥ ८४ ॥	रिणीनन्दनादि(९)कूटानि । ३६९ १०६ सौमनसायामादि । ३७० १०७ पण्डकचूलिकायामादि । ३७१ १०८ पाण्डुशिलाद्यभिषेकशिलाः । ३७४ १०९ मेरोः काण्डत्रयस्य स्वरूपम् । ३७५ ११०, ६७* मेरोर्नामान्यन्वर्थश्च । ३७६ १११, ६८* नील-द्वर्षधरसीतानारी- कान्तानदीसिद्धायतनादि(९)कूट- तदन्वर्थाः । ३७८ ११२, ६९* रम्यकगन्धापातिरुक्मि- तत्कूट(८)हैरण्यवतमालयवन्त- वृत्तवैताढ्यशिखरितत्कूटैरावत- स्वरूपतदन्वर्थाः । ३८२ ॥ इति चतुर्थो वक्षस्कारः ॥	११३, ७०* जिनजन्माभिषेके भोगंकरा- द्यधोलोकवास्तव्यदिकुकुमारी- कृत्यम् । ३८८ ११४, ७१* मेघंकराद्यूर्ध्वलोकदिकुकुमारी- कृत्यम् । ३९० ११५, ७२* नन्दोत्तरासमाहारेला- देव्यलाग्वुषादि(३२)पूर्वाद्विदिक्- चित्रारूपादि(८) विदिग्मध्य- रुचकदिकुकुमारीकृत्यम् । ३९५ ११६ शक्रेन्द्रासनकम्पस्तुतिमहिम- चिकीर्षादेवाह्वानोद्घोषणापालक- यानविकुर्वणादेशः । ३९९ ११७ पालकविमानरचना । ४०१ ११८ शकसामानिकादिनिर्गमप्रति-	रूपकस्थापनमेरुनयनानि । ४०५ ११९, ७८* ईशानादि(९)देवेन्द्रा- गमनम् । ४०७ १२०, ७९* चमरवलीन्द्राद्यागमनम् । ४०९ १२१ अभिषेकसामग्र्यानयनम् । ४१२ १२२ अभिषेकहिरण्यवृष्ट्यादिवाद्यगेय- नृत्यादि । ४१९ १२३, ८०* अलङ्कारविभूषाऽष्टमङ्गला- लेखन, स्तुतिः, वृषभशृङ्गे- रभिषेकश्च । ४२२ १२४ जिनस्य प्रत्यनयनं, हिरण्यादि- वृष्टिरशुभचिन्तननिरोधोद्घोष- णामष्टाहिका च । ४२४ ॥ इति पञ्चमो वक्षस्कारः ॥	जम्बूद्वीप बृहद्विषया- नुक्रमः ॥ ८४ ॥

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [उपांगसूत्र-७ "जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति"]				
	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)				
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	श्रीउपांगादि- विषयानुक्रमे ॥ ८५ ॥	१२५ जम्बूलवणप्रदेशस्पर्शजीवप्रत्या- गमनादि । ४२५ १२६, ८२* खण्डयोजनवर्षपर्वतकूट- तीर्थश्रेणिविजयद्रहसरिस्पमाणम् । ४३२ ॥ इति षष्ठो वक्षस्कारः ॥ १२७, ८३* चन्द्रादीनां प्रकाशादि । ४३४ १३१ सूर्यस्य चतुरशीतं शतं मण्डलानां १२८, अभ्यन्तरबाह्यमण्डला- बाधा १२९, प्रतिमण्डलमभ्यन्तरं १३०, मण्डलायामविष्कम्भ- परिक्षेपाः १३१ । ४३६ १३२ सर्वाभ्यन्तरमण्डलमन्दराबाधा,	प्रतिमण्डलं तद्वृद्धिः, बाह्यमण्डला- बाधा च ४३७ १३३ अभ्यन्तरादिमण्डलायामविष्क- म्भादि । ४४० १३४ मण्डलेषु मुहूर्त्तगतिः । ४४९ १३५ दिनरात्र्योर्वृद्धिहानी । ४५३ १३६, ८४* सर्वाभ्यन्तरादिमण्डलताप- क्षेत्रस्थितिः । ४५८ १३९ उद्गमनादौ दूरमूलादिदर्शनं १३७, अतीतादिक्षेत्रे गमनादि १३८, क्रियादि १३९ । ४६२ १४१ ऊर्ध्वादितापः १४०, ऊर्ध्वकल्प- विमानोत्पन्नत्वादि १४१ । ४६३ १४२ इन्द्रच्यवने सामानिकव्यवहारः,	तद्विरहकालश्च । ४६४ १४६ चन्द्रस्य मण्डलानि १४३, अभ्य- न्तरबाह्याबाधा १४४, मण्डलपर- स्पराबाधा १४५, मण्डलायामादि १४६ । ४६६ १४७ मेर्वभ्यन्तरादिमण्डलाबाधा । ४६८ १४८ सर्वाभ्यन्तरादिमण्डलायामादि । ४७० १४९ अभ्यन्तरादिमण्डलेषु मुहूर्त्तगतिः । ४७३ १५० नक्षत्राणां मण्डलान्यवगाहोऽ- भ्यन्तरबाह्यान्तरं च, परस्परमन्तर- मायामादि मेर्वबाधा मुहूर्त्तगति- श्चन्द्रमण्डलावतारभागशतगम- नानि । ४८०	जम्बूद्वीप० बृहद्विषया- नुक्रमः ॥ ८५ ॥

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमः [उपांगसूत्र-७ “जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति”]								
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए ‘संवृत्तिक आगम सुत्ताणि’	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) <table border="1" style="width: 100%; border-collapse: collapse;"> <tr> <td style="width: 25%; vertical-align: top;"> श्रीउपांगादि विषयानुक्रमे ॥ ८६ ॥ </td><td style="width: 25%; vertical-align: top;"> १५१ चन्द्रसूर्ययोरुदक्पाच्युद्गमनादि- (दिनरात्रिमानाद्यतिदेशः)। ४८५ १५२, ९०* नक्षत्रादिसंवत्सरतन्मास- पर्वरूक्षणानि। ४९० १५३, ९९* लौकिकलोकोत्तरमास- पक्षदिवसतत्तिथिरात्रितत्तिथि मुहूर्त्तनामानि। ४९३ १५४ वचादीनि चलस्थिरकरणानि तत्तिथिनियमश्च। ४९४ १५५ संवत्सराद्येषु चन्द्राद्यादयः, युगेऽयनादिमानं च। ४९५ १००* योगादि(१०)द्वारागाथा। ४९५ १५६ नक्षत्रनामानि। ४९६ </td><td style="width: 25%; vertical-align: top;"> १५७, १०१* नक्षत्राणां चन्द्रेण दक्षिणोत्तरादियोगः। ४९८ १५९, १०३* अभिजिदादीनां देवता १५८तारकाणि च १५९, १०३*। ५०० १६०, ११०* नक्षत्राणां गोत्राणि १०७*, संस्थानानि ११०*, ११०। ५०१ १६१, ११८* अभिजिदादीनां चन्द्र- सूर्याभ्यां सह योगकालमानम्। ५०४ १६२, ११९* कुलोपकुलतदुभयानि पूर्णिमाऽमावास्यातन्नाक्षत्रकुलो- पकुलादियोगाः। ५१३ </td><td style="width: 25%; vertical-align: top;"> १६३, १२०* श्रावणादिपूतराषाढादि- नयनदिनमानपौरुषीमानानि योगादिसङ्ग्रहागाथां च। ५२१ १६६, १२२* अवस्तनादिस्थान- शशिपरिवारादिसङ्ग्रहागाथे १२२* चन्द्रसूर्ययोरधस्तना- दिषु तारकाः १६४, अष्टाशीति- ग्रहादिनामानि परिवारः १६५, मन्दरधरणीतलपरस्परज्योति- श्चक्राद्यवाधा १६६। ५२४ १६७, १२७* बाह्याभ्यन्तरोपर्यधो- नक्षत्रचारश्चन्द्रसंस्थानादि च। ५२५ १६८, १२७* चन्द्रविमानवाहकदेव- वर्णनम्। ५३१ </td><td style="width: 10%; vertical-align: top;"> जम्बूद्वीप बृहद्विषया- नुक्रमः ॥ ८६ ॥ </td></tr> </table>				श्रीउपांगादि विषयानुक्रमे ॥ ८६ ॥	१५१ चन्द्रसूर्ययोरुदक्पाच्युद्गमनादि- (दिनरात्रिमानाद्यतिदेशः)। ४८५ १५२, ९०* नक्षत्रादिसंवत्सरतन्मास- पर्वरूक्षणानि। ४९० १५३, ९९* लौकिकलोकोत्तरमास- पक्षदिवसतत्तिथिरात्रितत्तिथि मुहूर्त्तनामानि। ४९३ १५४ वचादीनि चलस्थिरकरणानि तत्तिथिनियमश्च। ४९४ १५५ संवत्सराद्येषु चन्द्राद्यादयः, युगेऽयनादिमानं च। ४९५ १००* योगादि(१०)द्वारागाथा। ४९५ १५६ नक्षत्रनामानि। ४९६	१५७, १०१* नक्षत्राणां चन्द्रेण दक्षिणोत्तरादियोगः। ४९८ १५९, १०३* अभिजिदादीनां देवता १५८तारकाणि च १५९, १०३*। ५०० १६०, ११०* नक्षत्राणां गोत्राणि १०७*, संस्थानानि ११०*, ११०। ५०१ १६१, ११८* अभिजिदादीनां चन्द्र- सूर्याभ्यां सह योगकालमानम्। ५०४ १६२, ११९* कुलोपकुलतदुभयानि पूर्णिमाऽमावास्यातन्नाक्षत्रकुलो- पकुलादियोगाः। ५१३	१६३, १२०* श्रावणादिपूतराषाढादि- नयनदिनमानपौरुषीमानानि योगादिसङ्ग्रहागाथां च। ५२१ १६६, १२२* अवस्तनादिस्थान- शशिपरिवारादिसङ्ग्रहागाथे १२२* चन्द्रसूर्ययोरधस्तना- दिषु तारकाः १६४, अष्टाशीति- ग्रहादिनामानि परिवारः १६५, मन्दरधरणीतलपरस्परज्योति- श्चक्राद्यवाधा १६६। ५२४ १६७, १२७* बाह्याभ्यन्तरोपर्यधो- नक्षत्रचारश्चन्द्रसंस्थानादि च। ५२५ १६८, १२७* चन्द्रविमानवाहकदेव- वर्णनम्। ५३१	जम्बूद्वीप बृहद्विषया- नुक्रमः ॥ ८६ ॥
श्रीउपांगादि विषयानुक्रमे ॥ ८६ ॥	१५१ चन्द्रसूर्ययोरुदक्पाच्युद्गमनादि- (दिनरात्रिमानाद्यतिदेशः)। ४८५ १५२, ९०* नक्षत्रादिसंवत्सरतन्मास- पर्वरूक्षणानि। ४९० १५३, ९९* लौकिकलोकोत्तरमास- पक्षदिवसतत्तिथिरात्रितत्तिथि मुहूर्त्तनामानि। ४९३ १५४ वचादीनि चलस्थिरकरणानि तत्तिथिनियमश्च। ४९४ १५५ संवत्सराद्येषु चन्द्राद्यादयः, युगेऽयनादिमानं च। ४९५ १००* योगादि(१०)द्वारागाथा। ४९५ १५६ नक्षत्रनामानि। ४९६	१५७, १०१* नक्षत्राणां चन्द्रेण दक्षिणोत्तरादियोगः। ४९८ १५९, १०३* अभिजिदादीनां देवता १५८तारकाणि च १५९, १०३*। ५०० १६०, ११०* नक्षत्राणां गोत्राणि १०७*, संस्थानानि ११०*, ११०। ५०१ १६१, ११८* अभिजिदादीनां चन्द्र- सूर्याभ्यां सह योगकालमानम्। ५०४ १६२, ११९* कुलोपकुलतदुभयानि पूर्णिमाऽमावास्यातन्नाक्षत्रकुलो- पकुलादियोगाः। ५१३	१६३, १२०* श्रावणादिपूतराषाढादि- नयनदिनमानपौरुषीमानानि योगादिसङ्ग्रहागाथां च। ५२१ १६६, १२२* अवस्तनादिस्थान- शशिपरिवारादिसङ्ग्रहागाथे १२२* चन्द्रसूर्ययोरधस्तना- दिषु तारकाः १६४, अष्टाशीति- ग्रहादिनामानि परिवारः १६५, मन्दरधरणीतलपरस्परज्योति- श्चक्राद्यवाधा १६६। ५२४ १६७, १२७* बाह्याभ्यन्तरोपर्यधो- नक्षत्रचारश्चन्द्रसंस्थानादि च। ५२५ १६८, १२७* चन्द्रविमानवाहकदेव- वर्णनम्। ५३१	जम्बूद्वीप बृहद्विषया- नुक्रमः ॥ ८६ ॥					

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [उपांगसूत्र-७ “जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति”]		
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए ‘संवृत्तिक आगम सुत्ताणि’	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) श्रीउपांगादि- विषयानुक्रमे ॥ ८७ ॥ १७१ चन्द्रादीनां शीघ्रमन्दगतयः १६९, महालक्ष्मिकता च १७०, तार- कयोरन्तरम् १७१। ५३२ १७३, १२९* चन्द्रस्याग्रमहिष्यः, पूज्यजिनसक्थिभावाद्धिमाने मैथुननिषेधश्च, अङ्गारकादिग्र- हाग्रमहिष्यः १७२, १२९* चन्द्रादिदेवदेवीजघन्योत्कृष्ट- स्थितयः १७३। ५३५ १७४, १३१* नक्षत्रदेवताः । ५३६ १७६ चन्द्रादीनामल्पबहुत्वं १७५, जम्बूद्वीपे तीर्थकरचक्रिबलवासु- देवनिधिपञ्चकेन्द्रियरत्नसंख्या १७६। ५३८ १७२ जम्बूद्वीपस्यायामविष्कम्भपरि- क्षेपोद्वेधोच्चत्तसर्वाग्राणि १७७, तस्य शाश्वताशाश्वतत्वं १७८, पृथिव्यादिपरिणामः सर्वप्राणो- त्पातश्च १७९। ५३९ १८१ जम्बूद्वीपस्यान्वर्थः १८०, उपसंहारः १८१। ५४२ ॥ इति सप्तमो वक्षस्कारः ॥ ॥ प्रशस्तिः ॥ ५४३ ॥ इति श्रीजम्बूद्वीपप्रज्ञप्ते- र्बृहद्विषयानुक्रमः ॥ जम्बूद्वीप० बृहद्विषया- नुक्रमः निरयावल्या अङ्कसूचा च ॥ ८७ ॥		

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [उपांगसूत्र- ८ से १२ “निरयावलिका-पंचक”]													
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए ‘संवृत्तिक आगम सुत्ताणि’	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)													
	[आगम १९-२३] उपांग ८-१२ “निरयावलिका-आदि पंचक”													
	अथ श्रीनिरयावलिकासूत्रस्य		११	२४	परिवहति	११	२९	१०	निक्खेवओ ॥३॥	२५	३९	५	१२ य ॥१॥	१॥
	सूत्रतद्वाथासूचा सान्तशब्दा		१२	१३	संवडुंति	१२	३५	३०	पणत्ते ॥४॥	२६	॥ इति सूत्रगाथाङ्कसूचा ॥			
	सूत्राणि ३१; सूत्रगाथाः ५		१२	२४	दाओ	१३	३६	१४	निक्खेवओ ॥१॥	२७	इति निरयावलिकासूत्रस्य सूत्रतद्वाथाङ्क- सूचा ॥			
	पत्राङ्कः पञ्चयङ्कः शब्दान्तः सूत्राङ्कः		१३	८	हव्वमागच्छति	१४	३६	२२	सम्मत्तो ॥	२८				
	१ १२ पुडविसिलापट्टए		१	१४	६	होत्था	१५	३८	२५	२९				
	२ १७ पडिगया		२	१४	८	विहरति	१६	४२	१०	३०				
	३ १ विहरति		३	१७	३	निच्छुहावेइ	१७	४२	१५	सम्मत्तं	३१			
	३ २१ कण्हे १० उ		४	१८	२५	उववन्ने	१८	इति सूत्राङ्कसूचा						
४ १९ सुरूवे		५	१९	२	पन्नत्ते	१९	अथ सूत्रगाथाङ्कसूचा							
६ १७ ओयाए		६	१९	११	भाणियव्वो तहा	२०	१९	१६	परियत्ता ॥१॥	१				
९ ५ पडिगया		७	२०	८	त्तिवेमि ॥१॥	२१	२९	२०	॥१॥	२				
९ ९ उववन्ने		८	२१	४	सम्मत्तो	२२	२६	२१	समादहे ।	२॥				
९ १७ अणुपविट्ठा		९	२३	५	निक्खेवओ ॥१॥	२३	२७	१	समादहे ।	३॥				
११ १८ परिवहति		१०	२३	२०	॥२॥	२४	३७	३	गंधदेवी य ॥१॥	४॥				

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [उपांगसूत्र- ८ से १२ “निरयावलिका-पंचक”]		
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए ‘संवृत्तिक आगम सुत्ताणि’	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) ॥ अथ श्रीनिरयावलिकाया बृहद्विषयानुक्रमः ॥ १ राजगृहनगरगुणशीलचैत्यादि- वर्णनातिदेशः । १ २ आर्यसुधर्मवर्णनाद्यतिदेशः केशिवत् । २ ३ जम्बूस्वामिवर्णनातिदेशः । २ ४ निरयावलिकाकल्पावतंसिकापुष्पिका- पुष्पचूलिकावृष्णिदशावर्गाः, निरयावलिकासु कालादी(१०)- न्यध्ययनानि । ३ ५ चम्पापूर्णभद्रश्रेणिकपुत्रकोणिक- पद्मावतीकालीकालकुमारवर्णनाति- देशः । ५ ६ कालस्य रथमुशलसङ्ग्रामे गमनम् । ६ ७ श्रीवीरसमवसरणादि, प्रश्ने रथमुशल- युद्धे कालस्य कालकरणकथनम् । ९ ८ कालस्य पङ्कप्रभायां हेमाभे दशसाग- रस्थितिकृतयोत्पत्तिः । ” ९ युद्धनिमित्तकथनेऽभयस्य वर्णने चित्र- स्यातिदेशः चेलणायाश्च प्रभावत्याः । ” १० गर्भागमनदोहदपूर्तिः । ११ ११ गर्भस्यानाशः । , १२ कोणिकजन्मोत्कुरुटिकायां त्यागः, श्रेणिकग्रहणं च । १२ १३ कोणिकाङ्गुलीवेधः, मुखे धरणमष्टको दायश्च । १२ १४ श्रेणिकबन्धनं, कोणिकस्य नृप- त्वं च । १३ १५ चेलणातुष्टिपृच्छा, स्वरूपकथनं परशुहस्तस्य गतिः, तालपुटमक्षणं, कोणिकविलापः, चम्पानिवेशश्च । १४ १६ कालादीनां राज्यभागदानम् । ” १७ बिहलस्य सेचनकक्रीडा, हार- हस्तियुगल्याचनं, विशालागमनं, त्रिदूतप्रेषणम् । १७ १८ अर्द्धराज्यदानेऽर्पणोक्तिः, काला दीनामैकमत्यं, युद्धाय निर्गमः, गण- (१८)राजसभा, युद्धाय निर्गमः । १८ १९ कालस्य दृढप्रतिज्ञाद्विदेहेषु मुक्तिः । १९ ॥ इति प्रथमाध्ययनम् ॥ २० सुकालकुमारवर्णनं, शेषाणा(८)- मतिदेशश्च । ” ॥ इति निरयावलिकायाः प्रथमो वर्गः ॥ २१ पद्मादी(१०)न्यध्ययनानि, काल- पद्मावत्योः पुत्रः पद्मः, स्थविरा- न्ते दीक्षा, सौधर्मे देवत्वम् । २० २२, १* सुकालपुत्रमहापद्मस्येशाने गतिः, शेषाण्यष्ट १* २१		

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [उपांगसूत्र- ८ से १२ “निरयावलिका-पंचक”]				
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए ‘संवृत्तिक आगम सुत्ताणि’	श्रीउपांगादि विषयानुक्रमे ॥ ९० ॥	॥ इति द्वितीयो वर्गः ॥ २३, २* चन्द्रस्योत्पत्तिः, पार्श्वान्तिके दीक्षा च । २३ २४ सूर्यस्योत्पत्तिः । , २५ शुक्रस्योत्पत्तिः, पार्श्वान्तिके सोमिल- स्य यात्रादिप्रश्नाः, श्रावकधर्माङ्गी कारः, मिथ्यात्वं, आम्राचारोपणं, होतृकादिषु तापसत्वं, दिशां प्रोक्षणं, देवागमः, दुष्प्रव्रजितत्वाख्यानं, काष्ठ- मुद्राबन्धः पञ्चमदिवसे प्रश्नोत्तरे, अणुव्रतप्रतिपत्तिश्च । २९ २६ सुभद्रायाः पुत्राभिलाषः, सुव्रता- ऽऽर्याऽऽगमनं, श्रावकधर्माङ्गीकारः, दीक्षा, बालाभ्यङ्गनादि, पृथग्भावः,	बहुपुत्रिकतयोत्पत्तिः, बिभेले जन्म, द्वात्रिंशत्पुत्राः, राष्ट्रकूटाज्ञा, श्रावक- धर्माङ्गीकारः प्रव्रज्या च । ३५ २७ पूर्णभद्रदीक्षादि । ३६ २८ माणिभद्रदीक्षादि, दत्ताद्यतिदेशश्च । ३६ ॥ इति तृतीयो वर्गः ॥ २९, ४॥* भूता दारिका, पार्श्वसमवसर- णादि, भूतादीक्षा, शरीरवकुशत्वं, ह्रीर्देव्याद्यतिदेशः । ३८ ॥ इति चतुर्थो वर्गः ॥ ३०, ५॥* निषधा(१२)द्यध्ययनानि, रैवतकनन्दनद्वारवतीकृष्णवर्णनं, नेमिगणभृद्वररुचिकृता निषधपृच्छा, वीराङ्गदभवे दीक्षा, मनोरमे देवः,	निषधस्य धर्मजागरिका, दीक्षा, सर्वार्थसिद्धे देवत्वं, विदेहेषु मुक्तिः । ४२ ॥ इति पञ्चमो वर्गः ॥ ३१ निरयावलिकाश्रुतस्कन्धवर्गादि । , ॥ इति श्रीनिरयावलिकाया बृहद्विषयानुक्रमः ॥	निरयावल्याः प्रकीर्णकानां च बृहद्विषयानु- क्रमः ॥ ९० ॥

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [प्रकीर्णकसूत्र- १ “चतुःशरण”]					
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए ‘संवृत्तिक आगम सुत्ताणि’	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) <table><tr><td> ॥ अथ श्रीचतुःशरणादिप्रकीर्णक- दशकस्य बृहद्विषयानुक्रमः ॥ १ ॥ अथ चतुःशरणम् ॥ १* आवश्यकषट्के षडर्थाधिकाराः । १ ६ ७* सामायिकेन चारित्रस्य चतुर्विंशति- स्तवेन दर्शनस्य प्रतिपत्त्या ज्ञानादीनां </td><td> २९* विविधसिद्धगुणकीर्त्तनतच्छरणे । २ ४०* चतुर्दशपूर्व्यादिसाधुशरणम् । ,, ४८* विविधमहिम्ना धर्मस्य शरणम् । ४ ५४* मिथ्यात्वार्हदाद्यवर्णजीवपरितापना- धर्मविरुद्धादीनां गर्हा । ४ ५८* अर्हदादीनामर्हत्त्वादेर्जिनवचना- नुस्मारिकृत्यानां चानुमोदना । ,, ६०* कुशलप्रकृतिवन्धशुभानुबन्धादि । ५ ६३* त्रिकालकर्त्तव्यता जन्मसफलता निवृत्तिकारणत्वं च । ५ </td></tr><tr><td> प्रतिक्रमणेन तत्संखलितस्य कायोत्सर्गेण चरणाद्यतिचाराणां प्रत्याख्यानेन लपोऽतिचारस्य सर्वै- रावश्यकैर्वीर्याचारस्य च शुद्धिः । १ ८* स्वप्नचतुर्दशकम् । १ ९* कुशलानुबन्धध्ययनकीर्त्तनप्रतिज्ञा । १ १०* चतुःशरणदुष्कृतगर्हासुकृतानु- मोदनानि । १ ११* अर्हदादिचतुष्कशरणलाभो धन्यस्य । १ २२* विविधार्हद्विषयकीर्त्तनेन तच्छरणम् । २ </td><td></td></tr></table>		॥ अथ श्रीचतुःशरणादिप्रकीर्णक- दशकस्य बृहद्विषयानुक्रमः ॥ १ ॥ अथ चतुःशरणम् ॥ १* आवश्यकषट्के षडर्थाधिकाराः । १ ६ ७* सामायिकेन चारित्रस्य चतुर्विंशति- स्तवेन दर्शनस्य प्रतिपत्त्या ज्ञानादीनां	२९* विविधसिद्धगुणकीर्त्तनतच्छरणे । २ ४०* चतुर्दशपूर्व्यादिसाधुशरणम् । ,, ४८* विविधमहिम्ना धर्मस्य शरणम् । ४ ५४* मिथ्यात्वार्हदाद्यवर्णजीवपरितापना- धर्मविरुद्धादीनां गर्हा । ४ ५८* अर्हदादीनामर्हत्त्वादेर्जिनवचना- नुस्मारिकृत्यानां चानुमोदना । ,, ६०* कुशलप्रकृतिवन्धशुभानुबन्धादि । ५ ६३* त्रिकालकर्त्तव्यता जन्मसफलता निवृत्तिकारणत्वं च । ५	प्रतिक्रमणेन तत्संखलितस्य कायोत्सर्गेण चरणाद्यतिचाराणां प्रत्याख्यानेन लपोऽतिचारस्य सर्वै- रावश्यकैर्वीर्याचारस्य च शुद्धिः । १ ८* स्वप्नचतुर्दशकम् । १ ९* कुशलानुबन्धध्ययनकीर्त्तनप्रतिज्ञा । १ १०* चतुःशरणदुष्कृतगर्हासुकृतानु- मोदनानि । १ ११* अर्हदादिचतुष्कशरणलाभो धन्यस्य । १ २२* विविधार्हद्विषयकीर्त्तनेन तच्छरणम् । २	
॥ अथ श्रीचतुःशरणादिप्रकीर्णक- दशकस्य बृहद्विषयानुक्रमः ॥ १ ॥ अथ चतुःशरणम् ॥ १* आवश्यकषट्के षडर्थाधिकाराः । १ ६ ७* सामायिकेन चारित्रस्य चतुर्विंशति- स्तवेन दर्शनस्य प्रतिपत्त्या ज्ञानादीनां	२९* विविधसिद्धगुणकीर्त्तनतच्छरणे । २ ४०* चतुर्दशपूर्व्यादिसाधुशरणम् । ,, ४८* विविधमहिम्ना धर्मस्य शरणम् । ४ ५४* मिथ्यात्वार्हदाद्यवर्णजीवपरितापना- धर्मविरुद्धादीनां गर्हा । ४ ५८* अर्हदादीनामर्हत्त्वादेर्जिनवचना- नुस्मारिकृत्यानां चानुमोदना । ,, ६०* कुशलप्रकृतिवन्धशुभानुबन्धादि । ५ ६३* त्रिकालकर्त्तव्यता जन्मसफलता निवृत्तिकारणत्वं च । ५					
प्रतिक्रमणेन तत्संखलितस्य कायोत्सर्गेण चरणाद्यतिचाराणां प्रत्याख्यानेन लपोऽतिचारस्य सर्वै- रावश्यकैर्वीर्याचारस्य च शुद्धिः । १ ८* स्वप्नचतुर्दशकम् । १ ९* कुशलानुबन्धध्ययनकीर्त्तनप्रतिज्ञा । १ १०* चतुःशरणदुष्कृतगर्हासुकृतानु- मोदनानि । १ ११* अर्हदादिचतुष्कशरणलाभो धन्यस्य । १ २२* विविधार्हद्विषयकीर्त्तनेन तच्छरणम् । २						
	[आगम-२४] प्रकीर्णक-१ “चतुःशरण”					

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [प्रकीर्णकसूत्र- २ “आतुरप्रत्याख्यान”]			
	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)			
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए ‘संवृत्तिक आगम सुत्ताणि’	॥ २ अथातुरप्रत्याख्यानम् ॥ ६४* बालपण्डितमरणलक्षणम् । ” ६५* देशविरतिलक्षणम् । ” ६८* अणुव्रतगुणव्रतशिक्षाव्रतानि । ” ७०* बालपण्डितमरणे आशुकार- मरणादिकारणानि । ५ ७१* भक्तपरिज्ञोक्तोपक्रमातिदेशः । ५ ७२* कल्पोपपत्त्यादि तत्फलम् । ५ ७३* पण्डितपण्डितमरणोपक्रमः । ५ १ उत्तमार्थादिप्रतिक्रमणमज्ञानादि- ध्यानत्रिषष्टिप्रतिक्रमणं च । ६ ७८* श्रीवर्द्धमानगणधरनमस्कारः, प्राणा- रम्भादिप्रत्याख्यानं, साम्यं, वैराशा- नां व्युत्सर्गः, समाधिपालनमाहार- सञ्ज्ञागौरवकषायममत्वत्याग- क्षामणानि साकारप्रत्याख्यानं च । ७	८६* सिद्धनमस्कारः, तत्त्वश्रद्धा, पाप- प्रत्याख्यानं, संस्तारकप्रतिज्ञा, दुष्कृतव्युत्सर्गः, सामायिकोच्चारः, उपविशरीरादिव्युत्सर्गः, साम्यादि, रागाद्युत्सर्गः, आत्मात्मनश्च । ७ ८७* आत्मनो ज्ञानादिमयत्वम् । ७ ९४* एकशस्यैवोत्पत्त्यादि, आत्मनः शाश्वत- त्वं, संयोगमूलं दुःखं, मूलोत्तर- गुणानाराधनाप्रतिक्रमणं, भयमद- सञ्ज्ञागौरवाशातनारागद्वेषासंयमा- ज्ञानमिध्यात्वममत्वनिन्दागर्हादि । ८ ९५* बालवदालोचना । ” ९६* आलोचकगुणाः । ” ९७* अकृतज्ञताक्षामणम् । ” ९८* बालादि(३)मरणत्रयलक्षणानि । ” ९९* अनाराधकलक्षणानि । ” १०६* मरणविराधनायां कान्दर्पिकाद्या (५)देवदुर्गतयः, दुर्लभसुलभ-	लक्षणम् । ८ १०७* जिनवचनाज्ञस्य बालमरणम् । ” १०९* शस्त्रग्रहणादीनि मरणानुवर्तमानि, पण्डितमरणप्रतिज्ञा । ९ ११०* उद्वेजकजातिमरणवेदनास्मरणम् । ” १११* वेदनोत्पादे स्वभावदर्शनम् । ” ११४* सर्वपुद्गलाहारादि, सरिद्धिर्लवण- वत्कामभोगैरवृत्तिः, सचित्ताहार- विपाकेक्षणम् । ” ११८* परिक्रमण आवश्यकत्वम् । ” १२४* भवविमुक्तिर्लक्षणं, सर्वज्ञोपदेशः, वीतरागहेतुपदस्मृतिः, आराधना- फलम् । १० १२६* श्रमणत्वसंयतत्वध्यानं, शेषव्यु- त्सर्गः, जिनवचोमार्गलाभः, मरणे निर्भयत्वम् । ”	१२८* धीरकापुरुषपुशीलदुःशीलानां मरणम् । ” १२९* ज्ञानाद्युपयोगकारकस्य मुक्तिः । ” १३०* चिरोषितब्रह्मचर्यादिसिद्धिः । ” १३१* निष्कषायादेः शुभप्रत्याख्यानता । ” १३३* आतुरप्रत्याख्यानस्य फलमुप- संहारश्च । ”
	[आगम-२५] प्रकीर्णक-२ “आतुरप्रत्याख्यान”			

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [प्रकीर्णकसूत्र- ३ “महाप्रत्याख्यान”]			
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए ‘संवृत्तिक आगम सुत्ताणि’	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) ॥ ३ अथ महाप्रत्याख्यानम् ॥ १५७* तीर्थकरादिनमस्कारः, श्रद्धानं, पापप्रत्याख्यानं, दुष्कृतनिन्दा, सामायिककृतिः, उपध्यादित्यागः, रागादिव्युत्सर्गः, क्षामणा, निन्द- निन्दादि, ममत्वपरिज्ञानादि, आत्मनो ज्ञानत्वादि, आराधना- निन्दादि, आत्मन एकत्वादि, संयोग- मूल दुःखं, असंयममिथ्यात्वादि- परिज्ञानादि, अपराधक्षामणा, बालवन्मायात्यागेन ऋजोर्निर्वाणम् । १६२* भावशल्यदोषाः । १६५* आलोचनादिना कर्मलघुता, यथा- वत्प्रायश्चित्तकृतिः, यथावृत्तकथनम् । १६७* प्राणारम्भादिप्रत्याख्यानम् । १६९* पालनभावविशुद्धस्वरूपम् ।	१७१* क्षीरनयनोदकयोः सागरसमत्वम् । १८१* यावल्लोकप्रदेशं प्रतियोगि च मरणं, बालमरणानि, मात्रादिसम्बन्धवहुता, एकस्य कर्मकरणादि, गतिचतुष्क- वेदनादेः स्मरणेन पण्डितमरणम् । २०९* पण्डितमरणे फलं, विधिः, सर्व- पुद्गलानामाहारपरिणामिते, नरक- म्लेच्छजातिभ्रमणम्, कामार्थ- भोजनगन्धशब्दादि, युष्म्यादिसुखै- रतृप्तिराणं च, राज्यभोगैरपि, तृष्णासुखेच्छाभयोरच्छेदः, प्रार्थना- निन्दा, मुक्तिकारणानि, महाव्रता- रोपः, क्रोधकलहादित्यागः, इन्द्रिय- संवरणादि, लेश्याभयगुप्त्यादीनां त्यागादाने । २१२* संगशल्यत्यागः, गुप्तिमिति शरणं,	उपदेशबलेन तपःपोतधरणम् । २१७* कन्दरासु दुर्गोऽप्यर्थसाधनं, किं पुनः सङ्ग्रहबले जिनोक्तिश्रवणे च, शिलातलगता धन्याः । २२१* परिकर्मण आवश्यकता । २२२* तपसा कर्मनाशः । २२३* पण्डितमरणान्मरणान्तः । २२५* अनशनादिना पण्डितमरणम् । २२६* इन्द्रियसुखसातस्य मोहः । २२७* लज्जादिनाऽनालोचकाऽनाराधकाः । २३१* आराधनायाः श्रेयस्त्वं, आत्मनः संस्तारकत्वं, जिनवचनानुगमादिना- ऽमूढसङ्ज्ञता, प्रमोदे तपोलोपः । २३४* संवरेण कर्मदाहः ज्ञानिनः कर्म- क्षयश्च । २३९* मरणे पदस्याप्युपकारः । २४०* धर्मस्य भूतहितत्वादित्वम् ।	२४४* श्रमणत्वाद्यनुष्ठानं, निषिद्धत्यागः, उपध्यादेरचिन्तनीयादेरसंयमादेश्च व्युत्सर्गः । २४६* एकेनापि पदेन प्रत्याख्यानान्तासमाधिः । २५१* अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसाधूनां मङ्गलत्वादि । २५३* सिद्धोपसम्पत्त्यादिना आराधकत्वम् । २५८* वेदनासु नरकवेदनानां कृतकर्मणा दुःखविपाकानां च स्मरणम् । २७२* अभ्युद्यतमरणं महापुरुषसेवितं, तपःस्नेहपानं, आराधनापताकाहरणं, कर्मवल्लीच्छेदः, भवत्रयेण मुक्तिः, रक्षावतारः, वद्धकक्षता, कषायादि- नाशेन पताकाहरणं, जीवनमरणयो- रचिन्ता, उद्यतभावत्वं उत्कृष्टजघन्य- मध्यमाराधनाफलम् । २७५* सर्वभूतसाभ्यादि धीरमरणं प्रत्या- ख्यानफलं च ।
	[आगम-२६] प्रकीर्णक-३ “महाप्रत्याख्यान”			

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [प्रकीर्णकसूत्र- ४ “भक्तपरिज्ञा”]			
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए ‘संवृत्तिक आगम सुत्ताणि’	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)			
	॥ ४ अथ भक्तपरिज्ञा ॥ २८०* वीरनमस्कारः शासनस्तुतिः ज्ञान- व्यवसायोपदेशः, मोक्षसुखस्या- बाध्यता, भवसुखस्य परिणाम- दारुणता च । २० २८३* आज्ञाऽऽराधनात् शाश्वतसुखं, ज्ञाना- द्याराधनं, अभ्युद्यतमरणेनाविकला- राधनम् । २० २९०* भक्तपरिज्ञा(३)द्यभ्युद्यतमरणं, सविचाराविचारमाद्यं, धृतिचलविक- लानां प्रशमनसुखपिपासितादीनां भक्तपरिज्ञा । ” २९१* भवस्य दुरन्तता । २० ३०४* नत्वा भक्तपरिज्ञविज्ञप्तिः, आलो-	चनादिप्रतिपत्तिः, वन्दनं, शुद्धि- हेतुराराधना, बाह्यादालोचनादानं, प्रायश्चित्तप्रतिपत्तिः, महाव्रताद्यारोपणं, यावज्जीवप्रतिज्ञाप्रत्यर्पणं; उपस्थापना, देशविरतस्याणुव्रतारोपणा २१ ३१०* गुरुसङ्घपूजा, जिनेन्द्रभवनादिषु द्रव्यदानादि, संस्तारकप्रव्रज्या, चरमप्रत्याख्यानं, भक्तपरिज्ञाप्रति- पत्तिः । २२ ३१४* क्षेत्रप्रतिलेखना, त्रिविधाहार- प्रत्याख्यानं, द्रव्यदर्शनं, भुक्त्वा- ऽपि संवेगः, शुभध्यानम् । ” ३१७* समाधिपानं तल्लक्षणं फलं च । ” ३२५* सङ्घनिवेदनमुत्सर्गश्च, चतुर्धाऽऽ-	हारत्यागः, चैत्यवन्दनं, सङ्घक्षामणा, आचार्यादिक्षामणा, अपराधक्षामणा, मृगावतीवत्पापक्षयः । २३ ३२७* अनुशास्तिस्वरूपम् । ” ३३४* मिथ्यात्वच्छेदः, सम्यक्त्वभावना, वीतरागभक्तिः, नमस्काररतिः, स्वाध्यायोद्यमः, व्रतरक्षा, शल्य- त्यागः, इन्द्रियदमः, कषायधातुः, मिथ्यात्ववर्जनं, दृढसम्यक्त्वता, नमस्कारकुशलता च । ” ३४३* मृगतृष्णावदधर्मात्सुखेच्छा, अग्न्यादेरपि तीव्रं मिथ्यात्वं, दत्त इव साधुद्वेषद्वयसनं, सम्यक्त्वप्रति- ष्ठानि ज्ञानादीनि, जिनशासनरक्तता,	सदर्शनस्यापर्यटनं, दर्शनरहितस्या- सिद्धिः, सदर्शनस्य जिननामदर्शन- स्यानर्घ्यता, अक्षयसुखहेतुता च । २४ ३५०* अर्हदादिभक्तिः, दुर्गतिनिवारणं, परम्परसुखप्राप्तिश्च, नाभक्तिमतो निर्वृतिः, अभक्तिमानूपरे शालीवापी अबीजसस्येप्सुः अनभ्रवर्षेप्सुश्च मणिकारदृष्टान्तः । २४ ३५६* संसारक्षयकारणो नमस्कारः, संसारोच्छेदः, मेण्टदृष्टान्तः, तं विना द्रव्यलिङ्गत्वं, आराधनाहस्तः, सुगतौ रथः, सुदर्शनदृष्टान्तः । २५ ३६३* ज्ञानं, हृदयपिशाचवशीकरणं, हृदयकृष्णसर्पोपशमनं, मनोमर्कट-
	[आगम-२७] प्रकीर्णक-४ “भक्तपरिज्ञा”			

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [प्रकीर्णकसूत्र- ४ “भक्तपरिजा”]			
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए ‘संवृत्तिक आगम सुत्ताणि’	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)			

बन्धनं, संसारेऽप्यनाशकारणं, यवर्षेः चिलातिपुत्रस्य च दृष्टान्तः । २५ ३७१* जीववधत्यागः, आत्मौपम्येन दया, अनन्यधर्मत्वं, वधे सम्बन्धिवधः, दयायां स्वदया, हिंसाफलं दुःखं, अहिंसाफलमारोग्यादि, चण्डाल- दृष्टान्तः । २६ ३७६* यतेरपि भाषादोषेन लेपः, सत्यं प्रशस्तं, सत्यवचसो विश्वासादि, इतरस्य पाषण्डचाण्डालता, वसु- दृष्टान्तः । २६ ३८१* अदत्तदन्तशोधनस्यापि त्यागः, अर्थहारी जीवितहारी, अदत्तं लोक-	धर्मविरुद्धं, दारिद्र्यादिहेतुः, श्रावकपुत्रो दृष्टान्तः । २५ ४०५* कामा दोषहेतवः, दुःखावहा मैथुन- सञ्ज्ञा, कामो भुजङ्गोपमः, ललक- वेदना, वणिजः कुवेरदत्तस्य च दृष्टान्तः, महिला दोषवह्यः, दुःख- समुद्रपातहेतुः, नदीवद् गुरुगिरि- भेदिन्यः, महिलासु भुजङ्गीष्वि- वाविश्वासः, निधनकारिकाः, हृदयहारिकाः वध्यमालावद्धि- नाशिकाः मालतीव मर्दनासहाश्च, देवरतिनृपदृष्टान्तः, शोकदुरिता- दिकारिण्यः अपलापनस्थानं घन- मालावन्मोहविषयवर्द्धिन्यः चारित्र-	प्राणनाशिकाः मुनिमनोविद्राविकाश्च सिंहगुहावासिमुनिदृष्टान्तः, नदीवन्नि- मज्जिकाः, तारुण्यं महार्णववत् । २८ ४०९* सङ्गवर्जनं, सङ्गेन मारणादि, मणि- पतिदृष्टान्तः, निःसङ्गस्य चक्रिणो- ऽप्यधिकं सुखम् । २८ ४१६* निदानस्वरूपं, रागद्वेषमोहभेदाः, गङ्गदत्तविश्वभूतिचण्डपिङ्गलदृष्टा- न्ताः, काचेन वैद्युर्यहारणं, दुःख- क्षयादिप्रार्थनं, निदानादिरहितः शिवसाधकः । २९ ४२४* इन्द्रियासक्तः संसारभ्रमिः, स्वा- स्थिलेहनवद् विषयाः, सङ्गे परिश्रमः, कदलीवन्निस्सारा विषयाः, प्रोषित-	प्रियादिका(५)दृष्टान्ताः, विषया- पेक्षस्य भवः । २९ ४२९* इन्द्रियदमः, आराधना, क्रोधा- दिनिग्रहः, सुखदुःखे तद्वाभावान्वये, नन्दपरशुरामाद्या दृष्टान्ताः । ३० ४४७* अनुशास्तिप्रार्थना, परीषदादि- संभवे प्रतिज्ञास्मरणं, अवन्ती- सुकुमालदृष्टान्तः, भवनैर्गुण्यं, धर्मयानदुर्लभता, चिन्तामण्यादि- वदपूर्वता, नमस्कारस्मरणेन प्राण- त्यागः, जघन्यतः सौधर्मे उत्कृ- ष्टतोऽच्युते सर्वार्थसिद्धौ वा, उप- संहारः । ३१
---	--	--	--

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [प्रकीर्णकसूत्र- ५ “तन्दुलवैचारिक”]		
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए ‘संवृत्तिक आगम सुत्ताणि’	श्रीउपांगादि विषयानुक्रमे ॥ ९७ ॥	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)	॥ ५ अथ तन्दुलवैचारिकम् ॥ ४५०* मङ्गलादि, अभिधेयनिर्देशः । ३१ ४५५* गर्भे दिनरात्रिसुहृत्तश्वासमानम् । ३२ ४६१* योनिःसुतुञ्जीकालमानम् । ३३ ४६३* रुयादीनां रक्ताद्युत्कटत्वं, स्थानं, पितृपुत्रसंख्या, गर्भस्थितिः । ३४ २ ओजआहारः ३५ ३ कललार्बुदपेशीप्रभृत्यवस्था, शिराधमनी- रोमादिसङ्ख्या । ३६ ४ गर्भगस्योच्चारणभावः, सर्वाहारस्य श्रोत्रादीन्द्रियतयोपचयः । ३७ ५ कबलाहाराभावः, सर्वत आहारादि, रसहरणीशिरास्वरूपम् । ३८ ६ ओजआहारः, रसहरण्याऽऽहारः । ३९ ७ मातापित्रङ्गानि । ३४ ८ गर्भगस्य नरके उपपातः । ३५ ९ गर्भगस्य देवलोके उपपातः । ३६ १० गर्भगस्ये चानत्वादि । ३७ ४६८* पद्मगर्भस्वरूपम् । ३८ ११, ४७०* स्त्रीत्वा(४)न्यतरजन्म ३९ १२ पादादिना जन्म । ४० ४७१* द्वादश वर्षाणि गर्भस्थितिः । ४१ ४७३* जन्मदुःखादिना जातिस्मरणाभावः मातुर्वेदना च । ४२ ४७७* अशुचिस्वरूपम् । ४३ ४८८* बालादि (१०) दशास्वरूपम् । ४४ १३, ४९१* दशाक्षेपणोपक्षेपाद्यवस्था । ४५ ४९६* सुखिनोऽपि धर्मकर्तव्यता, दुःखिनो ४६
[आगम-२८] प्रकीर्णक-५ “तन्दुलवैचारिक”			

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [प्रकीर्णकसूत्र- ५ "तन्दुलवैचारिक"]				
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	श्रीउपांगादि विषयानुक्रमे ॥ ९८ ॥	विशेषेण, सुखप्राप्तये दुःखवारणाय च धर्मः, जातिकुलादिपुरस्कारश्च पुण्येन । ३८ १४ वातिकादिरोगबहुलत्वेन शोभना भविष्यन्ती धर्मचिन्ता । , १५ युगलधार्मिकपुरुषवर्णनम् । ४० १६ संहननसंस्थानवर्णनम् । ४१ ५०१* संहननसंस्थानादिहानिः । , ५२२* वर्षशताशीर्वादे युगायनर्तुमास- पक्षरात्रिदिवसमुहूर्तचर्चासंख्या, तन्दुलसङ्ख्या मुद्गलवणस्नेहपट- शाटकसङ्ख्या, समयोच्चासप्राण- स्तोकलवमुहूर्तस्वरूपं, नालिका- छिद्रस्य तदुदकस्य च स्वरूपं, वर्षे	राज्यचङ्कासादिमानम् । ४४ ५२९* आयुषि निद्रादिविभागः, धर्माकरणे पश्चात्तापः, आत्मज्ञानोपदेशः, जीवि- तादीनां नदीवेगादिसमत्वं, भवस्य जरामरणव्याप्तत्वम् । ४५ १७ पृष्ठकरण्डकपांशुलिकादिमानादि, अधोगामिन्यादिस्त्रिरास्वरूपं, पित्तधारि- ण्यादिशिरामानं रुधिरादिमानं च । ४६ ५३१* अन्तर्वाद्यपरिवर्त्तजुगुप्सा, आच्छा- दनाद्यै रम्यता । ४७ १८ मनुष्यशरीरस्याशुचिता । ४७ १६८, १९* विषयवैराग्यं, स्त्रीनिन्दा, बहिःपदार्थैर्मनोहरता । ४९ २० स्त्रीणां प्रकृतिविषमत्वादि(९३)स्वरूपं,	नार्यादितत्पर्यायव्युत्पत्तिश्च । ५२ ५७६* स्त्रीचरित्रस्वरूपे । , ५८३* जडस्य सर्वं निरर्थकं, पुत्रादि नालम्बनं, मरणे द्वितीयो धर्मः, धर्म एव त्राणशरणादि प्रीतिकरादिश्च, भोगज्ञाने- न्द्रत्वादि राज्यादि च धर्मफलम् । ५३ ५८६* उपसंहारः, उपदेशश्च । ,	प्रकीर्णकानां बृहद्विषया- नुक्रमः ॥ ९८ ॥

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [प्रकीर्णकसूत्र- ६ “संस्तारक”]			
	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)			
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए ‘संवृत्तिक आगम सुत्ताणि’	॥ ६ अथ संस्तारकप्रकीर्णकम् ॥ ५८७* वर्धमाननमस्कारादि । ” ६००* संस्तारकस्याराधनादिस्वरूपत्वं, भूतग्रहणाद्युपमा च, देवेन्द्रध्येयत्वं, सत्यस्मिन् सिद्धिपताका, शुक्लध्यान- केवलज्ञाननिर्वाणलाभः, श्रामण्यस्यो- त्कृष्टता । ६४ ६१४* संस्तारकस्य परममङ्गलता, तद्वतः, शौर्यं, परमार्थलाभः, वसुधारोपमा, करुणारत्नमालारत्नाहरणं, निर्वाण- लाभाश्रवनिरोधार्थत्रिकत्वात्तीर्थ- त्वं, निर्वाणस्य राज्यत्वं, राज्या- भिषेकता, परमार्थता, देवानाम- पि विनयः, चन्द्रादिवत्प्रेक्षणीय- त्वादि । ५२ ६२९* संस्तारके श्रमणस्वरूपं, शुद्धा शुद्धसंस्तारकस्वरूपम् । ५६	६३७* संस्तारके प्रथमदिवसे लाभबहुता, प्रतिसमयं कर्मक्षयः, तत्र चक्रिणोऽ- प्यधिकं सुखं, नाट्याज्जिनवचने परा रतिः, वीतरागस्य विशुद्धं सुखं, सेवितगच्छा अपि भवे मग्नाः । ५६ ६३८* अन्तेऽपि संस्तारकादात्मनः पश्यम् । ५६ ६४०* आत्मैव संस्तारकः, संस्तारके यथा- ख्यातत्वम् । ५७ ६४१* वर्षारात्रे तस्मा हेमन्ते संस्तारकः । ५७ ७७४* अर्णिकापुत्रस्य स्कन्धकशिष्याणां दण्डकस्य सुकोशलर्षेः, अवन्ती- सुकुमालस्य कार्तिकार्यस्य धर्मसिंहस्य चाणक्यस्य अमृत- घोषस्य चण्डवेगस्य ललितघटायाः सिंहसेनस्य कुन्दत्तस्य चिला-	तीपुत्रस्य गजसुकुमालस्य वीर- शिष्ययोश्चाराधनायां दृष्टान्ताः । ५९ ६७८* सागारप्रत्याख्यानं, पानकव्युत्सर्जनं च सर्वसङ्क्षामणा, सर्वापराधक्षामणा ,” ६८४* उत्तमार्थानुमोदनं, चतुर्गतिमुख- दुःखस्मरणं, नरकेऽवशातनं, देव- मनुजत्वे पराभियोगः, तिर्यक्त्वे भीमवेदनादि, अतीतजन्ममरणा- नन्त्यम् । ५२ ६८६* मरणभयजन्मदुःखचिन्तनाच्छरी- रात्मान्यत्वचिन्तनाच्च ममत्वोच्छेदः । ६८८* कायममत्वेन निर्विशेषदुःखम् । ६० ६२२* सङ्घस्य आचार्यादेः श्रमण- सङ्घस्य जीवराशेश्च क्षामणम् । ”	६९४* क्षामितातिचारादिरनन्तभवकर्म- क्षपणम् । ६० ७०९* अनुशास्तिः, गिरावप्युत्तमार्थ- साधनं, धर्मार्थं शरीरत्यागः, संस्ता- रात्कर्मवल्लीकम्पः, ज्ञानिनो बहु- कर्मक्षयः, संस्तारात्तृतीये भवे मुक्तिः, सङ्घस्य महामुकुटत्वं चन्द्रक- वेधसमत्वं संस्तारकस्य, उपसंहारश्च । ६१
	[आगम-२९] प्रकीर्णक-६ “संस्तारक”			

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [प्रकीर्णकसूत्र- ७ “गच्छाचार”]					
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए ‘संवृत्तिक आगम सुत्ताणि’	श्रीउपांगादि- विषयानुक्रमे ॥ १०० ॥	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) <table border="0" style="width: 100%;"> <tr> <td style="width: 50%; vertical-align: top;"> स्ततस्तत्परीक्षा । ६२ ७२०* उन्मार्गस्थितसूरिलक्षणम् । ,, ७२२* आचार्यस्याप्यालोचना । ,, ७२५* सङ्ग्रहादिहीनः सामाचार्यग्राहकः मार्गदेशकश्च सूरिवैरी । ,, ७२७* स्मरणादिमान् भद्रकः गुर्वबोधकः शिष्यो वैरी । ,, ७२९* गुर्वनुशासनविधिः । ,, ७३०* सचारित्रिलक्षणम् । ,, ७४०* सन्मार्गोन्मार्गस्थितसूरिलक्षणानि । ,, ७४५* शुद्धकथकस्य संविद्यपक्षता संविद्य पक्षलक्षणं च । ६३ ७४८* केषाञ्चित्सूरीणां नामग्रहेऽपि प्राय- श्चित्तं, प्रतिपृच्छादिरहितत्वे स्वच्छ- </td><td style="width: 50%; vertical-align: top;"> न्दता, शिष्यवर्गानोदने आज्ञा- विराधना । ६४ ७२८* गच्छकुगच्छलक्षणं गीतार्थमहिमा अगीतार्थनिन्दा च अगीतार्थकुशी- लादिसंसर्गवर्जनम् । ,, ७५९* कुगच्छलक्षणम् ,, ७६७* गच्छावासे फलं, गच्छवासिलक्षणं च । ६५ ७६८* आहारकारणानि । ,, ७७५* ज्येष्ठसन्मानं आर्याकरुणभोगः तदङ्गोपाङ्गाध्यानं च गच्छे । ,, ७७९* आर्यासंसर्गवर्जनम् । ६६ ७८०* अष्टचारित्रस्य निग्रहः । ,, ७८४* संनिहितादिवर्जनं, निभृतस्वभाव- </td></tr> </table>		स्ततस्तत्परीक्षा । ६२ ७२०* उन्मार्गस्थितसूरिलक्षणम् । ,, ७२२* आचार्यस्याप्यालोचना । ,, ७२५* सङ्ग्रहादिहीनः सामाचार्यग्राहकः मार्गदेशकश्च सूरिवैरी । ,, ७२७* स्मरणादिमान् भद्रकः गुर्वबोधकः शिष्यो वैरी । ,, ७२९* गुर्वनुशासनविधिः । ,, ७३०* सचारित्रिलक्षणम् । ,, ७४०* सन्मार्गोन्मार्गस्थितसूरिलक्षणानि । ,, ७४५* शुद्धकथकस्य संविद्यपक्षता संविद्य पक्षलक्षणं च । ६३ ७४८* केषाञ्चित्सूरीणां नामग्रहेऽपि प्राय- श्चित्तं, प्रतिपृच्छादिरहितत्वे स्वच्छ-	न्दता, शिष्यवर्गानोदने आज्ञा- विराधना । ६४ ७२८* गच्छकुगच्छलक्षणं गीतार्थमहिमा अगीतार्थनिन्दा च अगीतार्थकुशी- लादिसंसर्गवर्जनम् । ,, ७५९* कुगच्छलक्षणम् ,, ७६७* गच्छावासे फलं, गच्छवासिलक्षणं च । ६५ ७६८* आहारकारणानि । ,, ७७५* ज्येष्ठसन्मानं आर्याकरुणभोगः तदङ्गोपाङ्गाध्यानं च गच्छे । ,, ७७९* आर्यासंसर्गवर्जनम् । ६६ ७८०* अष्टचारित्रस्य निग्रहः । ,, ७८४* संनिहितादिवर्जनं, निभृतस्वभाव-	प्रकीर्णकानां बृहद्विषय- नुक्रमः ॥ १०० ॥
स्ततस्तत्परीक्षा । ६२ ७२०* उन्मार्गस्थितसूरिलक्षणम् । ,, ७२२* आचार्यस्याप्यालोचना । ,, ७२५* सङ्ग्रहादिहीनः सामाचार्यग्राहकः मार्गदेशकश्च सूरिवैरी । ,, ७२७* स्मरणादिमान् भद्रकः गुर्वबोधकः शिष्यो वैरी । ,, ७२९* गुर्वनुशासनविधिः । ,, ७३०* सचारित्रिलक्षणम् । ,, ७४०* सन्मार्गोन्मार्गस्थितसूरिलक्षणानि । ,, ७४५* शुद्धकथकस्य संविद्यपक्षता संविद्य पक्षलक्षणं च । ६३ ७४८* केषाञ्चित्सूरीणां नामग्रहेऽपि प्राय- श्चित्तं, प्रतिपृच्छादिरहितत्वे स्वच्छ-	न्दता, शिष्यवर्गानोदने आज्ञा- विराधना । ६४ ७२८* गच्छकुगच्छलक्षणं गीतार्थमहिमा अगीतार्थनिन्दा च अगीतार्थकुशी- लादिसंसर्गवर्जनम् । ,, ७५९* कुगच्छलक्षणम् ,, ७६७* गच्छावासे फलं, गच्छवासिलक्षणं च । ६५ ७६८* आहारकारणानि । ,, ७७५* ज्येष्ठसन्मानं आर्याकरुणभोगः तदङ्गोपाङ्गाध्यानं च गच्छे । ,, ७७९* आर्यासंसर्गवर्जनम् । ६६ ७८०* अष्टचारित्रस्य निग्रहः । ,, ७८४* संनिहितादिवर्जनं, निभृतस्वभाव-					
[आगम-३०] प्रकीर्णक-७ “गच्छाचार”						

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [प्रकीर्णकसूत्र- ७ “गच्छाचार”]				
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए ‘संवृत्तिक आगम सुत्ताणि’	श्रीउपांगादि- विषयानुक्रमे ॥१०१॥	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य) त्वादि, नानाभिग्रहाः, पृथग्याद्य- पीडकत्वं च । ६६ ७८५* खर्जूयाप्रमार्जनेन दयाहीनत्वम् । ,, ७८६* जलवर्जनं, उवलनोऽज्ज्वलनवर्जनं, यतनया स.रूपिकादिभिः कारणं, पुष्पादिसंघट्टनादिवर्जनं, हास्यक्री- डादेः स्त्रिया बालादिकानामपि करतनुस्पर्शस्य च वर्जनम् । ६७ ७९४* अर्हतोऽपि स्त्रीकरस्पर्शे निर्गुणत्वम् । ,, ८१४* अयोग्यादीक्षणं, निर्गुणनिर्घाटनं, शुषिराणामपरिभोगः, शुक्लं वस्त्रं, हिरण्याद्यस्पर्शः, आर्या प्रतिग्रहाभोगः, तदौषधाभोगः, एकस्त्रीसङ्गवर्जनं,	आर्याऽध्यापनवर्जनं, स्त्रीराज्यकुत्सा, मण्डल्यामार्याऽनागमः, कषाया- नुदीरकत्वं, कषायरोधः, बहवो- गीतार्थाः, अशूनत्वं, चारित्र्योऽज्ज- लत्वं, क्रयविक्रयवर्जनं, सुविहिते वासश्च । ६८ ८१६* उपाश्रयस्यैकशुलादिना क्षुल्लि- कादिना वा न रक्षा । ,, ८१७* बहिःश्रमणीवसतौ दुर्गच्छत्वम् । ,, ८२०* एकाकिश्रमणश्रमणीजरूपे जकार- मकारादिरूपे गृहस्थभाषाजरूपे च दुर्गच्छत्वम् । ,, ८२८* चित्ररूपत्वं, सीवनादि, सविलास- गत्यादि, गृहस्थगृहे कथा, रात्री-	कथा, क्लेशः, अनालोचनं, वेष्ट- लादिप्रयोगे दुर्गच्छता आर्याणाम् । ६९ ८३१* प्राचूर्णकावत्सलत्वं गतिविभ्रमादियु- तत्वं बहुश उच्छोलनादि च न गच्छे । ६९ ८४०* तरुणी स्थविरान्तरा, धावनादि- वर्जिका, समीपे न खराद्याः, पशवः न मुक्तयोगादि, अनालस्यादिगुणा- श्चार्याः संविम्नादिगुणाः, उत्तरप्रत्युत्तर- वर्जिकाः गणिनीपृष्ठिस्थितभाषिका, गुप्तिविभेदानाख्यायिकाश्च । ७० ८४२* विहारभेदेऽदर्शनादि, धर्मोपदेशं मुक्त्वा न भाषणम् । ,, ८४३* गृहस्थभाषायां मासोपवासाद्यपि निष्फलम् । ७० ८४६* महानिशीथदेरुद्धारः, उत्तमता गच्छाचारस्य फलं च । ,,	प्रकीर्णकानां बृहद्विषयानु- क्रमः ॥१०१॥

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [प्रकीर्णकसूत्र- ९ “देवेन्द्रस्तव”]			
प्रत सूत्रांक यहां देखिए दीप क्रमांक के लिए देखिए ‘संवृत्तिक आगम सुत्ताणि’	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)			
	॥ ९ अथ देवेन्द्रस्तवप्रकीर्णकम् ॥ ९२९* मङ्गलाभिधेयादि । ” ९३४* श्रावककृता वीरस्तुतिः । ” ९३८* देवेन्द्रतद्वाससंख्यास्थिति- भवनबाहल्यादिरतिलयनो- च्छ्वासवध्यादिप्रश्नाः । ” ९४२* उत्तरस्योपक्रमः । ” ९७३* भवनपतीनामिन्द्राः, तद्भवनसङ्- ख्या, उत्तरदक्षिणभेदेन स्थितिः । तद्भवनस्थानं, तद्भवनस्वरूपाऽऽ- यामादि, दक्षिणोत्तरभेदेनेन्द्राणां नामानि, भवनसङ्ख्या, अग्रमहिषी- सङ्ख्या । ७९ ९७८* जम्बूद्वीपादिसमश्रया आवासादी-	सङ्ख्या, असुरादीनामावासस्थानम् । ७९ ९९४* चमरादीनां(२०)वैक्रियशक्तिमानम् । ८० १००८ व्यन्तराणां भेदास्तन्नामानि च, तद्व- सतिः, भवनस्थानं, भवनविस्तारः, दक्षिणोत्तरभेदेनेन्द्राः, तत्स्थितिश्च । ८१ १०१२* ज्योतिष्कानां भेदाः, विमा- नाकारः, ज्योतिश्चक्रबाह्यं, चन्द्रसूर्यनक्षत्रग्रहहाराणां विष्कम्भादि । ८१ १०२१* विमानवाहकामराः । ८२ १०२६* चन्द्रादीनां मन्दशीघ्रगतित्वं,	महाऽल्पद्विक्रित्वं, अभ्यन्तर- बाह्यनक्षत्रत्वं च । ८२ १०२८* जघन्योत्कृष्टनिर्व्याघातेतरत्तार- कान्तरम् । ” १०३६* अभिजिदादीनां चन्द्रसूर्यै- योगकालः । ८३ १०६३* जम्बूद्वीपादिषु चन्द्रसूर्यग्रहनक्षत्र- तारकसङ्ख्या, पिटकानि, पङ्क्तयः, मेर्वेनुचराः । ८५ १०६७* ज्योतिष्कचारेण सुखदुःखविधिः । ” १०६९* तापक्षेत्रस्य वृद्धिहानी, बहि- रन्तः संस्थानम् । ” १०७५* चन्द्रस्य वृद्धिहान्यादि, राहुणा-	ऽऽवरणं च । ८५ १०८६* नृक्षेत्राद्बहिरवस्थिता ज्योतिष्काः, परस्परान्तरितत्वं, अन्तरमानं, एकशशिपरिवारश्च । ८६ १०९०* ज्योतिष्काणां परापरे स्थिती । ” १०९६* द्वादश कल्पाः, ग्रैवेयकेषु नान्य- लिङ्गेनोत्पादः, व्यापन्नदर्शनानां ग्रैवेयकेषूत्पादः । ८७ ११११* सौधर्मादिषु विमानसङ्ख्या, स्थितिः, नवग्रैवेयकनामानि, तद्विमानसङ्ख्या, स्थितिश्च । ८८ १११४* अनुत्तराणां नामानि, दिग्गवस्था, स्थितिश्च । ” १११८* करुणग्रैवेयकानुत्तरसंस्थानानि,
	[आगम-३२] प्रकीर्णक-९ “देवेन्द्रस्तव”			

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [प्रकीर्णकसूत्र- ९ “देवेन्द्रस्तव”]				
	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)				
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए ‘संवृत्तिक आगम सुत्ताणि’	श्रीउपांगादि- विषयानुक्रमे ॥१०४॥	तदाधारः । ११२५* भवनपत्यादीनां लेख्यावर्णः, शरीरमानं, स्थित्यनुसारेण शरीर- मानकरणम् । ८९ ११२६* विमानपृष्ठव्योर्मानं द्वात्रिंशच्छ- तानि । ११३०* कायस्पर्शरूपशब्दमनःप्रवीचारा- प्रवीचाराः । ११४४* विमानानां गन्धस्पर्शवर्णनं, ऊर्ध्वलोकविमानानां आवलिका- प्रविष्टानां पुष्पावकीर्णानां च सङ्ख्या स्थानं संस्थानं पर- स्परस्थितिः प्राकारादिभेदाश्च । ९० ११४७* भवनानां भौमनगराणां ज्योतिष्क-	विमानानां सङ्ख्या, वैमानिका- द्यल्पबहुत्वं च । ९० ११५२* सौधभेदानयोर्देवीविमानसङ्ख्या, अनुत्तराणां सुखस्पर्शगन्धाः, एकगर्भाश्च । ९० ११६०* स्थितिविशेषेण देवानामाहारो- च्छ्वसकालः । ९१ ११६८* सौधर्मादीनामवधिविषयः, नारकाद्या अवधेरवाह्याः । १२००* सौधर्मादिषु पृष्ठ्या बाह्व्यं, विमानानां वर्णः देवदेवीवर्णनं, प्रासादासनवर्णनं च । ९३ १२०६* सिद्धशिलाया अन्तरं संस्थान- मायामादि बाह्व्यं च । ९४	१२३०* सिद्धानां स्थानं, प्रतिघातादि, संस्थानं, त्रिभेदावगाहना, अन्यो- न्यावगाहना, लक्षणं, स्पर्शना, ज्ञानदर्शने, सुखं, श्लेच्छदृष्टान्तः, नामानि, अव्यावाधत्वं च । ९५ १२३२* अर्हतां वन्दनमहिमस्तुति- सिद्धिदानकीर्त्तनेनोपसंहारः । ९६	प्रकीर्णकानां बृहद्विषयानु- क्रमः ॥१०४॥

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [प्रकीर्णकसूत्र- ९ “मरणसमाधि”]		
	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)		
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए ‘संवृत्तिक आगम सुत्ताणि’	॥ १० अथ मरणसमाधिप्रकीर्णकम् ॥ १२३६* मङ्गलाभिधेयादि । ९६ १२४५* अभ्युद्यतमरणे गुणवदाचार्याय स्त्रिण्यपृच्छादि । ९७ १२५१* आराधनोपदेशः दर्शनज्ञाना- द्याराधना च । ” १२५५* दर्शनाऽऽराधना तत्फलं च । ” १२५८* बालपण्डितमरणानां फलं, पण्डित- मरणस्वरूपम् । ९७ १२७७* परिकर्मविधिः । ९९ १२९३* पण्डितमरणविधिः । १०० १३०१* कान्दर्षिकाद्या(५)भावनाः । ” १३०४* समाधिप्राप्त्यप्राप्तियोग्याः । १०१ १३१०* धर्मप्राप्तिदुर्लभता, कामानां तुच्छता, विषयतृष्णानिन्दा च । ” १३१२* बालमरणस्वरूपम् । ” १३१३* मोहिनोऽप्यालोचनायामाराधक- त्वम् । ”	१३२७* आलोचनसंलेखनाक्षामणादि- (१४)मरणविधिः । १०२ १३३२* विनयफलं, शुद्धिकारकस्वरूपं, अष्टादशविधः, करुणः आलोचक- गुणाः, उपस्थापनास्थानानि(१०), अतिचारालोचना, यथावत्कथनं, द्रव्यभावशल्यवर्जनं च । १०२ १३४४* अनाराधकाराधकलक्षणं आलो- चनायाः तत्फलं तद्विधिश्च । १०३ १३५७* शस्त्रादिभ्योऽधिकं शल्यं दुर्लभ- बोधित्वहेतुश्च, शल्यभेदाः, प्रति- सेवाकारणानि, अज्ञातापराधक्षा- मणा च । १०४ १३६१* आलोचनादोषाः(१०),प्रायश्चित्त- विधिश्च । ” १३६३* द्वादशभेदं तपः । १०५ १३८४* स्वाध्यायप्रशंसा, श्रुतयोगफलं च ।	१०६ १३९३* सम्यक्त्वचारित्रप्रशंसा । १०७ १४२३* शुद्धिरुपध्यादित्यागः, तप- उद्यमः, परिकर्म, विषयत्यागः, संलेखना च । १०९ १४४२* कषायविषयवर्जनं, समिति- गुप्तियुक्तता, रागादेर्दुःखादि- हेतुत्वं, अनिदानता च । ११० १५३५* आतुरप्रत्याख्यानाध्ययनम् । ११६ १५५८* सिद्धाद्युपसंपत्तिः, वैदनायां सालम्बनं, अभ्युद्यतमरणं, आराधना- विधिः, उत्कृष्टमध्यमजघन्या- राधनाफलं, धीराधीरयोर्मरण- सुविहितस्य चैमानिकत्वादि । ११८
	[आगम-३३] प्रकीर्णक-१० “मरणसमाधि”		

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [प्रकीर्णकसूत्र- ९ "मरणसमाधि"]				
प्रत सूत्रांक यहां देखीए दीप क्रमांक के लिए देखीए 'संवृत्तिक आगम सुत्ताणि'	उपांगादि- षयानुक्रमे १०६॥	१५६९* अविचारानशनकारकगुणाः, निर्यामकगुणाश्च । ” १५८९* आचार्यादिक्षामणा, अनशन- कारकस्वरूपं, स्नेहदीपक्षयवत्क्षयः संस्तारकस्य, तस्य विधिः स्थानं, चतुर्विधाहारव्युत्सर्गश्च । १२० १६१४* निर्यामणाविधिः, अप्रमादक्षमादि कुटुम्बवैराग्यं च । १२२ १६३९* गतिषु सुखदुःखे वेदना क्लेशः जन्ममरणे च गर्भवासदुःखं, जन्म- दुःखं, गर्भेऽशुचिता, वैमानिक- स्यापि योन्यन्धकारे कलमले भैरवे- ऽवतारः गिरिमुफायां वासः, नरके त्रप्वादिपानं उद्दामशब्दश्रवणं	घातादि वैतरण्यादि च, तिर्थक्षूद्रेणः, नरत्वे भीषणता, समुद्रे वृक्षाग्रे च वासः, कृतं मातुर्दुग्धं नयनोदकं च चिन्तयित्वा ममत्वच्छेदश्च । १३१ १७६०* आराधकलक्षणं आर्तारौद्रयोः रागद्वेषयोश्च वर्जनं वेदनासहनं, सन- त्कुमारस्य, जिनधर्मश्रेष्ठिनः मेतार्यस्य चिलातीपुत्रस्य गजसुकु- मालस्य नभःसेनस्य अवन्तीसुकु- मालस्य चन्द्रावतंसकस्य दम्- दन्तस्य स्कन्दकशिष्याणां धन्यशालिभद्रयोः सुरचितादीनां पाण्डवानां दण्डस्य सुकोशलस्य वज्रर्षेः क्षुलकस्य धर्मयशसः	अर्हन्नकस्य चाणाक्यस्य द्वात्रिंश- द्वृषटायाः इलापुत्रस्य हस्तिमित्रस्य सुमनोभद्रर्ष्यादेः जातिमूकस्य स्थूलभद्रस्य दत्तस्य कुरुदत्तसुत स्य सोमदत्तस्य अर्जुनस्य कृष्ण- स्य दण्डनस्य कालवेदस्य नन्द- कस्य इन्ददत्तस्य अशकटपितुः आषाढभूतेः तिरश्चः वानरयूथपतेः सिंहसेनगजस्य गन्धहस्तिनः सुजङ्गयोश्च दष्टान्ताः । १३२ १७७२* पादपोषगमनविधिः । १३३ १७७८* इङ्गिनीमरणविधिः । ” १७८४* आहारत्यागोपदेशः शिलातला- दावनशनं च । १३४	प्रकीर्णकानां बृहद्विषया- नुक्रमः ॥ १०६ ॥

आगम संबंधी साहित्य	उपांग+प्रकीर्णकसूत्र-लघुबृहद्विषयानुक्रमौ [प्रकीर्णकसूत्र- ९ “मरणसमाधि”]																																																																																
	मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः उपांग+प्रकीर्णक-सूत्रस्य विषयानुक्रमः (आगम-संबंधी-साहित्य)																																																																																
<b style="color: red;">प्रत सूत्रांक यहां देखीए <b style="color: red;">दीप क्रमांक के लिए देखीए <b style="color: red;">‘संवृत्तिक आगम सुत्ताणि’	श्रीउपांगादि- विषयानुक्रमे १०७ ॥	१७८५* भक्तपरिज्ञास्थानम् १३४ १८०४* उपसर्गे जन्मादेः गतिदुःखानां च चिन्तनम् । १३५ १८७५* भावनाद्वादशकम् । १४०	१८९६* मनुष्यजातेर्वैचित्र्यं नरत्वादेर्दे- लभ्यं मात्रादेरत्राणत्वं, दुःखा- नुपशमकत्वं, रोगादिपीडा, धर्मस्य दुःखप्रतिपक्षत्वं जिन मतमहिमा च । १४२	१८९१* उपसंहारः । १४२ ॥ इति मरणसमाधिप्रकीर्णकम् ॥ ॥ इति श्रीचतुःशरणादिप्रकीर्णक- दशकस्य बृहन् विषयानुक्रमः ॥	<b style="color: blue;">शुद्धिपत्रकम्					प्रकीर्णकनां बृहद्विषया- नुक्रमः शुद्धिपत्रकं च																																																																							
		<table style="width: 100%; border-collapse: collapse;"> <tr> <th style="text-align: left;">पृष्ठांकः</th> <th style="text-align: left;">भागः</th> <th style="text-align: left;">पंक्तिः</th> <th style="text-align: left;">अशुद्धम्</th> <th style="text-align: left;">शुद्धम्</th> <th style="text-align: left;">पृष्ठांकः</th> <th style="text-align: left;">भागः</th> <th style="text-align: left;">पंक्तिः</th> <th style="text-align: left;">अशुद्धम्</th> <th style="text-align: left;">शुद्धम्</th> </tr> <tr> <td>२९</td> <td>२</td> <td>१</td> <td>मिच्छो</td> <td>मिच्छो</td> <td>६१</td> <td>२</td> <td>९</td> <td>आहाराभव्यादि</td> <td>आहारभव्यादि</td> </tr> <tr> <td>६</td> <td>२</td> <td>७</td> <td>१९, *</td> <td>१९, १३९*</td> <td>६१</td> <td>२</td> <td>११</td> <td>भव्यसञ्ज्ञयादिजीवा</td> <td>भव्यसञ्ज्ञयादिजीवा</td> </tr> <tr> <td>१०</td> <td>२</td> <td>४</td> <td>त्रिंशद्विध०</td> <td>त्रिंशद्विध०</td> <td>७६</td> <td>२</td> <td>१४</td> <td>कृताभिषेकजिनानयम्</td> <td>कृताभिषेकजिना- नयनम्</td> </tr> <tr> <td>१४</td> <td>३</td> <td>८</td> <td>संमूर्च्छिमपंचन्द्रिय०</td> <td>संमूर्च्छिमपंचेन्द्रिय०</td> <td></td> <td></td> <td></td> <td></td> <td></td> </tr> <tr> <td>५९</td> <td>२</td> <td>१०</td> <td>पृथिव्यादिनाम०</td> <td>पृथिव्यादीनाम०</td> <td>८८</td> <td>२</td> <td>१०</td> <td>१९</td> <td>२०</td> </tr> <tr> <td>६१</td> <td>२</td> <td>२</td> <td>पृथ्व्यादिनामा०</td> <td>पृथ्व्यादीनामा०</td> <td>८८</td> <td>२</td> <td>११</td> <td>२९</td> <td>२१</td> </tr> </table>										पृष्ठांकः	भागः	पंक्तिः	अशुद्धम्	शुद्धम्	पृष्ठांकः	भागः	पंक्तिः	अशुद्धम्	शुद्धम्	२९	२	१	मिच्छो	मिच्छो	६१	२	९	आहाराभव्यादि	आहारभव्यादि	६	२	७	१९, *	१९, १३९*	६१	२	११	भव्यसञ्ज्ञयादिजीवा	भव्यसञ्ज्ञयादिजीवा	१०	२	४	त्रिंशद्विध०	त्रिंशद्विध०	७६	२	१४	कृताभिषेकजिनानयम्	कृताभिषेकजिना- नयनम्	१४	३	८	संमूर्च्छिमपंचन्द्रिय०	संमूर्च्छिमपंचेन्द्रिय०						५९	२	१०	पृथिव्यादिनाम०	पृथिव्यादीनाम०	८८	२	१०	१९	२०	६१	२	२	पृथ्व्यादिनामा०	पृथ्व्यादीनामा०	८८	२	११	२९	२१
पृष्ठांकः	भागः	पंक्तिः	अशुद्धम्	शुद्धम्	पृष्ठांकः	भागः	पंक्तिः	अशुद्धम्	शुद्धम्																																																																								
२९	२	१	मिच्छो	मिच्छो	६१	२	९	आहाराभव्यादि	आहारभव्यादि																																																																								
६	२	७	१९, *	१९, १३९*	६१	२	११	भव्यसञ्ज्ञयादिजीवा	भव्यसञ्ज्ञयादिजीवा																																																																								
१०	२	४	त्रिंशद्विध०	त्रिंशद्विध०	७६	२	१४	कृताभिषेकजिनानयम्	कृताभिषेकजिना- नयनम्																																																																								
१४	३	८	संमूर्च्छिमपंचन्द्रिय०	संमूर्च्छिमपंचेन्द्रिय०																																																																													
५९	२	१०	पृथिव्यादिनाम०	पृथिव्यादीनाम०	८८	२	१०	१९	२०																																																																								
६१	२	२	पृथ्व्यादिनामा०	पृथ्व्यादीनामा०	८८	२	११	२९	२१																																																																								
		इति श्रीऔपपातिक-राजप्रश्रीय-जीवाजीवाभिगम-प्रज्ञापना-चंद्रसूर्यप्रज्ञप्तियुग्म-जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति-उपांगपंचकमयनिरयावलिका- चतुःशरणादिप्रकीर्णकदशकानां सूत्रसूत्रगाथानामकारादिक्रमः लघुबृहद्विषयानुक्रमः समाप्तः । श्रीआगमोद्धारसंग्रहे भागः २																																																																															
										॥ १०७ ॥																																																																							

मुनिश्री दीपरत्नसागरेण पुनः संपादितः

उपांग+प्रकीर्णक-सूत्र लघुबृहत् विषयानुक्रमः परिसमाप्तः

नमो नमो निम्मलदंसणस्स
पूज्य आनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर गुरुभ्यो नमः



पूज्य आगमोधधारक आचार्य श्री सागरानंदसूरीश्वरेण संशोधितः संपादितश्च
उपांग+प्रकीर्णक-सूत्र लघुबृहद्विषयानुक्रमौ

(किंचित् वैशिष्ट्यं समर्पितेन सह)

मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः
“उपांग+प्रकीर्णक-सूत्र लघु-बृहत् विषयानुक्रमः”
नाम्ना परिसमाप्तः

Remember it's a Net Publications of 'jain_e_library's'